ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

फाल्गुन-चेत, संवत् नानकशाही ५४७
वर्ष ९ अंक ७ मार्च **2016**

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंह
संपादक : सतविंदर सिंह फूलपुर
सहायक संपादक : गुरप्रीत सिंह भोमा

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

खाणा पीणा हसणा सउणा विसरि गइआ है मरणा ॥
खसमु विसारि खुआरी कीनी ध्रिगु जीवणु नही रहणा ॥१॥
प्राणी एको नामु धिआवहु ॥ अपनी पति सेती घरि जावहु ॥१॥रहाउ॥
तुधनो सेवहि तुझु किआ देवहि मांगहि लेवहि रहहि नही ॥
तू दाता जीआ सभना का जीआ अंदरि जीउ तुही ॥२॥
गुरमुखि धिआवहि सि अंम्रितु पावहि सेई सूचे होही ॥
अहिनिसि नामु जपहु रे प्राणी मैले हछे होही ॥३॥
जेही रुति काइआ सुखु तेहा तेहो जेही देही ॥
नानक रुति सुहावी साई बिनु नावै रुति केही ॥४॥ *(पन्ना १२५४)*

मलार राग में उच्चरित उपरोक्त शबद में श्री गुरु नानक देव जी नाम-सिमरन की महिमा का बखान करते हुए पावन फरमान करते हैं कि जन्म लेने के बाद मात्र खाने, पीने, हंसने, सोने में ही जीव अपना जीवन गुज़ार देता है। जीव जीवन को स्थाई समझकर मृत्यु को भूल जाता है। यह सत्य है कि जिसे मृत्यु याद नहीं रहती उसे परमात्मा भी याद नहीं रहता। खसम (प्रभु) को भुलाकर जीव अपना जीवन ख्वार कर लेता है, उसके पल्ले में हमेशा ख्वारी ही पड़ती है। प्रभु को भूल जाने से जीव का जीवन किसी काम का नहीं, निंदनीय है। गुरु जी ज़ोर देकर कहते हैं कि हे प्राणी! एक ही नाम (प्रभु का) सिमरन कर और प्रभु का नाम-सिमरन करते हुए इज्जत सहित प्रभु-घर (दर) में जा। जो प्रभु का नाम-सिमरन करते हैं उन्हें यह समझ आ जाती है कि देने वाला एक परमात्मा ही है, इसलिए वे सदा (परमात्मा से नाम-दान) मांगते ही रहते हैं और यह (नाम-दान) मांगने से वे चूकते नहीं। हे प्रभु! तू ही सब जीवों का दाता है और सब जीवों में एक तू ही निवास करता है। गुरु जी आगे फरमान करते हैं कि गुरमुख प्राणी ही प्रभु का नाम-सिमरन करते हैं, वही प्रभु का नाम-अमृत हासिल करते हैं और वही सच्चे जीवन वाले बनते हैं। हे प्राणी! दिन-रात प्रभु का नाम-सिमरन किया कर, क्योंकि नाम-सिमरन द्वारा बुरे आचरण वाले इंसान भी अच्छे बन जाते हैं।

गुरमुखों ने मानव-जीवन के लिए दो ॠतुएं मानी हैं-- एक, प्रभु-नाम-सिमरन वाली ॠतु तथा दूसरी, बिना प्रभु-नाम-सिमरन वाली ॠतु। इसी संदर्भ में ज़िक्र करते हुए गुरु जी कथन करते हैं कि जिस ॠतु में जीव रहता है उसके शरीर को वैसा ही सुख मिलता है और उसका शरीर भी वैसा ही हो जाता है अर्थात् यदि जीव प्रभु-नाम-सिमरन वाली (ॠतु की) अवस्था में जीता है तो उसे सुख मिलते हैं; यदि बिना प्रभु-नाम-सिमरन वाली (ॠतु की) अवस्था में रहता है तो उसे दुखों का सामना करना पड़ता है। शबद की अंतिम पंक्ति में गुरु जी का पावन फरमान है कि प्रभु-नाम-सिमरन वाली ॠतु ही अच्छी है, इसके विपरीत कोई भी ॠतु आ जाए उसका जीव के जीवन में कोई प्रभाव नहीं रहता है। गुरु जी के कहने से तात्पर्य है कि मनुष्य को अपने जीवन में प्रभु-नाम-सिमरन करते हुए सदा इसी अवस्था में बने रहना चाहिए।

संपादकीय

सशक्त सभ्याचार का इन्कलाब : होला महल्ला

इस जगत में प्रत्येक मत के पैरोकारों द्वारा सृजित रीति-रिवाज़ों, पूजा-विधियों, दिन-त्योहारों आदि के बारे में उनकी अपनी-अपनी विचारधाराएं हैं।

भारतीय परंपरा में प्राचीन काल से प्रत्येक ऋतु के बदलाव पर हृदय के भाव व हुल्लास का प्रकटाव करने हेतु कोई-न-कोई त्योहार नियत किया हुआ है, जैसे-- दीपावली, वैसाखी, लोहड़ी आदि। इन त्योहारों में से एक है, होली। भारतीय कथा परंपरा के अनुसार होली का त्योहार हरणाखश (हिरण्यकशिपु) की बहन, होलिका के भक्त प्रहिलाद को जलाने के प्रयत्न में खुद जल मरने अथवा धर्म की अधर्म पर विजय की निशानी है। इसका ज़िक्र गुरबाणी में भी आता है। समय के साथ ईर्ष्या, दुख, फूट तथा आचरण की गिरावट के कारण इन त्योहारों के जान-विहीन कबूलत ही शेष रह गए, जिस कारण भारतियों की पहले स्वतंत्रता गई और जो रहती कसर थी वो गुलामी की मार ने पूरी कर दी। होली तो फिर भी खेली जाती रही किंतु गुलामों की होली क्या होली थी? एक-दूसरे पर रंग, मिट्टी, धूल, राख आदि डालने के अतिरिक्त किसी भी प्रकार का आध्यात्मिकता के रहस्य का अंश इस में शेष न रहा। वास्तव में ये सब भारतीय शासकों की पैदा की हुई असमान बांट, जाति-पाति, छूआछूत व विभिन्नता की भावनाओं के कारण समाज में फैलाई बुराइयों का ही परिणाम था। इतने बड़े हिंदोस्तान पर विदेशी हमलावरों ने कई बार आक्रमण कर इसको लूटा तथा यहां का समान लेकर चल दिए और कई यहां के बादशाह बन बैठे। हिन्दोस्तानी प्रजा मात्र हाकिमों की गुलाम तथा सभ्याचारक रूप में गिरावट की ओर जा चुकी थी। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो इन हालातों में गुलामी के जूले (बंधन) को उतारने की प्रेरणा दे सकता। गहरी सूझबूझ रखने वाले अपनों के लिए यह दृश्य दुख तथा परायों के लिए मज़ाक का विषय बनकर रह गया।

इन अति नाजुक हालातों में जहां कथित पुजारी वर्ग के यंत्रों-मंत्रों से अपनी सुरक्षा करने की झूठी गवाहियों की पोल खुली, वहीं भारतियों को भी यह बात स्पष्ट रूप में माननी पड़ी कि ज़ालिम तथा ताकतवर अहिलकारों का सामना शक्ति के बल से ही करना पड़ेगा।

हालात के मद्देनज़र ही सिक्ख गुरु साहिबान ने हिन्दोस्तान की इस दुर्दशा को बेहतर बनाने हेतु अपना मिशन प्रारंभ किया। गुरु साहिबान ने जहां झूठे धार्मिक आडंबरों तथा ढकोसलों की कड़े शब्दों में निंदा की, वहीं समाज की दशा को प्रत्येक पक्ष से बेहतर बनाने में अपने जीवन-काल के दौरान सफल कार्य किए। गुरु साहिबान ने जीवन के समूचे क्षेत्रों में जहां सशक्त परिवर्तन लाया, वहीं पंचम पातशाह ने प्रमार्थ के मार्ग की आनंदमयी होली खेलने का संकेत देते हुए पावन फरमान किया :

गुरु सेवउ करि नमसकार ॥ आजु हमारै मंगलचार ॥

आजु हमारै महा अनंद ॥ चिंत लथी भेटे गोबिंद ॥१॥
आजु हमारै ग्रिहि बसंत ॥ गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥१॥ रहाउ ॥
आजु हमारै बने फाग ॥ प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥
होली कीनी संत सेव ॥ रंगु लागा अति लाल देव ॥२॥ (पन्ना ११८०)

नानक निर्मल पंथ के पांधियों ने भारती तवारीख में नया इतिहास सृजित किया। इस लिए इसके दिन-त्योहार, रस्में, जोड़ मेले देश-काल की कैद से मुक्त समस्त लोकाई को हर देश-काल में समान दिशा प्रदान करने वाले सृजे गए। इसी श्रृंखला के तहत धार्मिक आज़ादी हेतु नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की शहादत के उपरांत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा **'खालसा पंथ'** की सृजना धार्मिक दुनिया के इतिहास में एक नया मोड़ था। दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने समय की ज़रूरत को मुख्य रखकर, भीतर घटित इस आध्यात्मिक परिवर्तन का प्रकटाव बाहर करना भी आवश्यक समझा। दशम पातशाह ने 'खालसा पंथ' की सृजना कर सदियों से गुलामी झेल रही भारतीय जनता को एक नयी आशा की किरण दी। जिस के साथ सभ्याचार में नये बदलाव आए। गुरु पातशाह ने खालसा पंथ को जुल्म के खिलाफ़ डटना व ज़ालिम के अस्तित्व को खत्म करना सिखाया। दशमेश पिता जी ने खालसा पंथ को होली की जगह सशक्त सभ्याचार का प्रतीक 'होला' मनाने की प्रेरणा की। 'होला-महल्ला' मनाने की रीति खालसा पंथ की जन्मभूमि श्री अनंदपुर साहिब में किला होलगढ़ में आरंभ की। इस समय शस्त्र विद्या के कमाल दिखाए जाने लगे। गुरु साहिब के दिशा-निर्देश के मुताबिक मसनूई (बनावटी) जंगें लड़ी जानें लगीं, जिसके द्वारा जंगी अभ्यास होते। देश-देशांतरों की संगत इस समय श्री अनंदपुर साहिब एकत्र होती तथा समय की ज़रूरत को मुख्य रखकर यह शस्त्रधारी होला खेलती तथा ज़ालिम शासकों के साथ लोहा लेने के समर्थ होतीं।

युद्ध विद्या के अभ्यास को निरंतर रखने हेतु कलगीधर पातशाह की चलाई हुई रीति के अनुसार सिक्खों में होला-महल्ला मनाया जाता है, जिसका होली की रस्म के साथ कोई सम्बंध नहीं। होले-महल्ले के इस नये आरंभ किए अंदाज़ के द्वारा गुरु जी ने समूची लोकाई के अंदर वीर रस, चढ़दी कला, उत्साह, धर्म व देश की रक्षार्थ हेतु जज़्बा पैदा किया। जहां लोक पिचकारियां चलाकर, रंग उड़ाकर तथा गीत गाकर होली खेलते थे, वहीं खालसा पंथ के लिए महल्ले की तैयारी ही उसका कर्त्तव्य है।

गुरु साहिबान ने हमें होले-महल्ले से सात्विक, प्रयत्नकारी जीवन लेकर अपनी तकदीर को नये सिरे से तराशना सिखाया है। वर्तमान दौर के अंदर हम सिक्ख धर्म का प्रचार करके भ्रूण-हत्या, पतितता, नशे जैसी सामाजिक बुराइयों को समाज में जड़ से खत्म करने के लिए डटकर मैदान में खड़े होना है। तबी हम आज होले-महल्ले के वास्तविक तथा मूल मनोर्थों पर खरे उतर सकते हैं। इस मंतव्य की पूर्ति हेतु नानक नाम लेवा संगत एकजुट होकर कार्य करने का प्रयत्न करे।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आर्थिक समृद्धि एवं खुशहाल जीवन यापन की अवधारणा

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

आर्थिकता मानव जीवन का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं मूलभूत पक्ष है। मनुष्य को प्रारंभ से ही जीवन-गत आवश्यकताओं का एहसास रहा है और वह इन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रारंभ से ही वस्तुओं का उत्पादन एकत्रीकरण करता चला आया है। यही नहीं विभिन्न प्रकार से वह इन वस्तुओं के वितरण की व्यवस्था भी करता आया है। आदिम युग के मानव समूहों द्वारा शिकार एवं संग्रहण के द्वारा एकत्र किए गए भोजन और उस भोजन का समूह के सदस्यों में आवश्यकता अनुरूप वितरण से शुरू होकर यह प्रक्रिया आज की आधुनिक एवं जटिल उत्पादन-वितरण प्रणाली तक पहुंचती है।

'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' में मानव समाज के विविध आर्थिक संबंधों को लेकर व्यापक चिंतन मौजूद है। गुरु साहिबान ने श्रेष्ठ, विकसित एवं सम्पूर्ण समाज के निर्माण के लिए व्यवस्थित आर्थिक संबंधों की मूलभूत आवश्यकता को बड़ी गहराई से अनुभव किया है। इस लिए यहां एक ओर परिश्रम करके आर्थिक उन्नति करने की बात की गई है ताकि खुशहाल जीवन जिया जा सके और दूसरी ओर उत्पादन के समान वितरण के द्वारा आर्थिक शोषण को ख़त्म करने का विचार पेश किया गया है।

आर्थिक उन्नति स्वीकार्य : मनुष्य प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इसकी चैतन्य शक्ति एवं समझ अन्य प्राणियों से विकसित है। गुरबाणी में स्पष्ट कथन है :

अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥
इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥ (पन्ना ३७४)

मनुष्य ने अपनी चेतना और समझदारी से प्रकृति के आधारभूत नियमों को समझा है एवं उनका प्रयोग अपने हित में किया। मनुष्य द्वारा सृजित सृष्टि ईश्वर निर्मित सृष्टि से न केवल भिन्न है, बल्कि उस की पूरक भी है। मनुष्य को अपनी आवश्यकता की जो वस्तुएं प्राकृतिक रूप से नहीं प्राप्त हो सकी हैं, उन्हें उसने स्वयं बना लिया है। इस प्रकार एक ओर मनुष्य ने अपनी ज़रूरतों का सामान बनाया है और वहीं दूसरी ओर वह प्रकृति के प्रभावों से काफी हद तक मुक्त भी हो गया है।

इसी प्रकार भौतिक संसार के प्रति भी गुरबाणी का दृष्टिकोण अत्यंत भिन्न और विलक्षण है। भारतीय दर्शन परंपरा में भौतिक संसार को आम-तौर पर भ्रम, मिथ्या, असत्य, नश्वर, क्षण भंगुर, चलायमान आदि-आदि कहा गया है परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार संसार भले नाशवान या अस्थिर है परंतु अकाल पुरख की सृजना और उसके निवास का स्थान होने के कारण इसका अस्तित्व वास्तविक और सत्य भी है। श्री गुरु नानक देव जी यहां स्पष्ट करते हैं कि यह संसार सच्चा और स्थिर है क्योंकि यह अकाल पुरख का निवास स्थान है :

--इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ (पन्ना ४६३)
--आतम रामु संसारा ॥

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

साचा खेलु तुम्हारा ॥ *(पन्ना ७६४)*

वास्तव में गुरु साहिबान ने इस संसार को 'जगत अखाड़ा' या 'कर्मभूमि' कहा है। गुरबाणी का मत है कि मनुष्य ने संसार में रहते हुए अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी करनी है और इस समस्त सृष्टि को अकाल पुरख का प्रसार मानकर धर्म एवं अध्यात्म की प्राप्ति भी करनी है। गुरबाणी में कहीं भी आर्थिक उन्नति एवं भौतिक उपलब्धियां हासिल करने का निषेध नहीं है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का कथन है कि खाना, पहनना, हंसना-खेलना और खुशहाल जीवन गुज़ारना 'अकाल पुरख' की भक्ति और मुक्ति की प्राप्ति में कोई विघ्न उत्पन्न नहीं करते :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ *(पन्ना ५२२)*

दरअसल गुरमति एक प्रवृत्तिमूलक दर्शन है। यहां सांसारिक कार्य-व्यवहार करते हुए भक्ति करने की बात की गई है। दूसरी ओर भारतीय दर्शन परंपरा के अधिकांश मत निवृत्तिमूलक हैं अर्थात् ये भक्ति एवं मुक्ति के लिए सन्यास को अनिवार्य मानते हैं।

दार्शनिक एवं वैचारिक स्तर पर सामाजिक जीवन में आर्थिक एवं भौतिक उपलब्धियों को हासिल करने को सामान्यत लोभ, लालच, तृष्णा आदि के रूप में अधिक देखा गया है परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब में परिश्रम से किए गए अर्जन और लोभ की कमाई में स्पष्ट विभाजक रेखा खींची गई है। गुरबाणी स्पष्ट शब्दों में संदेश देती है कि किरत करो, परिश्रम करो, और अपनी तथा अपने संगी-साथियों की भौतिक एवं आर्थिक आवश्यकताएं पूरी करो :

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥ *(पन्ना ५२२)*

इस प्रकार गुरु साहिबान के अनुसार समाज के आर्थिक विकास के लिए परिश्रम पर आधारित भौतिक उन्नति की इच्छा लोभ या तृष्णा नहीं है बल्कि यह इच्छा उस सामूहिक चेतना की सूचक है जो आर्थिक विकास के माध्यम से सामाजिक विकास को प्राप्त करना चाहती है। गुरु साहिबान स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य का सामूहिक विकास तभी हो सकता है जब उसे आर्थिक विकास से जोड़ दिया जाये।

निजी संपत्ति अर्जित करने का अधिकार-किरत का महत्त्व : सामाजिक विकास एवं आर्थिक विकास की पारस्परिक निर्भरता के कारण ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मनुष्य को निजी संपत्ति अर्जित करने का अधिकार प्रदान करने का पक्ष लिया गया है। बिना धन-संपत्ति अर्जित किए एक मनुष्य की उचित भौतिक आवश्यकताएं भी पूरी नहीं हो सकतीं।

गुरबाणी का आदेश है कि परिश्रम से किरत (कार्य) करनी है और ईमानदारी से प्राप्त किए गए उत्पादन को अपने परिवार और संगी-साथियों के साथ बांटकर खाना है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ *(पन्ना १२४५)*

यही कारण है कि गुरमति में सन्यासी की अपेक्षा गृहस्थ को अधिक महत्त्व दिया गया है। श्री गुरु नानक देव जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि जोगी भिन्न-भिन्न वेश धारण करके देश-देश भटकते हैं किंतु तत्व को नहीं पहचानते। तपस्वी वन में तप करते हैं किंतु अपने अंतर को नहीं समझ पाते। सबसे उत्तम गृहस्थी है जो 'किरत-कमाई' करके परिवार का पालन-पोषण करता है और 'अकाल पुरख' का नाम मन में बसाये रखता है :

जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर ॥

गुर का सबदु न चीन्हही ततु सारु निरंतर ॥ . .
इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा ॥
आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥ . .
इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥
नामु दानु इसनानु द्रिड़ु हरि भगति सु जागे ॥
(पन्ना ४१९)

स्तरीय जीवन-यापन का अधिकार : खुशहाल एवं स्तरीय जीवन गुज़ारना श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार मनुष्य का मूलभूत अधिकार है।

श्रेष्ठ जीवन गुज़ारने के लिए ज़रूरी चीज़ों का गुरबाणी में स्पष्ट वर्णन किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना ६९५ पर भक्त धन्ना जी का एक शबद अंकित है जिसमें खुशहाल जीवन जीने हेतु 'अकाल पुरख से सभी ज़रूरी वस्तुएं जैसे दाल, आटा, घी, जूते, कपड़े, अनाज, दूध, आने-जाने के लिए घोड़ी और सुखी गृहस्थ जीवन के लिए एक सुघड़ पत्नी की मांग की गई है :

गोपाल तेरा आरता ॥
जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥१॥ रहाउ ॥
दालि सीधा मागउ घीउ ॥
हमरा खुसी करै नित जीउ ॥
पन्हीआ छादनु नीका ॥
अनाजु मगउ सत सी का ॥१॥
गऊ भैस मगउ लावेरी ॥
इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥
घर की गीहनि चंगी ॥
जनु धंना लेवै मंगी ॥२॥ (पन्ना ६९५)

इसी प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ६५६ पर अंकित एक शबद में भक्त कबीर जी कहते हैं-- हे प्रभु! अगर तूने मुझे भूखा रखना है तो मुझसे तेरी भक्ति नहीं होती। मुझे इतनी संपत्ति दे कि मैं किसी का मोहताज न रहूं। मुझे दो सेर आटा, पाव भर घी, आधासेर दाल और नमक चाहिए ताकि मेरी दो वक्त की रोटी चल सके। इसके अलावा मुझे चारपाई, सिरहाना, तलाई चाहिए :

भूखे भगति न कीजै ॥
यह माला अपनी लीजै ॥
हउ मांगउ संतन रेना ॥
मै नाही किसी का देना ॥१॥
माधो कैसी बनै तुम संगे ॥
आपि न देहु त लेवउ मंगे ॥ रहाउ ॥
दुइ सेर मांगउ चूना ॥
पाउ घीउ संगि लूना ॥
अध सेरु मांगउ दाले ॥
मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥२॥
खाट मांगउ चउपाई ॥
सिरहाना अवर तुलाई ॥
ऊपर कउ मांगउ खीधा ॥
तेरी भगति करै जनु थीधा ॥३॥
मै नाही कीता लबो ॥
इकु नाउ तेरा मै फबो ॥ (पन्ना ६५६)

स्पष्ट है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार पहले मनुष्य की आर्थिक एवं भौतिक आवश्यकताएं पूर्ण होनी चाहिए तभी उसकी आत्मा आध्यात्मिक प्रफुल्लता प्राप्त कर सकेगी। गुरु साहिबान ने मनुष्य को भौतिक उपयोग का अधिकार तो दिया है परंतु साथ ही साथ सचेत भी किया है कि उन पदार्थों के दाता 'अकाल पुरख' को नहीं भुलाना है। अकाल पुरख को भुलाकर किया गया उपयोग भोग विलास है :

सो किउ मनहु विसारीऐ जा के जीअ पराण ॥
तिसु विणु सभु अपवित्रु है जेता पैनणु खाणु ॥
(पन्ना १६)

आर्थिक शोषण का निषेध-बांटकर खाने की अवधारणा : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दोष युक्त वितरण प्रणाली को समस्त आर्थिक असमानता एवं भौतिक विसंगतियों का कारण माना गया है। श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि सारी धरती माल-धन से भरी हुई है, दोष मात्र इस संपदा के वितरण एवं उपयोग में है :

सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥
(पन्ना ४६५)

आर्थिक असमानता का एक अन्य महत्त्वपूर्ण कारक है-- आर्थिक शोषण। अमीर वर्ग गरीब वर्ग का शोषण करता है। वास्तव में अमीर वर्ग वह है जिसका उत्पादन के साधनों एवं उत्पादन की वितरण प्रणाली पर अधिकार है। गरीब वर्ग के पास मात्र श्रम है और कोई अधिकार नहीं। अमीर गरीब के श्रम के बदले उसे बहुत कम देकर स्वयं अमीर बनते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आर्थिक शोषण का खुलकर विरोध किया गया है। श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि यदि कपड़े को रक्त लग जाये तो वह मलिन हो जाता है, इसी प्रकार जो लोगों का खून चूसते हैं वे कैसे निर्मल रह सकते हैं :

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
(पन्ना १४०)

इस लिए गुरु साहिबान आर्थिक शोषण की जड़ लोभ को त्यागने की सलाह देते हैं। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि धन-दौलत के कारण ही सभी समस्याएं उत्पन्न होती हैं और न ही यह धन-दौलत मरने के बाद साथ ही जाती है :

इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥
पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥
(पन्ना ४१७)

गुरु साहिबान अर्थ वितरण के कारण समाज में उत्पन्न होने वाली समस्याओं से पूरी तरह परिचित और उनके प्रति अत्यंत जागरूक थे। श्री गुरु अरजन देव जी इस संदर्भ में कहते हैं कि जिस घर में धन-संपत्ति अधिक हो, वहां हर समय चिंता ही रहती है और जिस घर में धन-संपत्ति का अभाव हो वे भी भटकते-फिरते हैं। जो इन दोनों अवस्थाओं से मुक्त है, वही सुखी है :

जिसु ग्रिहि बहुतु तिसै ग्रिहि चिंता ॥
जिसु ग्रिहि थोरी सु फिरै भ्रमंता ॥
दुहू बिवसथा ते जो मुकता सोई सुहेला भालीऐ ॥
(पन्ना १०१९)

इस लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बांटकर खर्च करने, खाने की बात की गई है :

खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥
तोटि न आवै वधदो जाई ॥ (पन्ना १८६)

वास्तव में अगर बांटकर उपभोग किया जायेगा तभी हर मनुष्य का खुशहाल जीवन सुनिश्चित हो सकेगा। अन्यथा किसी के पास कम किसी के पास अधिक जैसी असमान आर्थिक स्थिति वाला समाज कभी भी खुशहाल नहीं रह सकता।

इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आर्थिक उन्नति निजी संपत्ति, खुशहाल जीवन, आर्थिक समानता आदि से सम्बंधित अद्वितीय व्यवहारिक एवं कारगर उपाय प्रस्तुत किए गए हैं।

चढ़दी कला का प्रतीक : होला महल्ला

-डॉ. कुलदीप सिंघ हउरा*

किसी विद्वान का कथन है, "जो कौम मरना जानती है, उसको जीने का लालच नहीं होता। उस कौम को विश्वास होता है :

मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि परवाणो ॥ *(पन्ना ५७९)*

यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा बताई हुई मरने की युक्ति ही थी, जिसने वैरागी माधो दास को कर्म-योगी, संत-सिपाही बनाकर ज़ालिम और जाबिर हकूमत के साथ लड़ाया।

डॉ. गोकुल चंद नारंग के लिखने के अनुसार 'सिंघ होना' मौत लाड़ी के साथ विवाह करने के समान होता था। अगर एक स्त्री दूसरी से पूछती है, "तुम्हारे कितने पुत्र हैं तो वह कहती, बहन! पुत्र तो चार थे, परंतु एक अमृत छककर सिंघ सज गया। जिसका भावार्थ यह होता था कि सिंघ सजना, अपनी मौत को गले लगाने के समान होता था।

सर जादू नाथ सरकार ने लिखा है-- "५ मई, १७३९ ई. को १५ करोड़ नकद और ५० करोड़ का सामान और तख़्त-ए-ताऊस आदि दिल्ली से लूट, ५० हज़ार हिंदू लड़के-लड़कियां कैदकर, नादिर शाह जब अपने देश वापिस जा रहा था तो स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने उसको लूटा तथा उसका वज़न कम किया और लड़के-लड़कियों को छुड़वाकर उनके घर पहुंचाया। नादिर शाह हैरान और परेशान होकर ज़करिया खां को पूछने लगा कि ये कौन लोग हैं? जिन्होंने मेरे और मेरी फौज के होते हुए भी मेरी लूट का माल छीनने से संकोच नहीं किया।

ज़करिया खां ने उसको बताया, "ये लोग हिंदू, मुसलमानों से विलक्षण हैं। जंगलों और पर्वतों पर रहते हैं, घोड़ों की काठियां इनके ठिकाने हैं। हम इनको मार-मारकर थक चुके हैं परंतु ये समाप्त ही नहीं होते।" नादर शाह ने सुनकर अंगुली दांतों तले ले ली और कहा, "वो समय दूर नहीं जब ये लोग देश के मालिक होंगे।"

नादिर शाह ने कहा, अगर सच में ही सिंघ ऐसे हैं, जैसा तूने मुझे बताया है तो कान खोलकर सुन ले :

"ते इह मारे न मरे जीत सकै इन कौन।
नाहत सहत कलेश तुम देख देन इन जौन।
मरत हो तुम आप ही आपने पैर कुठार।
कुछ दिन को सिंघ होइ है भूपत मुलक मझार।"

इस पर ज़करिया खां गुस्से और रोष में आ गया तथा सिंघों को पकड़-पकड़कर लाहौर लाने का हुक्म दे दिया। जो सिंघ पकड़ कर लाये जाते, उनको निखास चौक में लाकर, अकहनीय और असहनीय यातनाएं देकर शहीद कर दिया जाता। ऐसा करके हकूमत समझती थी कि सिंघ अब खत्म हो चुके हैं, परंतु समय मिलने पर सिंघ अपनी तेग के जौहर दिखा जाते थे। सरकार द्वारा श्री अमृतसर के दर्शन-स्नान करने पर पाबंदी लगा दी गई। प्राचीन पंथ प्रकाश में एक घटना का वर्णन इस तरह मिलता है, "भाई सुक्खा सिंघ माड़ी कम्बो की वाले दिन में ही अमृत सरोवर में स्नान कर गए तो उन्होंने गरजकर कहा :

सुक्खा सिंघ तब यों कहयो रात नाउं तब चोर।
नावै गए हम दिन बिखै, श्री सतिगुर के जोर।
(प्राचीन पंथ प्रकाश)

एक अन्य घटना भाई बोता सिंघ और

*१६२, हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, श्री अमृतसर।

भाई गरजा सिंघ से सम्बंधित इस तरह है :

दोनों सिंघ श्री अमृतसर के दर्शन-स्नान कर, शहर से बाहर छिपते छिपाते जा रहे थे कि किसी ने ताना मारा, "यह सिंघ नहीं लगते, सिंघ होते तो छिपते क्यों ?" यह ताना सुनकर उनके अंदर चढ़दी कला वाला जज़्बा जागृत हुआ और उन्होंने नूर की सराय के पास सड़क पर खड़े होकर कर वसूलना शुरू कर दिया और लाहौर के सूबे को एक पत्र ऐसे लिखा :

चिट्ठी सुन हे खान कोता। आना गड्डा पैसा खोता।
इह लगान लैत सिंघ बोता। हथ महि राखत मोटा सोटा।
तेरा आकबत करहै खोटा। मेरा कहीं सुनेहा जाइ।
भाबी खानो को समझाइ। तेरा थार सिंघ जो बोता।
तैनूं रिहा उडीक खलोता। आइ सराए नूर दी पास।
तू वी जोता लगवा लै खास।

इस तरह वंगार कर सरकार को बताया कि अति कठिन समय में भी सिंघ चढ़दी कला में रहते हैं। सरकार द्वारा पूरी सख़्ती के बावजूद जब भी मौका मिलता, सिंघ जंगलों से निकलते, लूट-मार करते और ज़रूरत की वस्तुएं ले जाते।

यहीआ खां हैरान भी था और परेशान भी। वह सोचता था कि हम इनका नामो निशान मिटाने पर तुले हुए हैं, परंतु ये भूखे प्यासे रहकर, फटे कपड़े पहनकर भी हमें चैन नहीं लेने देते। सिंघों का संकटकालीन हालत में भी चढ़दी कला में रहने का वर्णन लिखित रूप में इस तरह मिलता है :

फिड्डा जैसा टटूआ औ जुलाडू की काठी पाइ,
रसडू लगाम ते रसडू रकाब जू।
पाटिआ सा कछडू ते नीलडू सा चादरू,
डूचो जैसे पगडू बनाया सिर ताज जू।
टुट्टिआ जैसा तंगडू ते लीगडू मिआन जा को,
गठ गठ गातरा बणाइआ सभ साज जू।
नाम उन अकालडू सो फिरै बुरै हालडू,
सो लुट्ट कुट्ट खावणे को डाढे उसताद जू।
(पंथ प्रकाश)

इस तरह दुख और भूख सहनकर भी सिंघ चढ़दी कला में रहते थे और धार्मिक तथा राजसी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते थे, प्रयत्नशील रहते थे। हालात यह थे कि दिल्ली और पंजाब की सरकार एक तरफ और उनकी हां में हां मिलाने वाले पिट्ठुयों, सिंघों को खत्म करने पर तुले हुए थे परंतु सिंघ सदैव आत्मिक रूप में चढ़दी कला में रहते और अरदास करते थे :

"जहां जहां खालसा जी साहिब, तहां तहां रछिआ रिआइत, देग तेग फ़तहि, बिरद की पैज, पंथ की जीत, श्री साहिब जी सहाइ, खालसा जी के बोल बाले, बोलो जी वाहिगुरु।"

खालसा जी साहिब और खालसा जी के बोल बाले वाक्यांश खालसे की चढ़दी कला के प्रतीक ही नहीं, खालसे की चढ़दी कला के प्रत्यक्ष परिणाम हैं।

समय-समय पर सरकारें खालसे की चढ़दी कला के नज़ारे देखकर खालसे के साथ समझौता भी करती रही हैं। ऐसा ही एक समझौता करने के लिए १७४८ ई में अदीना बेग फौजदार जलंधर ने स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को मुलाकात के लिए संदेश भेजा परंतु पता चला कि समझौते की आड़ में सरकार की बेईमानी छिपी हुई है, तो स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने अदीना बेग को लिख भेजा "मुलाकात तां हमारी तुम्हारी लड़ाई के मैदान में ही होगी और जौन से हथियार ऊहां छूटेंगे, सोइ दिल की बात जाहर होंगी।"

उपरोक्त वर्णन से सिंघों की चढ़दी कला की संक्षिप्त जानकारी का पता चल जाता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक संत-सिपाही शूरवीर

थे। वह चाहते थे कि सिंघों के भीतर चढ़दी कला के नज़ारे देखकर ऐसी भावना सदैव ही बनी रहे। इसलिए अपने युद्ध-शिक्षा के अभ्यास को सदैव निरंतर रखने के लिए 'होला महल्ला' मनाने की परंपरा आरंभ की।

सिक्ख विद्वान भाई वीर सिंघ जी ने महल्ला शब्द को 'मय हल्ला' भाव बनावटी हल्ला कहा है। इसी तरह भाई कान्ह सिंघ जी कर्त्ता 'महान कोश' ने कहा है 'होला महल्ला' एक बनावटी हल्ला होता है। इसमें पैदल और सवार शस्त्रधारी सिंघ दो दल बनाकर एक अहम स्थान पर हल्ला करते हैं।

(गुरमति प्रभाकर, पन्ना ५०७)

किंतु होली एक मौसमी त्योहार है। सर्दियां समाप्त होने पर जब मौसम सुहावना हो जाता है, न सर्दी होती है न गर्मी, तो लोग अपनी खुशी का प्रकटावा करने के लिए नाचते-उछलते, हंसते-खेलते और गाते हैं। वनस्पति मौली (हर्षित) होती है। वृक्ष हरे-भरे और खिले होते हैं। प्रकृति की तरह मनुष्य भी खुश होते हैं और प्राकृतिक नज़ारों को देखकर आनंदित होते हैं तथा खुशी का प्रकटावा करते हैं।

सिंघों के भीतर चढ़दी कला की भावना प्रकट करने हेतु युद्ध-शिक्षा के अभ्यास को बरक़रार रखने के लिए ज़रूरी समझा गया। इसलिए कलगीधर पातशाह जी ने नये ढंग से सिंघों के भीतर होला महल्ला मनाने की रीति आरंभ की।

खालसा सृजना के उपरांत आप ने संवत् १७५७ चेत वदी एकम को एक नया स्थान 'होलगढ़' रचकर 'होला महल्ला' खेलने की नयी रीति चलाई। दो जत्थे बना दिए गए और एक को होलगढ़ पर कब्ज़ा कर मोर्चा कायम करने के लिए कह दिया गया। दूसरे जत्थे को होलगढ़ पर चढ़ाई करने का हुक्म दे दिया गया। डेढ पहर दोनों तरफ से घमासान युद्ध हुआ। तीर और गोली चलाने की मनाही थी, क्योंकि दोनों तरफ खालसाई फौजें थीं। दोनों फौजों में अंतर रखने के लिए होलगढ़ पर काबिज़ जत्थे के वस्त्र सफेद थे और दूसरे दल के हलके केसरी।

आज भी होले महल्ले की परंपरा सिंघों में उसी तरह चली आ रही है। श्री अनंदपुर साहिब के अतिरिक्त श्री अमृतसर में भी निशान साहिब की ताबिया, श्री अकाल तख़्त साहिब से महल्ला चढ़ता है, जो शहर की परिक्रमा करता हुआ, बुर्ज बाबा फूला सिंघ पर समाप्त होता है। इस महल्ले में कई प्रकार के जौहर दिखाने वाले जत्थे, घुड़सवार निहंग, गतका पार्टियां, मोटर साईकिल और स्कूटर सवार नवयुवक और बैंड पार्टियां, स्त्री जत्थे, सिंघ सभा तथा अन्य सभा सोसायटियां और संगत शामिल होती है। इसके अतिरिक्त स्थानीय रूप में कई शहरों, कसबों, नगरों और गांवों में भी 'होला महल्ला' मनाया जाता है।

यह चढ़दी कला वाला त्योहार भारत वर्ष के अतिरिक्त विदेशों में भी बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह अलग बात है कि स्थानीय रूप में इस त्योहार को मनाने के ढंग-तरीकों में विभिन्नता हो।

'होला महल्ला' एक वह पवित्र त्योहार है, जो कलगीधर पातशाह जी ने भारतीय समाज, संस्कृति और सभ्याचार को एक अनूठे और अद्वितीय ढंग से मनाने के लिए नए सिरे से प्रेरणा बख़्शिश करते हुए, शुरू किया था। गुरु जी का मनोरथ और मंशा थी कि दबे-कुचले भारतीयों में शूरवीरता, आत्म सम्मान और सांझीवालता के जज़्बे का संचार किया जाए।

धर्म की रक्षा हेतु, मानवीय कदरों-कीमतों की सच्चे-सुच्चे ढंग से स्थापना करने के लिए झूठ और पाखंड के मुकाबले हेतु सच तथा चढ़दी कला के जज़्बों के संचार के लिए होले महल्ले जैसा कौमी त्योहार, ऐसा रंग लाया। इस पक्ष से खालसा जी का यह त्योहार सदैव चढ़दी कला वाले त्योहार के रूप में मनाए जाने की मांग करता है।

भक्त धंना जी

*-डॉ. शमशेर सिंघ**

भक्त धंना जी के जन्म के सम्बंध में कोई प्रमाणिक और भरोसेयोग्य सामग्री नहीं मिलती, फिर भी उपलब्ध साधनों से हम उनके जन्म सम्बंधी जो कुछ प्राप्त कर सकते हैं, वह यहां पाठकों के साथ सांझा करने का प्रयत्न किया है।

महान कोश के कर्ता भाई कान्ह सिंघ नाभा (पन्ना ५०४ पर) लिखते हैं :

"धंना जी का टांक के क्षेत्र धूआन गांव (जो देउली से २० मील है) में संवत् १४७३ (अनुसार १४१५ ई) जट्ट वंश में जन्म हुआ। स्वामी रामानंद जी से काशी जाकर गुरु दीक्षा ली। पहली आयु में यह मूर्ति पूजक रहे परंतु बाद में विश्व रूप जगत नाथ का उपासक होकर परम पद का अधिकारी बना। भक्त धंना जी की मृत्यु के बारे में कुछ ज्ञात नहीं है।

अंग्रेज विद्वान आर्सर मैकालिफ पोथी छठी, पन्ना १०६ भक्त धंना जी के बारे में लिखता है :

राजपुताने में दिउली छावनी से २० मील की दूरी पर टांक के क्षेत्र में एक गांव है, जिसका नाम है धूआन। यहां पर एक जट्ट घराने में, भक्त धंना जी सन् १४१५ ई में पैदा हुए। छोटी आयु मेंड ही भक्त धंना जी धार्मिक लग्न वाले थे। एक दिन भक्त धंना जी के घर का प्रोहित पूजा करने के लिए इनके घर आया। पूजा की सम्पूर्ण विधि भक्त धंना जी ने भी देखी और आखिर पंडित से उन्होंने एक ठाकुर मांगा। पहले तो पंडित टाल-मटोल करता रहा परंतु भक्त धंना जी का हठ देख छोटा-सा काले रंग का पत्थर उसको पूजने के लिए दे दिया। भक्त धंना जी ने बहुत श्रद्धा-भावना से उस ठाकुर की पूजा शुरू कर दी। उसकी दृढ़ता देखकर पंडित कभी-कभी आकर पूजा भक्ति का रास्ता बताता रहा और आखिर एक दिन ठाकुर पूजा से भक्त धंना जी को परमात्मा मिल गया। भक्त धंना जी के द्वारा, फिर उस पंडित का भी लोक-परलोक संवर गया।

इसका वर्णन प्रो: साहिब सिंघ ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब दर्पण पोथी तीसरी पन्ना ८९७ पर दिया है। आगे जाकर प्रो. साहिब सिंघ ने पत्थर पूजा वाली साखी पर टिप्पणी की है और कहा है कि श्री गुरु अरजन देव जी ने मूर्ति पूजा करने वालों के लिए बहुत कड़े शब्दों का प्रयोग करते हुए 'गुनाहगार' नमक हरामी कहा है :

गुनहगार लूण हरामी ॥
पाहण नाव न पारगिरामी ॥ (पन्ना ७३९)

भक्त धंना जी के अपने शब्दों में कहीं भी ठाकुर पूजा की गवाही नहीं मिलती। भाई गुरदास जी ने अपनी दसवीं वार में भक्त धंना जी की ठाकुर पूजा के बारे में प्रचलित हो चुकी साखी और उनके भोलेपन के कारण परमात्मा की प्राप्ति के बारे में लिखते हैं :

बाह्मणु पूजै देवते धंना गऊ चरावणि आवै।
धंनै डिठा चलितु एहु पूछै बाह्मणु आखि सुणावै।
ठाकुर दी सेवा करै जो इछै सोई फलु पावै।
धंना करदा जोदड़ी मैं भि देह एक जे तुधु भावै।
पथरु एकु लपेटि करि दे धंनै नो गैल छुडावै।

ठाकुर नो न्हावालि कै छाहि रोटी लै भोगु चढ़ावै।
हथि जोड़ि मिनति करै पैरी पै पै बहुतु मनावै।
हउ भी मुहु न जुठालसां तू रुठा मैं किहु न सुखावै।
गोसाई परतखि होइ रोटी खाहि छाहि मुहि लावै।
भोला भाउ गोबिंदु मिलावै ॥१३॥

भक्त धंना जी के श्री गुरु ग्रंथ साहिब में तीन शबद मिलते हैं। दो आसा राग में, एक धनासरी में।

इन शबदों में कहीं भी भक्त धंना जी के मूर्ति पूजा वाली साखी का संकेत या इशारा नहीं मिलता। हम यहां आसा राग का शबद अंकित कर उसके समूचे भावार्थ भी वर्णन करेंगे, जिस में कहीं भी पत्थर पूजन का वर्णन नहीं है, इस सब से यही ज्ञात होता है कि इस तरह की साखियां भक्तों के साथ जोड़कर उनको मूर्ति के उपासक बताया जाता था। जिस तरह भाई कान्ह सिंघ नाभा ने ज़िक्र किया है कि भक्त धंना जी पहले पहल सगुण के पुजारी थे, बाद में निर्गुण के पुजारी बन गए। गुरबाणी में तो उनकी रचना निरोल सगुण से ऊपर उठकर निर्गुण पूजा का ही प्रकटावा करती दिखाई देती है। राग आसा में उनकी बाणी इस प्रकार अंकित है :

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥
लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥१॥ रहाउ ॥
बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥
गुन ते प्रीति बढी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥१॥
जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे ॥
बिखु फल संचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥२॥
गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए ॥
प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ त्रिपति अघाने मुकति भए ॥३॥
जोति समाइ समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ ॥
धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥४॥ *(पन्ना ४८७)*

इस शबद का भावार्थ जो प्रो. साहिब सिंघ ने किया है उसके अनुसार कहीं भी मूर्ति पूजा का अंश नहीं मिलता भावार्थ इस प्रकार हैं :

माया के मोह में भटकते कई जन्म गुज़र जाते हैं; यह शरीर नष्ट हो जाता है; मन भटकता रहता है। धन भी टिकता नहीं, लोभ ग्रस्त जीव ज़हर रूपी पदार्थों के लालच में रंगा रहता है। इस तृष्णा के कारण मन से अमोलक प्रभु विस्मृत हो जाता है।

हे पागल मन! यह ज़हर रूपी फल तुझे मीठे लगते हैं, तुझे सुंदर विचार नहीं आती। (प्रभु) गुणों से हट कर अन्य प्रकार की प्रीति तुम्हारे अंदर बढ़ रही है, यह सब आवागमन का ताना बुना जा रहा है।

हे मन! तूने जीवन की युक्ति समझकर यह युक्ति अपने अंदर मज़बूत नहीं की, तृष्णा की आग में जलते जमों का जाल, जमों के फंदे तेरे गले पड़ गए हैं। हे मन! तू विष रूपी ज़हर के फल ही इकट्ठे कर संभालता रहा और ऐसे संभालता रहा कि तुझे परम पुरख प्रभु ही भूल गया।

जिस मनुष्य को गुरु ने ज्ञान का प्रवेश रूपी धन दिया है। उसकी सुरत प्रभु में जुड़

गई। उसके अंदर श्रद्धा बन गई, उसका मन प्रभु के साथ एकरस हो गया, उसको प्रभु का प्यार, प्रभु की भक्ति अच्छी लगी, सुखों के साथ सांझ बन गई। वह माया द्वारा संतुष्ट हो गया और बंधनों से मुक्त हो गया। जिस मनुष्य के अंदर प्रभु की सर्वव्यापक ज्योति टिक गई उसने माया में न छले जाने वाले प्रभु को पहचान लिया।

मैं (धंने) ने भी उस प्रभु का नाम रूपी धन प्राप्त कर लिया है, जो संपूर्ण धरती का सहारा (आश्रय) है। मैं (धंना) संत जनो को मिलकर प्रभु में लीन हो गया हूं।

उपरोक्त शबद के अर्थों से दो बातें बहुत स्पष्ट हो जाती हैं।

१) मुझे (धंने को) प्रभु का नाम-धन गुरु से प्राप्त हुआ है।

२) मुझे संतों की संगत में धरणीय प्रभु मिला है।

भक्त धंना जी की मूर्ति पूजा की साखी का खंडन करने के लिए इसी राग का दूसरा शबद जो श्री गुरु अरजन देव जी ने उच्चारण किया है :

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥
आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥१॥ रहाउ ॥
बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ॥१॥
रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥२॥
सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥
हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ ॥३॥
इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥
मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ॥४॥

(पन्ना ४८७)

भक्त नामदेव जी का मन सदैव परमात्मा के साथ जुड़ा रहता था। इसी कारण आधी कौड़ी का गरीब छीपा (छींबा) मानो धनवान बन गया, वह किसी का मुहताज न रहा।

कपड़ा बुनने और ताना तनने की लग्न छोड़कर भक्त कबीर जी ने प्रभु-चरणों के साथ लग्न लगा ली। तथाकथित जाति का गरीब जुलाहा आत्मिक गुणों का अथाह समुद्र बन गया।

भक्त रविदास जी प्रतिदिन मृतक पशुओं को ढोता था परंतु जब उसने माया का मोह त्याग दिया साधसंगत में रहकर महान हो गया, उसको परमात्मा का दर्शन हो गया।

भक्त सैण जी, नाई जाति का लोगों की बुत्तियां निकालने वाला था, उसकी घर-घर शोभा होने लग गयी। उसके हृदय में परमात्मा बस गए। वह भक्तों में गिना जाने लगा।

इसी तरह इन भक्तों की कहानियां और शोभा सुनकर गरीब धंना भक्त भी भक्ति करने लगा। उसको परमात्मा का साक्षात् दीदार हुआ वह बड़ा भाग्यवान बन गया।

उपरोक्त सभी शबदों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यहां अन्य भक्तों ने निरंकार की भक्ति श्रद्धा, प्रेम, प्यार के साथ की और दुनियावी पदार्थों का मोह त्यागकर, तृष्णाओं से मुक्त होकर निर्गुण प्रभु का सिमरन किया और प्रभु नाम-धन के मालिक बनकर आत्मिक पक्ष से अमीर हो गए। दुनियावी पक्ष से संतुष्ट हो गए। सब्र के मालिक बनकर एक आर्दशवादी मनुष्य का जीवन व्यतीत करने लगे। इन सब प्रकार की पूजा विधियों और त्याग भाव को देखकर सीधा सादा भक्त धंना जी भी भक्ति में लीन हो गया। भक्त जी की श्रद्धा और लग्न का आधार उसका भोलापन, हृदय की पवित्रता और प्रभु कृपा में विश्वास था।

इसी तरह तीसरा शबद जो भक्त धंना जी

का हैं; में भी मन को सम्बोधित करते कहते हैं कि दयावान दयालु परमात्मा का तू क्यों नहीं सिमरन करता? किसी अन्य की आशा न लगाए रख, सम्पूर्ण विश्व के देशों-प्रदेशों में भटकने के बाद भी वही कुछ होगा जो परमात्मा करेगा। उस प्रभु ने मां के पेट के जल में हमारा दस स्रोतों वाला शरीर बना दिया। परमात्मा मां के पेट में भी आहार प्रदान कर हमारी रक्षा करता है। हमारा मालिक प्रभु इतना दयालु है।

कच्छपी पानी में रहती है और उसके बच्चे रेत पर रहते हैं, उन बच्चों के न पंख हैं कि वो उड़कर कहीं जाकर कुछ खा लें और न ही कच्छपी के थन है कि वह बच्चों को दूध पिला सके। परंतु हे जीव! मन में सोच-विचारकर देख परमात्मा सुंदर परमानंद पूरन प्रभु प्रतिपालक उन बच्चों की भी पालना करता है।

पत्थर में कीड़ा लुप्त हुआ रहता है। पत्थर से बाहर जाने के लिए कोई रास्ता नहीं परंतु उसको पालने वाला भी प्रभु-परमात्मा है भक्त धंना जी कहते हैं, हे जिंदे! तू भी न डर।

इस शबद द्वारा भी प्रतिपालक प्रभु का सिमरन करने के लिए कहा है क्योंकि वही दुनिया का पालक है, अन्य कोई हस्ती नहीं। परमात्मा रोज़ी-रोटी देने वाला है। विश्व के हर पैदा किए हुए जीवों की पालना करना उसका 'राजक रहिंद' वाला सिद्धांत यहां दर्शाया गया है। इस सिद्धांत की पुष्टि हमें गुरबाणी से श्री गुरु अरजन देव जी के पावन शबद से भी होती हैं :

सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥ *(पन्ना १०)*

दशम् पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'अकाल उसतत' बाणी में परमात्मा के दयालु, कृपालु स्वभाव को दृढ़ करवाया है।

भक्त धंना जी का शबद भी इसी स्वर में कहा गया है। यहां किसी प्रकार की मूर्ति पूजा अथवा किसी देवी-देवते का सहारा नहीं लिया गया।

रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई ॥
जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता करै सु होई ॥१॥ रहाउ ॥
जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीआ दस दुआरा ॥
देइ अहारु अगनि महि राखै ऐसा खसमु हमारा ॥१॥
कुंमी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही ॥
पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माही ॥२॥
पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ता चो मारगु नाही ॥
कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीअ डरांही ॥३॥
(पन्ना ४८८)

तीसरे शबद में प्रतिदिन जीवन में खाने-पीने की महत्ता दर्शाई है जो इस शरीर को दरुस्त रखने के लिए ज़रूरी है। यह शरीर प्रभु का निवास स्थान है। इसकी पालना नियमबद्ध प्रकार से करना ज़रूरी है। प्रभु भक्ति में विश्वास दृढ़ करवाते हुए इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि प्रभु के भक्त जो सच्चे मन से भक्ति करते हैं, श्रद्धा और प्रेम से प्रभु का सिमरन करते हैं, उनके जीवन की सफलता के लिए प्रभु संपूर्ण कार्य संवारता है।

भाई मरदाना जी

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

गुरु का संग संसार के सच का ज्ञान देने वाला और विकारों से मुक्त कर परमात्मा की शरण में ले जाने वाला है। कल्युग मद की मटकी की तरह है, जिसमें वासनाओं का मद लबालब भरा हुआ है और मन उसे पीने को आतुर हो रहा है। अहंकार ने आंखों में क्रोध और लोभ भरा हुआ है। चारों ओर यही परिदृश्य है, जिससे लोगों का जीवन निष्फल जा रहा है। संसार का यह सच जानने के बाद ही घर-घर रबाब बजाकर जीविका अरजन करने वाले भाई मरदाना जी ने कल्युग के तारणहार, ज्ञान के दैदीप्यमान सूरज श्री गुरु नानक देव जी का अनुसरण किया और अपना पूरा जीवन उनके चरणों में अर्पित कर दिया। गुरु साहिब जहां गए भाई मरदाना जी उनके साथ थे, जिस हाल में रखा भाई मरदाना जी रहे और जो कहा उसे करना अपना धर्म बना लिया। अपने आप को पूरी तरह गुरु साहिब के हुक्म का पाबंद कर लिया जो एक कठिन और बड़ी साधना की तरह था। भाई मरदाना जी का गुरु साहिब के प्रति समर्पण उस समय आरंभ हुआ जब संसार उन्हें श्री गुरु नानक देव जी के रूप में नहीं जानता था। गुरु साहिब ने राये भोइ की तलवंडी में अपने संग आने का आमंत्रण दिया और भाई मरदाना जी आ गये। सुलतानपुर लोधी में जब गुरु साहिब ने बेईं नदी में स्नान के बाद पुन: प्रकट होकर भाई मरदाना जी को घर, परिवार, गांव त्याग कर अपने साथ प्रचार यात्रा पर चलने के लिए कहा तो वे तैयार हो गये। न तो गंतव्य पता था, न समय सीमा थी, न कोई ठौर था, बस गुरु साहिब का प्रेम था और भाई मरदाना जी उस प्रेम के पांधी बनते चले गये। उन्हें गुरु साहिब से मिलने वाले रूहानी आहार का रस आने लगा था *"गिआनु गूड़ु सालाह मंडे भउ मासु आहारु ॥"* गुरु साहिब से मिलने वाला ज्ञान उन्हें गुड़ जैसा मीठा लगने लगा था। गुरु जी की यह प्रीति ऐसी थी जो परमात्मा से अलग होने के प्रति भयभीत भी करने वाली थी और इस रूहानी आहार को अधिक रसमयी बनाने वाली थी।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार भाई मरदाना जी गुरु नानक साहिब के जन्म स्थान राये भोइ की तलवंडी के ही रहने वाले थे और तथाकथित मीरासी (डूम) जाति से सम्बंधित थे। ये मुख्यत: भूमिहीन समुदाय था जो परंपरागत रूप से संगीत से जुड़ा हुआ था। भाई मरदाना जी रबाब बजाया करते थे; गुरु साहिब ने भाई मरदाना जी को परमात्मा की स्तुति में रबाब बजाने को कहा। इस तरह वे गुरु साहिब के निकट आते गये। जब गुरु साहिब सुलतानपुर लोधी चले गये तब भी भाई मरदाना जी उनके संपर्क में रहे और बाद में वहीं आकर रहने लगे। भाई मरदाना जी लोगों को प्रसन्न करने के लिए रबाब बजाने और परमात्मा की प्रशंसा में धुन निकलने का भेद पता लगने लगा था जो उन्हें आनंद दे रहा था। उनके अंतर की चेतना गुरु साहिब की कृपा से जाग्रत हो रही थी :

कांयां लाहणि आपु मदु अंम्रित तिस की धार ॥
सतसंगति सिउ मेलापु होइ लिव कटोरी अंम्रित भरी पी पी कटहि बिकार ॥ (पन्ना ५५३)

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: +९१९४१५९-६०५३३

कहा जा सकता है कि भाई मरदाना जी गुरु-कृपा के पहले पात्र थे, जिन्होंने गुरु मिलाप और गुरु-संगत का अमृत भरपूर चखा। जिसने यह रस चख लिया वह इससे विरत हो ही नहीं सकता था। संसार के लिए रबाब बजाने और संसार के पालक के लिए रबाब से धुन निकलने के अंतर की समझ भाई मरदाना जी को परमात्मा से जोड़ने वाली थी :

बिलावलु तब ही कीजीऐ जब मुखि होवै नामु ॥
राग नाद सबदि सोहणे जा लागै सहजि धिआनु ॥
राग नाद छोडि हरि सेवीऐ ता दरगह पाईऐ मानु ॥ *(पन्ना ८४९)*

भाई मरदाना जी का रबाब बजाने का कौशल परमात्मा की स्तुति को समर्पित था। श्री गुरु नानक देव जी का संग करने के बाद उनकी रबाब से सदैव ईश्वर का नाम मन में बसाने वाली धुन ही निकली। उनकी रबाब की शोभा ही इसी लिए थी क्योंकि उससे निकलने वाला संगीत ध्यान को परमात्मा से जोड़ता था। यह संगीत भाई मरदाना जी ने अपने हुनर का प्रदर्शन करने के लिए नहीं अपनाया बल्कि रबाब एक तरह से ईश्वर की आराधना का माध्यम थी। गुरु नानक साहिब के मुखारबिंद से गुरबाणी का प्रवाह और भाई मरदाना जी की रबाब से धुन दोनों साथ-साथ चलते थे। जब भी गुरु साहिब को बाणी उच्चरित करनी होती थी, वे भाई मरदाना जी से रबाब बजाने को कहते। उनकी रबाब से उठने वाले सुर मानो गुरबाणी के पग पखारते हुए चलते। कदाचित यही भाई मरदाना जी की *"राग नाद छोड़ि हरि सेवीऐ ॥"* की विधि थी जिसमें उनकी आत्मिक चेतना और उनके अंगों की क्रिया दोनों जुड़े होते थे। इससे प्रभु की आराधना, सेवा और धर्म क्रियाओं को पहली बार नये संदर्भ मिले। गुरबाणी के पग पखारते हुए संगीत पवित्र हो गया। भाई मरदाना जी गुरबाणी और संगीत के मध्य अनन्य सम्बंध स्थापित करने वाले आदि पुरुष बने। इससे गुरबाणी सीधे साधारण लोगों के मन में उतरी और उनका उद्धार हुआ।

भाई मरदाना जी ने एक बार गुरु नानक साहिब का संग किया तो जीवन की अंतिम सांस तक उनके मुरीद की तरह रहे। हर कदम पर गुरु साहिब के आदेशों का पालन किया और उन्हें अपने जीवन की बागडोर सौंप दी। गुरु साहिब जहां गये वे उनके पीछे थे और एक अनन्य सेवक की तरह गुरु साहिब की चिंता की। वास्तव में गुरु नानक साहिब और भाई मरदाना जी के मध्य जो सम्बंध स्थापित हुआ था वह गुरु-सिक्ख, स्वामी-दास, तारणहार-भ्रमित, दाता-याचक और प्रियतम-पिपासु का सम्बंध था, गुरु साहिब ने प्रेमपूर्वक स्वयं उन्हें जीवन संवार लेने का आमंत्रण दिया था :

जनम सुधार लेहु तुम अपना।
जगत असत्ति लखहु जिव सुपना।
सोवहि मध्धि गुड़ाका जौ लौ।
सुपना सत्ति भासि है तौ लौ।
(श्री गुरु नानक प्रकाश)

यह समझना बहुत बड़ी भूल होगी कि भाई मरदाना जी को गुरु साहिब ने एक रबाबी के रूप में देखा और उन्हें एक रबाबी की आवश्यकता थी। इस सम्बंध का मुख्य आधार आध्यात्मिक समृद्धि था। गुरु साहिब भाई मरदाना जी का जीवन संवारना चाहते थे और भाई मरदाना जी के मन में भी गुरु साहिब की कृपा से जीवन मुक्त होने की इच्छा उत्पन्न हो गई थी :

तुमरे दरस करख मन लीआ।
एक आस नासी अब बीआ।
जगति बिकारन ते भी शांती।
उर अनंद उपजा बहु भांती।
(श्री गुरु नानक प्रकाश)

भाई मरदाना जी गुरु साहिब की शरण में इसलिए गये क्योंकि उन्हें प्रतीति हो गई कि संसार

के सारे कार्य-व्यवहार व्यर्थ हैं। उन्हें ज्ञात हो गया था कि परमात्मा से स्वयं को जोड़ लेना ही परम धर्म है, जिससे उनके मन में असीम आनंद पैदा हो गया था। वास्तव में यह गुरु और सिक्ख के मध्य सम्बंध की पहली और पूर्ण व्याख्या थी। नगर, कस्बों, मजलिसों में रबाब बजाना छोड़कर जंगलों में, पहाड़ों, वनों, कंदराओं में रबाब बजाना भाई मरदाना जी के लिए अधिक सुखदायक हो गया, जो उन्हें वास्तविक आनंद की अनुभूति देता था। पहले रबाब बजाने का मकसद यदि लोगों को खुश करना और धन कमाना था तो अब रबाब की धुन का उद्देश्य परमात्मा की स्तुति करना और आत्मिक आनंद को पाना था। यह प्रतीति इसलिए उत्पन्न हुई क्योंकि गुरु नानक साहिब ने भाई मरदाना जी की जीवन और संसार के प्रति दृष्टि बदल दी थी। इसी कारण भाई मरदाना जी ने घर-परिवार त्याग कर गुरु साहिब के साथ जाना स्वीकार किया। वे संसार के अति सौभाग्यशाली मनुष्य थे, जिन्हें गुरु साहिब के साथ दिन-रात इतना लंबा समय व्यतीत करने का अवसर मिला जिससे उनका जीवन बदल गया :

मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥ *(पन्ना १०)*

गुरु साहिब की कृपा से भाई मरदाना जी ने उस अवस्था को पा लिया, जिसकी कामना बड़े यज्ञ, तप, अनुष्ठान करने के बाद भी पूर्ण नहीं हो पाती। श्री गुरु नानक देव जी को घर से निकले सालों गुज़र गये थे। उन्होंने लाहौर में दुनी चंद का उद्धार किया फिर अपनी बहन बेबे नानकी जी से मिलने जाने का निर्णय लिया जो उन्हें याद कर रही थीं। गुरु साहिब यह कह कर प्रचार यात्रा पर निकले थे कि वे जब भी याद करेंगी वह मिलने आ जायेंगे। भाई मरदाना जी के साथ वे सुलतानपुर लोधी जाकर अपनी बहन व परिवार के अन्य सदस्यों से मिले फिर तलवंडी आ गये और गांव के बाहर ही डेरा जमा लिया। जब भाई मरदाना जी अपने घर गये तो सभी लोग उनसे मिलने आये।

श्री नानक संगी मरदाना।
फिरति वहिर बहु काल बिताना।
अब आवा अपने घर बीचू।
इऊं सुनि आइ ऊच अरु नीचू।
(श्री गुर नानक प्रकाश)

भाई संतोख सिंघ ने वर्णन करते हुए लिखा है कि लोगों में यह जानकर उत्सुकता बढ़ गई और बड़े-छोटे, ऊंचे-नीचे सभी उससे मिलने इस लिए आए क्योंकि वह बहुत साल बाद गुरु नानक साहिब के संग प्रचार यात्रायें करके वापिस आये थे। वे लोगों के कौतुहल का विषय बन गए थे कि उनमें क्या परिवर्तन आया होगा। मिलने पर लोगों ने जो महसूस किया वह उन्हें हर्ष से भर देने वाला था कि भाई मरदाना जी का स्वभाव अत्यंत मधुर, शिष्ट और मोहित कर देने वाला हो गया था।

यांते शुभ सुभाइ भा इह को।
सभि नर ते निरमल उर जिह को।
मधुर बचन सभि संग बखानति।
भली रीति करि कै सनमानति।
(श्री गुर नानक प्रकाश)

भाई मरदाना जी को देखने वालों ने यह चर्चा की कि श्री गुरु नानक देव जी के संग और शिक्षा से उनका स्वभाव परिवर्तित हो गया है। अब वे भले स्वभाव वाले हो गये हैं और उनका मन सभी लोगों से अधिक निर्मल हो गया है। वे सभी से प्रेम भरी बातें करते हैं और सभी को उचित सम्मान देते हैं। इसका अर्थ था कि उनका मन विकारों से रहित हो गया है और वे उस अलभ्य सहज अवस्था में आ गये हैं जिसे बड़े बड़े साधक, मुनि भी नहीं प्राप्त कर पाते। भाई संतोख सिंघ

ने इस प्रसंग में आगे लिखा है कि भाई मरदाना जी बस दो घड़ी अपने घर ठहरे और श्री गुरु नानक देव जी के घर की ओर चल पड़े। सालों बाद घर आना और परिवार के लोगों की कुशल क्षेम पूछना उनके संसार से जुड़े होने का प्रतीक था और बस दो घड़ी घर रहकर चल देना, माया-मोह से उदास हो जाने को दर्शाने वाला था। जल में कमल जैसे अलेप रहने की यही तो राह थी जो गुरु साहिबान ने दिखाई थी भाई मरदाना जी ने उस राह को भलीभांति समझ लिया था। गुरु नानक साहिब ने उन्हें अपने घर वालों को उनके बारे में बताने से मना किया था। भाई मरदाना जी जब गुरु साहिब के घर पहुंचे तो माता त्रिपता जी ही घर पर थीं जो उन्हें देख कर भावविहवल हो उठीं और अपने सुपुत्र श्री गुरु नानक देव जी के बारे में पूछने लगीं। गुरु साहिब की आज्ञा का पालन करते हुए भाई मरदाना जी ने कहा कि गुरु साहिब का साथ सुलतानपुर तक ही था। उसके बाद गुरु साहिब कहां गए उन्हें नहीं पता। वहां समय बिताने के बाद भाई मरदाना जी अचानक तेजी से उठे और वहां चल दिये जहां गुरु साहिब विश्राम कर रहे थे। माता त्रिपता जी को संदेह हो गया और वे भाई मरदाना जी का पीछा करते हुए गुरु साहिब तक पहुंच गईं और उनसे मिलकर वात्सल्य भाव से भरपूर हो उठीं। इस घटना को गंभीरता से विचारने के बाद जाना जा सकता है कि भाई मरदाना जी गुरु साहिब और उनके परिवार के मध्य अदृश्य सूत्र की तरह भी थे जिसे वे बड़ी विनम्रता और ईमानदारी से निभाते रहे। भाई मरदाना जी प्रचार यात्राओं में गुरु साहिब और समाज के बीच जुड़ने वाले सूत्र की तरह भी नज़र आये। यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी, जिसके लिए गुरु साहिब ने भाई मरदाना जी पर भरोसा किया और वे इस पर खरे उतरे। उन्होंने अपने को केवल गुरु साहिब के हुक्म के पालन तक सीमित रखा और अपनी मनोभावनाओं पर नियंत्रण बनाये रखने में सफल हुए। वे सालों बाद घर गये फिर भी घर और परिवार का मोह उन्हें बांध नहीं सका। वे गुरु साहिब के घर गये और माता त्रिपता जी की भावविहवलता के बाद भी गुरु साहिब के हुक्म का पालन करते हुए उनके बारे में चुप रहे जो आसान नहीं था।

भाई मरदाना जी के बारे में सबसे प्रसिद्ध बात है कि जब भी गुरु नानक साहिब को बाणी का उच्चारण करना होता वे मरदाना जी को कहते कि मरदानिआ रबाब बजा, बाणी आई है। भाई मरदाना जी गुरु साहिब द्वारा उच्चारित बाणी को कंठस्थ कर लेते और बाद में संगत को वह बाणी रबाब बजाते हुए गाकर सुनाते। इस तरह वे गुरु-घर के पहले कीर्तनिये बने। यह भी ऐतिहासिक साक्ष्य मिलते हैं कि गुरु साहिब भाई मरदाना जी से विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा भी किया करते थे और भाई जी की जिज्ञासाओं को शांत किया करते थे। गुरु साहिब उन्हें ब्रह्म चर्चा के योग्य समझते थे तभी ऐसी स्थितियां बनी थीं। भाई मरदाना जी के गुणों की श्रेष्ठता ही वह कारण था जिसके चलते वे गुरु नानक साहिब के अति प्रिय हो गये थे कि गुरु साहिब के लिए उनकी किसी भी बात से इन्कार करना कठिन हो जाता था।

कहयो न मेटहि तव मरदाने।
चलहु दिखावहि चाहि जि थाने।

(श्री गुर नानक प्रकाश)

कई बार गुरु साहिब स्वयं भाई मरदाना जी के मन की इच्छायें पूरी करते और कई बार वे उन्हें अपनी कामनायें स्वयं पूरी करने की राह दिखाते।

तुझहि बिलोकन चाहि जरूरे।
गाउ सबदु प्रभु के गुन रूरे।
करति साभिनि की आशा पूरन।

ले रबाब गावहु अब तूरन।

(श्री गुर नानक प्रकाश)

यह तो गुरु साहिब की महानता थी कि उन्होंने कितने लोगों का उद्धार कर दिया तो भाई मरदाना जी कैसे न जीवन मुक्त होते और गुरु-ज्ञान से अपने अंतर को पावन कर पाते। गुरु साहिब तो भाई मरदाना जी पर आरंभ से ही कृपालु थे और स्वयं उन्हें अपने साथ के लिए तैयार किया था।

जा आपि क्रिपालु होवै हरि सुआमी ता आपणां नाउ हरि आपि जपावै ॥
आपे सतिगुरु मेलि सुखु देवै आपणां सेवकु आपि हरि भावै ॥ (पन्ना ५५५)

गुरु नानक साहिब ने स्वयं भाई मरदाना जी को नाम जपाया, प्रभु मिलन की राह दिखाई और उन पर अपने स्नेह की वर्षा की।

भाई मरदाना जी का आहार प्रभु का ज्ञान, स्तुति और भय का था। उन्हें सच के भोजन की चाह थी जिसे वे अपने जीवन का आधार बनाना चाहते थे। जीवन के अंतिम समय तक वह गुरु जी के साथ रहे। उनका अंतिम संस्कार गुरु साहिब ने स्वयं किया और उनके पुत्र को अपना अगला रबाबी बनाया। यह भाई मरदाना जी के परिवार के लिए बड़े सम्मान की बात थी। भाई मरदाना जी बड़े भाग्यशाली थे कि श्री गुरु नानक देव जी ने स्वयं उन्हें सच के भोजन से तृप्त किया और जीवन संवार दिया।

फार्म-४, नियम-८

१.	प्रकाशित करने का स्थान	:	कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
२.	प्रकाशित करने का समय	:	प्रत्येक माह की पहली तारीख
३.	मुद्रक का नाम	:	स. दिलजीत सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
४.	प्रकाशक का नाम	:	स. दिलजीत सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
५.	संपादक का नाम	:	स. सिमरजीत सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	संपादक, गुरमति ज्ञान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
६.	मालिक	:	शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर

मैं सिमरजीत सिंघ घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी अनुसार पूर्णत: सही है।

तारीख-०१/०३/२०१६

हस्ताक्षर/-
(सिमरजीत सिंघ)
संपादक, गुरमति ज्ञान।

भाई जै सिंघ खलकट
जिन सिंघों ने उल्टी खाल उतरवाई

-प्रो किरपाल सिंघ बडूंगर*

सिक्ख इतिहास दुनिया की सभी कौमों, धर्मों व देशों के लोगों के इतिहास से विलक्षण, आश्चर्यजनक, ला-मिसाल और हैरतअंगेज़ है। गुरु साहिबान, गुरसिक्ख योद्धाओं, स्वाभिमानी शूरवीरों, महान वीरांगनायों, कुर्बानी के मुजस्मों महान और आलौकिक शहीद सिंघों, सिंघनियों और बच्चों के आयु में सम्पूर्ण कौमों से छोटी परंतु मानवीय बुद्धि को हैरान कर देने वाले बे-मिसाल कारनामों के कारण उच्चतम और गौरवमयी इतिहास है। जिसके महत्त्वपूर्ण पहलुओं को प्रत्येक गुरसिक्ख सुबह-शाम अरदास के दौरान स्मरण करता है और उन महान शहीदों का ध्यान धरता है। गुरमति विचारधारा *'अपना बिगारि बिरांना साढै'* हक-सच के लिए धर्म युद्ध करने, परोपकारी, त्याग और कुर्बानी की महान फ़िलासफी है। श्री गुरु नानक देव जी ने मानवता में हो रहे अधर्म, ज़बर, जुल्म, धक्केशाही, अत्याचार, बे-इन्साफी और अंधी लूटमार के विरुद्ध जूझने के लिए ऐसे प्रेरित किया :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥ (पन्ना १४१२)

इस मार्ग के पथिक के लिए पातशाह ने शर्त यह रखी:

इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

इस विचारधारा को लोगों के समक्ष अमली रूप में प्रकट करने हेतु श्री गुरु नानक देव जी ने बाबरी ज़बर, जुल्म, अत्याचार, बे-इन्साफी, लूटमार और राजसी धक्केशाही के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। बाबर को जाबिर कहा। भारत पर उसके हमले का डटकर विरोध किया। ऐमनाबाद के कत्लेआम की कड़ी आलोचना करते हुए मुगलों को जम कहा और परमात्मा को शिकायत की। गुरु जी ने पावन फरमान किया है :

आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥
एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥
(पन्ना ३६०)

बाबर की जेलें काटीं, चक्की पीसी। इसी तरह कर श्री गुरु नानक देव जी ने लोगों को *"भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥"* का रास्ता दृढ़ करवाया। इस तरह श्री गुरु अरजन देव जी ने गर्म तवी पर बैठ *"तेरा कीआ मीठा लागै ॥ हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥"* सिमरन करते करते *"तपति माहि ठाढि वरताई"* का भाणा बरताया और अडोल-चित रहते हुए शहीदी प्राप्त की। दूसरों के धर्म को बचाने हेतु श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने दुनिया में एक अद्भुत मिसाल कायम की। *"तिलक जंञू राखा प्रभ ताका ॥ कीनो बडो कलू महि साका ॥"* जबकि तिलक-जंञू को तो श्री गुरु नानक देव जी ने मानयता ही नहीं दी थी। परंतु किसी को धर्म के आधार पर यातनाएं देना, ज्यादती करना, ज़ोर-ज़बरन धर्म-परिवर्तन करवाना और कत्लेआम करना प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध था, जिस कारण गुरु साहिब ने डटकर विरोध किया और

**भूतपूर्व अध्यक्ष,शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर। फोन: +९१९९१५८-०५१००*

शांत चित शहीदी प्राप्त की और हिंदू धर्म की रक्षा हेतु अपना महान बलिदान दे दिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो अपना सरवंश ही कुर्बान कर दिया। इसके बाद सिंघों, सिंघनियों और बच्चों की अनेक शहीदियां हुईं जिनको पूरी श्रद्धा, सम्मान और नम्रता सहित प्रतिदिन दोनों वक्त अरदास में एक मन, एक चित होकर स्मरण करते हैं, इस निबंध में भाई जै सिंघ गांव बारन, ज़िला पटियाला के बारे में विचार कर रहे हैं।

दुनिया के इतिहास में चार ऐसे शहीद हुए हैं, जिनको समय की सरकारों ने उल्टी खाल (चमड़ी) उतारकर शहीद किया। पहला शहीद शमस तबरेज़ जिसका पूरा नाम मखदूम शाह शमसुदीन था। यह गज़नी के क्षेत्र सबज़ार के निवासी थे। यहां से यह तब से भारत के शहर मुलतान में बस गए। यह सूफी फकीर भजन बंदगी करने वाले थे। मज़हबी मौलानों ने मुलतान के हाकिम को शिकायत कर दी कि शमसुदीन 'अन्न अल्ल हक्क' कहते हैं, जिस कारण समय के हाकिम के हुक्म से इनकी उल्टी खाल उतरवाकर शहीद कर दिया। दूसरे शहीद शमसुदीन मुहम्मद हुए हैं जो तरबेज़ के निवासी थे। यह खुदा-प्रस्त संत थे। कहा जाता है कि एक दिन इन्होंने करामात द्वारा एक मुर्दे को आदेश कर खड़ा कर दिया और मुर्दा ज़िंदा हो गया। इस अपराध के कारण समय के हाकिम अलाउदीन मुहम्मद ने इनकी उल्टी खाल उतारने का हुक्म दिया। हुक्म की तामील करते हुए उल्टी खाल उतारकर इनको कुएं में फेंक दिया गया। प्रसिद्ध कवि मौलाना रूमी इसी संत का शागिर्द था।

(महान कोश, पन्ना १५८)

तीसरा महान शहीद भाई गुलज़ार सिंघ हुआ है, जिनको भाई मनी सिंघ जी की शहीदी के उपरांत अन्य कई सिंघों सहित आषाढ़ सुदी पंचमी सत्रह सौ इक्यानवे (१७९१) को उल्टी खाल उतारकर शहीद किया गया। इन शहीदियों के बारे में इस तरह ब्यान किया गया है :

पहिले मनी सिंघ के ताईं, काज़ी फतवा दीए सुणाई।
तिसे गैरम जलादि आइ, बंद बंद दीए जुदा कराए।
पीछे सिंघ गुलजारे केरी, पुठी खल्ल लाही बिन देरी।

चौथे लासानी शहीद हुए थे भाई जै सिंघ जी, निवासी गांव बारन नज़दीक ज़िला पटियाला। इस गांव का नाम उस समय मुगलमाजरा था। यहां अधिक रिहायश मुगलों अर्थात् मुसलमानों की थी। कुछ घर रामदासिए सिंघों के थे और भाई जै सिंघ का सम्बंध भी गुरसिक्ख रामदासिया परिवार के साथ था। आपका सम्पूर्ण परिवार अमृतधारी पूर्ण गुरसिक्ख, परिश्रमी परिवार था। भाई जै सिंघ ने परिवार सहित शहीदी देकर सिक्खी-सिदक, दृढ़ता और अडोलता दर्शाते हुए कथनी एवं करनी के पूरे होने का सबूत दिया। एक कवि ने इसके बारे में ऐसे ब्यान किया है :

धंन उन सिंघन के जिन कर साका तजे परान।
रहे नाम इस करम का है जग्ग आवन जान।
शहीद जै सिंघ खलकट हुए वोह हैं महां महान।

महान शहीदी देकर भाई जै सिंघ जी ने धर्म पर पूरा पहरा दिया और भक्त कबीर जी के महान उपदेश को जगत के समक्ष वास्तव रूप में निभाया। भक्त कबीर जी का पावन फरमान है :

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥
(पन्ना ११०५)

भाई जै सिंघ जी के पिता जी ने दशमेश

पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अमृत पान किया था। भाई जै सिंघ भी बचपन से ही अपने पिता जी के साथ श्री अनंदपुर साहिब जाते थे। भाई जै सिंघ गुरमति के धारणी, गुरु-घर के प्रति समर्पित, गुरबाणी के रंग में रंगे, रहितवान अमृतधारी पूर्ण गुरसिक्ख थे। आप सच्ची-सुची किरत कर गुरु-घर के लिए दसवंध निकालते अपने परिवार का निर्वाह करते थे। भाई साहिब के दो पुत्र थे-- भाई कड़ाका सिंघ और भाई खड़क सिंघ। आपकी धर्म पत्नी का नाम बीबी धंन कौर था। भाई जै सिंघ को दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की संगत का सौभाग्य प्राप्त होता रहा था, उन्होंने अपने दोनों सुपुत्रों को दशमेश पिता जी के बारे में कथाएं सुनाकर दोनों के भीतर पूर्ण खालसाई जोश और जज़्बा भर दिया था। दोनों ही अमृतधारी, नित्तनेमी, आचार-व्यवहार और विचार में परिपक्व रहितवान खालसे थे। दशम पातशाह का पावन फरमान *"इन गरीब सिखन कउ देऊं पातशाही ॥ यह याद करें हमरी गुरिआई ॥"* दोनों पुत्रों को सुनाकर उनके अंदर नित्य नया जोश, जज़्बा, गुरु में विश्वास और दृढ़ता भरते।

दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह रंगीले की मृत्यु और वज़ीर करम दीन के मारे जाने की ख़बर सुनते ही अहमद शाह अब्दाली ने अफगानिस्तान से दिल्ली के तख़्त पर कब्ज़ा करने के इरादे से गिलजियों, गाज़ियों और जहादियों की फौज़ लेकर सन् १७५३ ई में भारत पर दूसरा हमला कर दिया। इसी तरह पहले लाहौर और फिर सरहिंद पर कब्ज़ा कर लिया। अब्दाली ने अपने जरनैल अब्दुस समुद ख़ान को सरहिंद का फौजदार नियुक्त कर दिया। अब्दुस समुद ख़ान बहुत जनूनी, ज़ालिम और निर्दयी हाकिम था। इसकी ज़ालिमाना करतूतों और राजसीय अत्याचार से तंग आकर बहुत-से हिंदू सरहिंद छोड़कर दूरस्थ जा बसे। सिक्खों को भी इसने अपने जुल्म का निशाना बनाया। उपरांत यह ज़ालिम सरहिंद का सूबेदार बन गया। चेत सुदी दसवीं सन् १७५३ ई को यह अपने कोतवाल निज़ामउदीन को साथ लेकर हिंदुओं और सिक्खों की कत्लोगारत करता हुआ मुगलमाजरा गांव पहुंच गया। अस्थायी कचहरी लगा ली और हुक्म किया कि अगर गांव में कोई सिक्ख हो तो उसको सूबेदार की कचहरी में पेश किया जाए। भाई जै सिंघ अपने खेतों में अपने कार्य में व्यस्त थे। पठान सिपाहियों ने भाई साहिब को पकड़कर सूबेदार के सामने पेश कर दिया। अब्दुस समुद ख़ान अमृतधारी सिंघ को देखकर खिल खिलाकर हंसा और फिर पूरे रोहब और क्रोध में कड़का कि हम तेरे पास से चलकर आए हैं तो तूने हमें सलाम क्यों नहीं किया? भाई साहिब ने उत्तर दिया कि उनको तो फौज के गुज़रने का पता ही नहीं चला क्योंकि वो तो अपनी किरत के साथ-साथ बाणी पढ़ने में लीन थे। भाई साहिब ने कहा कि जब कोई सिक्ख एक मन, एक चित होकर अपने गुरु के चरणों में जुड़ता है तो उसको अपने इर्द-गिर्द की सोझी (समझ) नहीं रहती। इस पर सूबेदार ने हकूमती अहं में कहा कि अच्छा मैं पटियाले जाकर तुम्हारी तेरे गुरु चरणों में जुड़ी वृत्ति देखूंगा और तुझे परिवार सहित सज़ा दूंगा। पहले तू मेरा ये थोड़ा-सा सामान सिर पर उठाकर पटियाले पहुंचा। उन दिनों यातायात व सामान ढोने के साधन इस तरह के ही होते थे। कोतवाल निज़ामउदीन को हुक्म की तामील करवाने का आदेश हुआ। भाई जै सिंघ ने पूछा कि पहले यह बताओ कि इस सामान में क्या है? उन्होंने कहा कि मैं एक अमृतधारी सिक्ख हूं,

ऐसा न हो कि कोई एतराज़ योग्य सामान सिर पर उठाने से मेरे धर्म को आंच आए। कोतवाल भाई साहिब का जवाब सुनकर कपड़ों से बाहर हो गया। आग बबूला और लाल-पीला होकर कहा, तुझे यह पूछने का अधिकार नहीं है। भाई साहिब के जिद्द करने पर कोतवाल ने बताया कि इसमें सूबेदार का हुक्का है। भाई साहिब ने पूरी सहजता परंतु दृढ़ता से कहा कि जिन केशों में दशम पातशाह का अमृत पड़ा हो, उन पर मैं हुक्का नहीं रखूंगा। जवाब सुनकर कोतवाल आक्रोश में आ गया और उसने हुक्म दिया कि चाबुक मार-मारकर इसकी चमड़ी उधेड़ दो। ज़ालिम सिपाहियों ने भाई साहिब को लिटा लिया और चाबुक मार-मारकर उनका शरीर लहू-लुहान कर दिया। सूबेदार ने फिर भाई साहिब को कहा कि वो हुक्का उठाने को मान जाए नहीं तो कत्ल कर दिया जाएगा। भाई साहिब को मृत्यु का भय नहीं था। उनको अपने गुरु का उपदेश दृढ़ था। गुरु साहिब का पावन फरमान है :

मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि परवाणो ॥
सूरे सेई आगै आखीअहि दरगह पावहि साची माणो ॥ (पन्ना ५७९)

भाई साहिब ने पूरी दृढ़ता से जवाब दिया कि उसने अपना तन, मन व धन सब कुछ गुरु को अर्पित किया हुआ है तथा गुरु के हुक्म पर चलने का आहिद किया हुआ है और वह गुरु के हुक्म का उल्लंघन नहीं कर सकता। भाई साहिब के बोल थे, "मेरे प्राणों की गुरु के हुक्म के बराबर कोई अहमियत नहीं है।" धन्य गुरु की सिक्खी। भाई साहिब ने बताया कि गुरु का उपदेश है :

कुट्ठा, हुक्का, चरस, तंबाकू, गांजा, टोपी, ताड़ी, खाकू।
इन की ओर न कबहूं देखे, रहितवंत सो सिंघ वसेखे।

फिर सूबेदार ने पैंतरा बदलते हुए कहा कि सिक्खी में क्या रखा पड़ा है ? जान न गंवा, हम तुझे राजसी शक्ति एवं धन-दौलत से मालामाल कर देंगे यदि तू दीन मुहम्मदी कबूल कर लें। तुझे मृत्यु के उपरांत भी जन्नत मिलेगी, जहां परियां मिलेंगी तथा सदा बहशत में ही रहेगा। परंतु भाई साहिब के सामने भक्त कबीर जी का उपदेश था :

कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा संतन दोऊ रादे ॥ (पन्ना ९६९)

भाई साहिब ने बीच में ही रोककर कहा अगर दीन मुहम्मदी कबूल करने के उपरांत मृत्यु नहीं आती तो मैं सोच सकता हूं परंतु जब हर धर्म में मृत्यु अटल है। मृत्यु का समय, स्थान व कारण निश्चित है। गुर वाक्य है *"मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥"* तो फिर मैं अपने गुरु से बेमुख क्यों हो जाऊं? भाई साहिब ने कड़ा जवाब दिया। भाई साहिब अरदास में लीन हो गए, हे सच्चे पातशाह! मुझ पर मेहर करो कि मैं सिक्खी केशों-स्वासों के संग निभा सकूं। भक्त कबीर जी का पावन फरमान है कि *"मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ॥"* भाई साहिब दृढ़ एवं अडोल थे। प्रत्येक गुरसिक्ख के समक्ष गुरु उपदेश है :

पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥ (पन्ना ११०२)

सूबेदार ने बहुत लालच व बहकावे दिए किंतु भाई साहिब दृढ़ तथा अडोल रहे। अंतत: सूबेदार ने हुक्म दिया कि शमसुदीन मुहम्मद तबरेज़ की तरह इसको उल्टा लटकाकर उल्टी खाल उतारकर

कत्ल कर दो। भाई साहिब ने हंसकर कहा, 'इससे अच्छा समय मेरे लिए क्या होगा कि मैं अपने गुरु के दर्शाए मार्ग पर चलते हुए गुरु चरणों में जा विराजमान हो जाउं।' जल्दी करें! जिन गुरु-साहिब ने अपना दादा, पिता, माता, प्राणों से प्यारे सिंघ तथा अपने लखते-जिग्र बाबा अजीत सिंघ, बाबा जुझार सिंघ चमकौर की गढ़ी में, बाबा ज़ोरावर सिंघ तथा बाबा फ़तहि सिंघ सरहिंद की दीवार में चिनवाकर शहीद करवा लिए; मैं तो उस गुरु का अदना-सा सिक्ख हूं, मेरे प्राण और मेरी काया उस गुरु जी की अमानत है। प्रसिद्ध कवि स. विधाता सिंघ तीर ने इस घटना को इस प्रकार ब्यान किया है :

दीन मंन, फेर वी अंत मरना, फेर किउं होईए धरमहीन शाहा!
तूं तां ज़ालम दे घोड़े सवार होइओं, उत्ते सुट्ट के पाप दी ज़ीन शाहा!
साडी अक्ख दे विच ना चीज़ कोई, इह जो ज़र, ज़ोरू, ज़मीन शाहा!
मौत दा मूल न भैअ रिहा, हुन्दें मौत 'ते नहीं गमगीन शाहा।

जब सूबेदार ने देखा कि सिंघ डोलता ही नहीं तथा दृढ़ संकल्प है, उसने हुक्म दिया कि मुगल माजरा गांव में से दो कसाई मंगवाकर गांव के बड़ व पीपल के मध्य भाई जै सिंघ को उल्टा लटकाकर पांव के अंगूठे से लेकर सिर तक (उल्टी खाल) चमड़ी उतार दो। इसी तरह ही किया गया। धन्य गुरसिक्ख और धन्य गुरु पातशाह! सिंघ अडोल रहा, उफ़ तक न की, खुशी-खुशी से शहीदी जाम पी लिया। शरीर ठंडा हो गया और सुरती गुरु चरणों में जा विराजमान हुई। भाई साहिब की शहीदी चेत सुदी दसवीं संवत् १८१० को हुई। इसके बाद भाई साहिब का सारा परिवार भी शहीद कर दिया गया। किसी कवि ने ऐसे लासानी शूरवीर सिंघों के बारे में इस तरह ब्यान किया है :

जुग जुग जिउंदे ने उह बंदे, अणख लई जो मरदे।
सूली, चरखड़ी, फांसी चढ़ वी, खिड़ खिड़ पए ने हस्सदे।
आपणा मुरशद मनावण खातर, भेट सिरां दी करदे।

तथा गुरु वाक्य है :

सतिगुर आगै सीसु भेट देउ जे सतिगुर साचे भावै ॥
आपे दइआ करहु प्रभ दाते नानक अंकि समावै ॥
(पन्ना १११४)

सूबेदार दुनिया का सबसे घिनौना जुल्म करके पटियाला की ओर रवाना हो गया। बाद में सारे गांव के लोगों ने एकत्र होकर शहीदों का अंतिम संस्कार किया। जहां उनकी याद में यादगार बनाई गई उपरांत गुरुद्वारा साहिब का निर्माण किया गया, जहां प्रत्येक वर्ष शहीदों की याद में जोड़मेला लगता है और अनेक संगत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में नतमस्तक होकर शहीदों को अपनी श्रद्धा-सत्कार भेंट करती है।

गत दिनों शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष, स. अवतार सिंघ जी द्वारा शहीद जै सिंघ खलकट का चित्र भी केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय, श्री अमृतसर में लगाया गया है। ऐसे शहीदों के स्थान महान पावन स्थान होते हैं। किसी शायर ने खूब लिखा है :

शहीदों की कत्लगाह से, किया बेहतर है काबा,
शहीदों की ख़ाक पे तो खुदा भी कुर्बान होता है।

खेड़ी नौध सिंह के सिक्ख सरदार

*-सिमरजीत सिंघ**

खेड़ी नौध सिंघ गांव, ज़िला फ़तहिगढ़ साहिब कि ब्लाक खमाणो की तहसील खमाणो में खन्ना-संघोल-मोरिंडा सड़क पर स्थित है। रेलवे स्टेशन खन्ना, इस गांव से ११ किलोमीटर दूर है। खेड़ी नौध सिंघ के सिक्ख-सरदारों की पृष्ठभूमि पर दृष्टि डालें तो मालूम होता है कि यह ख़ानदान देग-तेग का धनी था। इनके पूर्वज़ों में चौधरी बाहलो जी का नाम आता है। यह परिवार पहले माझा के नगर अजनाला का निवासी था। यह माझे की प्रसिद्ध रियासत पट्टी के इलाका सरहाली के चौधरी थे। चौधरी बाहलो जी के घर बघेला जी का जन्म हुआ। बघेला जी के घर पुत्र मताब जी का जन्म हुआ जिसको जेठू जी भी कहा जाता था। मताब जी के घर पांच पुत्र-- सुरतीआ, रसीआ, मेहरा, मल्ला एवं भागा ने जन्म लिया। इस सम्बंध में भट्ट वही श्री रघुनंदन मनोहर लाल बेटा पंडित देवी चंद पहोआ में दर्ज है कि:

"ठट्टीआं दे निझर अजनालीए रहे खेड़ी नौध सिंघ रहे थनेसर। सुरतीआ, रसीआ, मेहरा, मला, भागा, जेठू के बेटे बघेले सिंघ के पोते बहिलो के पड़पौते . . . सुरतीआ आइआ ठटीआ तों पहेवे . . . ।"

मेहर सिंघ (मेहरे) के घर पांच पुत्र पैदा हुए-- इंदर सिंघ, चंदा सिंघ, मितर सिंघ, भीम सिंघ तथा मित सिंघ। इनमें से स. मित सिंघ अपने भाइयों में से छोटा था। स. मित सिंघ इतिहास में अकाली मित सिंघ के दंगई नाम से प्रसिद्ध हुआ। अकाली मित सिंघ का जन्म अजनाला नगर में १७१५ ई को माता बिशन कौर (बिछौ) की कोख से पिता स. मेहर सिंघ जी के घर हुआ। इसके बारे में अहिलवाल मुतलका ख़ानदान सरदारान खेड़ी नौध सिंघ औ थनेसर में दर्ज है कि:

"मेहर सिंघ वलद मताब सिंघ जट्ट गोत निझर साकन अजनाला तहिसील वा ज़िला अंम्रितसर पांच बेटे हसब जैल हुए। इंदर सिंघ, चंदा सिंघ, मितर सिंघ, भीम सिंघ, मित सिंघ . .।"

अकाली मित सिंघ ने शादी नहीं थी करवाई तथा अपना सारा जीवन सिक्खी की चढ़दी कला के लिए जंगों-युद्धों में दुष्टों को सोधने हेतु अर्पण करने का प्रण कर लिया था। उसने हर युद्ध में बढ़-चढ़कर योगदान डाला, जिस कारण सारा सिक्ख पंथ आपको दंगई के नाम से जानने लग गया था। स. मेहर सिंघ के पांच पुत्रों में से सिर्फ स. इंदर सिंघ ने शादी करवाई, जिसके घर दो पुत्र स. जोध सिंघ तथा स. नौध सिंघ पैदा हुए।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद सिक्खों पर सख़्तियों का दौर शुरू हो गया। बादशाह फरुखसियर ने अपने अहिलकारों को फरमान जारी किया कि: "जो भी सिक्ख काबू आए, उसको बिना किसी कारण के कत्ल कर दिया जाए। जो सिक्ख इस्लाम धर्म धारण कर ले, उसकी जान बख़्श दी जाए। सब हिन्दू केश, दाड़ी कटवा लें अगर कोई कटवाने से इन्कार करे, उसको सिक्ख समझकर कत्ल कर दिया जाए। अगर कोई सिक्खों की किसी किस्म की मदद करे,

**संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।*

उसको मृत्यु की सज़ा दी जाए। अगर कोई किसी सिक्ख को गिरफ्तार करवाए अथवा उसके बारे में बताए या कत्ल कर सिक्ख का सिर पेश करे, उसे उचित ईनाम दिया जाए।" इस एलान की आड़ में हज़ारों निर्दोष सिक्खों का कत्लेआम शुरू हो गया। सिक्ख अपने परिवारों सहित जंगलों में जा छिपे। कुछ समय के बाद सय्यदों ने बगावत कर दी। बादशाह फरुखसियर बगावत दबाने में लग गया। इस बगावत में सय्यदों ने फरुखसियर का कत्ल कर दिया। इस समय के दौरान सिक्खों को सरकार द्वारा अनदेखा किया गया। वो जंगलों, पहाड़ों से निकलकर मैदान में आए और गुरु-घरों की सेवा-संभाल की ओर ध्यान देने लगे। १७८१ बिक्रमी की वैसाखी वाले दिन सिक्खों ने श्री अमृतसर में खुले तौर पर भारी इकट्ठ किया। यह समय ज्यादा देर तक न रहा, अब्दुस समद खां ने सिक्खों पर फिर से सख़्ती करनी शुरू कर दी। सिक्खों ने फिर से जंगलों, पहाड़ों की ओर रुख किया। परंतु जब भी थोड़ी बहुत ढील मिलती वो मैदानों में आ बसते। इस समय के दौरान ही शाही फौज ने भाई तारा सिंघ वां के डेरे पर आक्रमण करके उनको शहीद कर दिया। इस घटना के बाद सिक्खों ने शाही सेना पर छिपकर हमले करने शुरू कर दिए। इनकी नित्यप्रति झड़पों से तंग आकर लाहौर के सूबेदार व दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह ने सिंघों को शांत करने के लिए एक लाख की जागीर तथा स. कपूर सिंघ फैज़लपुरिए को नवाबी का ख़िताब दिया। नवाब कपूर सिंघ की जत्थेदारी तले सिंघों की संख्या काफी बढ़ गई। इस लिए उनके प्रबंध को सही ढंग से चलाने हेतु खालसा पंथ ने दो दल बुड्ढा दल व तरुणा दल बना दिए। बुड्ढा दल नवाब कपूर सिंघ की जत्थेदारी तले श्री अकाल तख़्त साहिब के प्रबंध की देखरेख करता रहा तथा तरुणा दल आगे पांच जत्थों में विभक्त कर दिया। तरुणा दल के जत्थे बाहर दौरे करने चले गए। पीछे से सरकार ने सिंघों की जागीर ज़ब्त करके पुन: सख़्ती शुरू कर दी। इस समय के दौरान नादर शाह दुर्रानी ने हिन्दोस्तान पर हमला करके लूटमार शुरू कर दी। पंजाब में हकूमत का बुरा हाल हो गया। समय का फायदा उठाते हुए सिंघों ने फिर से अपने पांव जमा लिए। सिंघों को जैसे जैसे सरकार दबाने की कोशिश करती, सिंघ पहले से भी बढ़ते जाते। १७४५ ई में दल खालसा को ३० जत्थों में बांटकर हर जत्थे का सरदार नियुक्त कर दिया गया। ये जत्थे अपने-अपने जत्थेदारों के दिए निर्देशों के अनुसार ज़ालिमों से जूझते रहे।

जकरिया ख़ान की मृत्यु के बाद उसके पुत्र यहीआ ख़ान ने सिक्खों पर अत्याचार और तेज कर दिए। उसने १७४६ ई में भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ियों पर चढ़ाकर शहीद कर दिया।

सिक्खों के एक जत्थे ने लाहौर में मोची दरवाज़े की तरफ से दाख़िल होकर अपने अस्तित्व का प्रकटावा किया। शाही सेना ने सिक्खों का पीछा किया। सिक्ख रावी के किनारे जंगलों में चले गए। यहीआ ख़ान ने सिक्खों पर जुल्म करने की हद ही मुका दी। हर रोज़ सैकड़ों सिक्ख शहीद किए जाने लगे। इस कार्य में लखपत राए जो यहीआ ख़ान का मंत्री था बढ़-चढ़कर हिस्सा डाल रहा था। लखपत राए का भाई जसपत राए ऐमनाबाद का फौजदार था। उसने गुरुद्वारा रोड़ी साहिब के समीप ठहरे हुए सिक्खों पर अचानक आक्रमण कर दिया। लड़ाई के दौरान जसपत राए सिक्खों के हाथों मारा गया। जब अपने भाई की मृत्यु का पता लखपत राए को चला तो उसने सिंघों का नामो-निशान मिटाने की ठान ली। उस समय लगभग १५००० सिक्ख काहनूंवान के इर्द-गिर्द घने जंगलों में पनाह लिए बैठे थे। लखपत राए

के पास भारी सेना एवं तोपखाना था। उसने पहाड़ी राजाओं की फौज को भी अपने साथ मिला लिया था। शाही सेना ने जंगल की झाड़ियों को आग लगा दी। सिंघ रावी दरिया को पार करके रावी के किनारे बसौली की पहाड़ियों की ओर बढ़ने लगे। सिंघों के लिए बहुत भयानक स्थिति बनी हुई थी। वो पत्थरों व गोलियों की मार तले आगे बढ़ते जा रहे थे। इस युद्ध में हज़ारों सिंघ शहादत प्राप्त कर गए। शाही सेना का भी भारी नुकसान हुआ। इस छोटे घल्लूघारे में अकाली मित सिंघ के तीन भाई-- इंदर सिंघ, मितर सिंघ, भीम सिंघ और इनका ताऊ स. सूरत सिंघ कठूहा के मुकाम पर ज़ालिमों से जूझते हुए शहीदियां प्राप्त कर गए। इस समय स. जोध सिंघ और स. नौध सिंघ अभी छोटी आयु में ही थे। इसके बारे में अहिवाल निगरा (निझर) सरदारान थनेसर औ खेड़ी नौध सिंघ में दर्ज है कि:

"स. इंदर सिंघ की औरत मुसमांआत सरदारनी हीरो के अज़शिकम के पिसर मुसमीं जोध सिंघ नौध सिंघ पैदा हुए। स. इंदर सिंघ हमराह चाचा सूरत सिंघ और मितर सिंघ भीम सिंघ बरादर हकीकी कठूहा की लड़ाई में मारा गिआ, बाद वफ़ात स. इंदर सिंघ मुसमांआत सरदारनी हीरो को स. चंदा सिंघ अजरूए चादर अंदाज़ी ब-जोजत में लाया था। मुसमांआत सरदारनी हीरो के अज़शिकम मुसमी ओध सिंघ भाग सिंघ पिसर पैदा हुए।"

छोटे घल्लूघारे से दो वर्ष बाद सिक्ख सरदारों ने श्री अमृतसर में मार्च, १७४८ ई में एक एकत्रता की। इस एकत्रता में पंथ के अहम मामलों पर विचार कर सिक्ख जत्थों की संख्या २५ से बढाकर ६५ कर दी गई। इनमें से एक जत्था चौधरी बघेल सिंघ के पुत्र नवाब कपूर सिंघ जी ने १२ मिसलों में बांट दिया। इन १२ मिसलों का मुखी जत्थेदार स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को स्थापित किया गया। स. मताब सिंघ अजनालिए का जत्था डल्लेवालिया मिसल में शामिल होकर हमेशा के लिए उसका अंग बन गया।

डल्लेवालिया मिसल का जत्थेदार स. गुलाब सिंघ को चुना गया तथा साथ ही इस मिसल के नायब जत्थेदार स. मताब सिंघ अजानालिए को चुना गया।

अहमद शाह अब्दाली ने अपना चौथा हमला नवंबर, १७५६ ई में किया। अकाली मित सिंघ ने अपने दादा स. मताब सिंघ के साथ मिलकर अहमद शाह अब्दाली के हमलों का मुकाबला किया था। इस हमले के दौरान उसने ज़िला गुजरांवाल के गांव सोहरदा से चार मील दूर चिनाब के किनारे दबुर्जी के मुकाम पर लड़ाई लड़ी। इस लड़ाई में स. मताब सिंघ की बाईं बाजू उसकी ढाल समेत काटी गई थी। इनको बचाता बचाता इनका बहादुर पुत्र स. रौशन सिंघ भी अफगानों के हाथों शहीदी प्राप्त कर गया था। स. मताब सिंघ जी वृद्ध आयु व विकलांग होने के कारण उनकी जगह पर स. मेहर सिंघ जी को डल्लेवालिया मिसल का नायब जत्थेदार स्थापित किया गया।

३० अक्तूबर, १७५८ ई को स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने सारी मिसलों को अपनी अपनी हिफ़ाजत के लिए इलाकों में काबिज़ होने का एलान किया, इस समय डल्लेवालिया मिसल के नायब जत्थेदार स. मेहर सिंघ के हिस्से खेड़ी सय्यदां तथा थनेसर का क्षेत्र आया।

५ फरवरी, १७६२ ई में अहमदशाह अब्दाली ने सिंघों पर बड़ा हमला कर दिया। यह जंग गांव गुरम से शुरू होकर कुपरुहीड़ा, कुत्बा, बाहमणी, ददा हूर, कालसा, भाई का चक्क आदि गांवों में से होती हुई गहिल गांव के मैदान में पहुंच चुकी थी। इस मौके पर बारह मिसलों के

सारे सिंघ अपने-अपने सरदारों की कमान तले बड़ी बहादुरी से लड़ रहे थे। सिंघों के परिवार भी इस संकट के समय उनके साथ ही थे। सिंघ अपने परिवारों की रक्षा करते हुए जंगलों की ओर बढ़ते हुए दुश्मन का मुकाबला कर रहे थे। अहमदशाह अब्दाली ने सिंघों का ज्यादा से ज्यादा नुकसान करने के लिए कालसा नगर से नजीबूदीन 'दउला' को फौज देकर सिंघों के दल पर हमला करने हेतु भेजा। यह सद्धोवाल से हनूर नगर में से होकर दल को आगे से घेरने में सफल हो गया। सिंघ पहले ही चौकस थे। दोनों तरफ से घमासान युद्ध हुआ। गांव गहिलों से थोड़ी दूर भाईआणा ढाब, जिसको अब सिंघों वाली ढाब कहा जाता है के किनारे फैसलाकुन लड़ाई हुई। थनेसरी रिकार्ड के अनुसार इस मौके पर सिंघों का बहुत भारी जानी नुकसान हुआ। अकाली मित सिंघ के पिता जत्थेदार मेहर सिंघ अपने दो भाइयों-- स. मल्ला सिंघ तथा स. भाग सिंघ सहित सरहिंद के हाकिम जैन ख़ान के साथ लड़ते हुए शहीदी प्राप्त कर गए।

अहमद शाह अब्दाली के वापिस चले जाने के बाद सिक्खों ने अपनी शक्ति को इकट्ठा करके सन् १७६४ ई में स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया की कमान तले सारी मिसलों के सिक्ख सरदारों को साथ लेकर सरहिंद पर हमला कर दिया। खूब लड़ाई हुई। सिंघों ने अफगानों को बुरी तरह पराजित किया। अकाली मित सिंघ उस समय डल्लेवालिया मिसल के सरदार स. तारा सिंघ घेबा (कंग) के साथ थे। इसके बारे में पुस्तक 'The Rajas of Punjab' में ज़िक्र है कि: "The founder of the Thanesar family was Mith singh a jat of sarhali near Mahajha and recived the pahul from Panj Piyars Gurdial singh, (Jatha of Gurdial Singh) who obtained for him the post of Personal attendant (garwa bardar, a servent who carries vessel and drinking water) to Tara singh Gheba.

अकाली मित सिंघ सरहिंद की लड़ाई में बड़ी बहादुरी से लड़े। सिंघों ने सरहिंद के हाकिम जैन ख़ान को मारकर उसका सिर नेजे में पिरोकर स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया के समक्ष पेश किया। शाही सेना को जिधर भी रास्ता मिला भाग खड़ी हुई। इस विजय में सरहिंद रियासत का ३५० किलोमीटर लंबा तथा २५० किलोमीटर चौड़ा क्षेत्र सिंघों के कब्जे तले आ गया। यह उत्तर दिशा में सतलुज तक तथा दक्षिण में करनाल तथा रोहतक ज़िलों तक, पश्चिम में बहावलपुर की रियासत तथा पूरब में जमुना नदी तक फैला हुआ था। इसमें से उस समय सरकार को ६० लाख रुपए वार्षिक आमदन होती थी।

सरहिंद की विजय के पश्चात सिंघों ने अपने क्षेत्रों का विभाजन करके लोगों को सही राज्य देने की इच्छा तले अपनी रियासतें कायम कर लीं। अकाली मित सिंघ ने सरहिंद के क्षेत्र में से खेड़ी सरदारों के गांव तथा थनेसर के ५९ गांव सहित कुल ८० गांवों पर अपनी रियासत कायम की। अकाली मित सिंघ जी ने स. नौध सिंघ को जख़्मी हालत में खेड़ी सय्यदां के समीप गांव सुहवी के निवासी स. गुरबख़्श सिंघ (बड़िंग)* के घर ठहराया। स. गुरबख़्श सिंघ ने इनके लंगर-पानी का प्रबंध किया। अकाली मित सिंघ यहां से खेड़ी पहुंचे तो वहां के गुज्जर गमाशता जिसका नाम माहीआ था, को मालूम पड़ गया। उसने अपने गांव के कुछ अन्य गुज्जरों को साथ लेकर अकाली मित सिंघ जी के पास आकर स. नौध सिंघ जी के आगे

*स. गुरबख़्श सिंघ के परिवार के काफी घर बन गए हैं, जिनमें से बहुत सारे आज भी गांव में आबाद हैं।

उनकी अधीनगी स्वीकार कर ली। इस सम्बंध में अहिवाल मुतलका ख़ानदान सरदारान खेड़ी नौध सिंघ थनेसर में ज़िक्र है कि:

"खेड़ी सयदां में सरहंद के सयदां की तरफ से एक माहीआ नामीं गुजर गमाशता था। जिस की औलाद दुलवां जो खेड़ी का ही एक गिरद नवाही गाउं है अबाद हो गई।"*

"स. मित सिंघ औ नौध सिंघ वगैरा ने लड़ाई में बज़रब गोला तौप जख़्मी हुआ था। स. मित सिंघ इसे जख़्मी की हालत में बाद दोपहर मौजिआ सुहावीआं स. गुरबख़्श सिंघ बड़िंग गोत के हां ठहरा शाम को खेड़ी सयदां में पहुंचा। माहीआ गुमाशता ने घोड़े की बाग पकड़ी और पांव चूमें . . . । स. मित सिंघ ने इलाका में घोड़ा फेरकर इक्कीस गावों पर कब्जा किया। यक्के बाद चीगरे थनेसर काबा के उनाहठ गावों का कब्जा लेकर रियासत कायम की।. ."

स. नौध सिंघ ने खेड़ी सय्यदां में एक छोटा किला बनवाया तथा इसके साथ ही इस गांव का नाम भी खेड़ी सय्यदां से खेड़ी नौध सिंघ पड़ गया।

अहमदशाह अब्दाली ने १७६६ ई में भारत पर अपना नौवां आक्रमण किया। इस बार वो अपनी पूरी तैयारी के साथ आया था, जिस कारण इस बार का आक्रमण उसके पहले आक्रमणों के मुकाबले बहुत भयानक था। भारत में प्रवेश करते ही उसकी मुठभेड़ जगह-जगह पर सिक्ख सरदारों से होनी शुरू हो गई। अहमदशाह अब्दाली ने इस बार अपनी फौज का उत्तार सतलुज दरिया के किनारे माछीवाड़े किया। इसके खास आदमी नजीबुदीन तथा उसके भाई सुलतान ख़ान व अफजल ख़ान आदि ने सिंघों का बहुत ज्यादा जानी व माली नुकसान किया।

थनेसर के रिकार्ड से मालूम पड़ता है कि १८२४ बिक्रमी की वैसाखी से बाद डल्लेवालिया मिसल का सरदार तारा सिंघ घेबा (कंग) तथा अकाली मित सिंघ अपने साथियों सहित मनी माजरे से ६-७ मील की दूरी तथा कालका की पहाड़ियों में ठहरे हुए थे। यहां दुर्रानियों ने अफ़जल ख़ान रुहेले की कमान तले अकाली मित सिंघ के जत्थे पर हल्ला बोल दिया। दोनों तरफ से जब्रदस्त मुठभेड़ हुई। इस घटना का ज़िक्र करते हुए प्रो. हरी राम गुप्ता सिक्ख इतिहास में लिखते हैं कि:

उस (अफज़ल ख़ान रुहेला) को ख़बर मिली कि उन्होंने (सिक्खों) का एक बड़ा जत्था ४० मील पूरब दिशा की ओर मनी माजरे की पहाड़ियों में ठहरा हुआ है। नजीबुदीन तथा अफज़ल ख़ान की कमान तले दुर्रानी सवार उन पर जा पड़े। --- बहुत से मर्द, औरतों को बंदी बनाकर ले आए। परंतु उनका लीडर न पकड़ा गया। लूट का सारा सामान तथा कैदी कैंप में सस्ते भाव बिक गए।

उन दिनों गर्मी का मौसम चल रहा था। अहमदशाह अब्दाली गर्मी से तंग आकर वापिस जाना चाहता था। नजीबुदीन भी रोज़ की मुठभेड़ों के कारण बीमार पड़ गया था, जिसके कारण वो भी वापिस जाने का इच्छुक था।

बीकानेर के राजा ने एक लाख रुपया नकद एवं रसद देना मानकर खालसा फौज को अपनी मदद हेतु न्यौता दिया। स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने रुहेले के सरदारों से बदला लेने का यह अच्छा मौका समझा। उन्होंने अकाली मित सिंघ की कमान तले दस हज़ार सिंघों का जत्था देकर नजीबुदीन दउला को सोधने हेतु भेजा। इस जत्थे में अकाली मित सिंघ से

*****_यह परिवार १९४७ ई में हुई भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय कत्लेआम की भेंट चढ़ गए।_

जत्थेदार अघड़ सिंघ, जत्थेदार करम सिंघ, जत्थेदार करोड़ा सिंघ, जत्थेदार गुरबख़्श सिंघ आदि सिक्ख योद्धा शामिल थे। इस युद्ध में जाने से पहले स. तारा सिंघ घेबा ने इनको शिक्षा दी, इसके बारे में स. रत्न सिंघ भंगू ने पंथ प्रकाश में ज़िक्र किया है कि :

चौपई-- डले वालीए मिसल में इक तारा सिंघ अखवाए।
तिस डेरे मित सिंघ रहे तिन यों मते पकाए ॥१॥
दस हज़ार तिन सिंघ उछेरे।
जमना टप्प लंघ पईए सवेरे।
तारा सिंघ तबै सुन कही।
तूं बेफतू खालसे मही ॥२॥
थोड़े दल सिउं पार ना जयो।
कटाइ सिंघन फिर नठ ना आयो।
उस नहि मानी पार सिधाया।
मुलक रुहेले का सु लुटाया।. . .
दस दिन लग रहे लूटत देस।
मेरठ लूटयो शहिर सु बेस ॥६॥

सरदार तारा सिंघ जी की तरह ही अकाली मित सिंघ जी की माता बिशन कौर जी ने उसको हिदायत की कि उसके साथ जा रहे उसके पांच पोते, बुड्ढे जरनैल बाबा जोध सिंघ जी तथा एक लात से विकलांग बाबा नौध सिंघ हैं। यदि आप सारे शहीदी पा गए तो क्या होगा? अकाली मित सिंघ जी ने जवाब दिया कि इनको मैं नहीं ले जा रहा बल्कि ये तो धर्म-युद्ध के लिए उनसे भी पहले जाने को उत्सुक हैं। अकाली मित सिंघ ने बूड़ीआ नगर से जमुना नदी को पार करके रुहेलों के क्षेत्रों पर हमला कर दिया। अकाली मित सिंघ खालसा फौज के साथ क्षेत्रों पर हमला करके ज़ालिमों को सोधकर विजय प्राप्त करते हुए आगे बढ़ रहे थे। रास्ते में महमूद ख़ान एवं फ़तहि ख़ान की खालसा फौज के साथ टक्कर हो गई। खालसा फौज की तेगों के सामने इनकी एक न चली। खालसा फौज ने इनको बंदी बना लिया। महमूद ख़ान एवं फ़तहि ख़ान ने खालसा फौज से क्षमा मांगी और नज़राना देकर पीछा छुड़ाया। खालसा फौज आगे बीकानेर में प्रवेश कर गयी। यहां की फौज के साथ मिलकर जैसलमेर पर चढ़ाई कर दी। जैसलमेर के राजा ने खालसा का आगमन सुनकर बिना जंग के ही ईन मान ली। खालसा फौज को नज़राना पेश करके विदा किया गया।

यहां से आगे खालसा फौज ने भवानी पर चढ़ाई कर दी तथा फ़तहि हासिल करती हुई आगे की ओर चल पड़ी। यहां ही अंग्रेज जार्ज टॉनसन दार्जन द्वारा ५०० सिपाहियों का उतारा किया गया। खालसा फौज ने इनको पकड़कर एक कोठे में बंद कर दिया। यहां से आगे हांसी पर हमला कर दिया। यहां १७ दिन ठहरने के बाद खालसा फौज जैपुर की ओर रवाना हो गई। जैपुर के राजा जै सिंघ ने सिंघों को पच्चीस हज़ार रुपए तथा पांच घोड़े नज़राने के रूप में पेश किए। यहां से ही राजा जै सिंघ ने सिंघों को श्री गुरु हरिक्रिशन जी द्वारा बख़्शी गुरबाणी की पोथी के दर्शन करवाए। खालसा फौज ने ११०० रुपए इस पोथी को दर्शनी भेंट दी। यहां से ये झज्जर की तरफ रवाना हो गए।

नवाब गाज़ी ख़ान अपने फौजदार नज़ाबत ख़ान तथा बहादुर ख़ान को फौज देकर सिंघों के मुकाबले हेतु भेजा। खालसा फौज के आगे ये जरनैल ज्यादा देर तक टिक न पाए। खालसा यहां से आगे रोहतक, गोहाना, अजीबाबाद पर विजय प्राप्त करता हुआ सरधने के क्षेत्र में पहुंच गया। यहां सिमरू शाह फ्रांसीसी की पत्नी सिमरू बेगम ने सिंघों को मान-सम्मान सहित, नज़राने भेंट किए। यहां से खालसा दल लहारू होता हुआ नजीबुदीन के क्षेत्र में पहुंच गया।

नजीबुदीन सिंघों से डरता हुआ माछीवाड़े अब्दाली के कैंप में पहुंच गया। अब्दाली ने

जहान ख़ान तथा जपता ख़ान को भारी फौज देकर सिंघों का मुकाबला करने हेतु भेजा। ये दोनों २०० मील का रास्ता तय करके शामली एवं कैरनें के मध्य सिंघों के जत्थे पर टूट पड़े। अकाली मित सिंघ ने थोड़े से सिंघों के साथ ही डटकर मुकाबला किया। यह अपनी जंगी चाल के अनुसार दुश्मनों के साथ लड़ता भी जाता तथा पीछे भी हटता जाता ताकि सारा जत्था जमुना पार कर जाए। किंतु इस समय उसके घोड़े पर अचानक गोली लगी और अकाली मित सिंघ का पांव रकाब में फंस गया। इस सम्बंध में पंथ प्रकाश में स. रत्न सिंघ भंगू ने ज़िक्र किया है कि :

सो मुड़ मुड़ लड़ तों जावै।
बहुतन के कब वारो आवै।
लग गोली घोड़ा गिर पयो।
मद्ध रकाबै फस्स गए।

अकाली मित सिंघ का पांव सिंघों ने घोड़े की रकाब में से निकालने की कोशिश की परंतु दूसरी तरफ से दुश्मनों के हमले का ज़ोर बढ़ गया। अफगानी जरनैल जहान ख़ान ने ज़ोरदार हल्ला करके अकाली मित सिंघ का शीश धड़ से अलग कर दिया। सरदारान थनेसर औ खेड़ी नौध सिंघ में दर्ज है कि :

". . . जोध सिंघ नौध सिंघ दोनों बरादर हमरा चाचा मित सिंघ के मेरठ की लड़ाई में लावलद मारे गए।. . .

मित सिंघ बमै चाचा जाद बरादर बलाका सिंघ निहंग औ बरादरान पिसर जोध सिंघ, ओध सिंघ, गुरबख़्श सिंघ बड़िंग गोत का जाट सकनां मौजा सुहावीआ और दी गरमिन जुमला छे हज़ार सिक्खों के मेरठ की लड़ाई में शामली और कैराने के दरमियान फूल के मुकाम पर वफात पाई।"

इस जंग में ६००० के लगभग सिंघ शहीद हो गए। इस जंग में शहीद हुए सिंघों के सिर नजीबुदीन ने कटवाकर १७ बैलगाड़ियों पर लादकर लाहौर को चल दिया। ये बैलगाड़ियां राजपुर एवं अंबाला के मध्य मुगल सराय के आगे घगर सराए के पास पहुंच गईं। जिसका ज़िक्र पंथ प्रकाश में स. रत्न सिंघ भंगू ने किया है कि :

जिन के घोड़े थे बड़े ते आए बहु मार।
लरत भजत, फिर फिर लरत पंज छे मुए हज़ार ॥११॥
चोपई– मुफ्त फते जो काबली आई।
जहान खान फौज दार कहाई।
उन सिर सिंघन के कटवाए।
अठारां गडे नजीबे लदवाए।
दोहरा– जब सिर गडे लंघ तुरे बगर हुती सराइ।
तब सिंघन के दल बडो सुनी अवाई आइ।

ज्ञानी ज्ञान सिंघ द्वारा पंथ प्रकाश में इस घटना का ज़िक्र इस तरह किया है कि :

तांहि तुरकों ने बिच लाए लरे सिंघ बहुतेरे।
बहु सरदार मित सिंघ जहे जूझ मार बधेरे।
मरे सिंघन के सिर कटवाके सकटिओ में लदवाए।
करम दाद खां नाजम ने वहि ओरे लाहौर चलाए।
निज निज ठोर गए सभ मुसले दंभ फते बजाए।
तब लौ सिंघ मलवईअन के युत बुढे दल पा खबरै।
घगर नदी तट मुगल सरां ढिग घेरे शतरू जबरै।

जब इस घटना का पता स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को लगा कि सिंघों के सिर बैलगाड़ियों में लादकर ले जाए जा रहे हैं तो उन्होंने अपने साथ शहीद अकाली मित सिंघ के मसेर भाई सेढा सिंघ नरड़ू, तीनों भतीजे नौध सिंघ खेड़ी सय्यदों,

भाग सिंघ, भंगा सिंघ थनेसरी, राइ सिंघ तथा दिआल सिंघ भड़ी, गुरदित्त सिंघ लाडवा, करमा सिंघ निर्मला शाहबादीआ आदि सिक्ख सरदारों को लेकर शाही फौज को जा घेरा तथा उनको मारकर भगा दिया, जिसका ज़िक्र अहिवाल ख़ानदान खेड़ी नौध सिंघ में इस प्रकार किया है कि :

". . . अहिमद शाही फौज सर मुबारक स. मित सिंघ मएसर हाए मकतूलान के १८ सकटिआं में लाद कर शामली से अंबाला मुतसिल सराइ मुगल, पांच योम में बाअरादा सरहंद पहुंची स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया मए तअलकदार सिक्ख सरदारान स. मेढा सिंघ नरड़ू मसेर बरादर स. मित सिंघ और नौध सिंघ भाग सिंघ, भंगा सिंघ बरादर-जादे स. मित सिंघ, काबजान रियासत थनेसर स. राइ सिंघ दिआल सिंघ सरदारान भड़ी पिसरानि स. महिताब सिंघ मीर कोटीआ, स. गुरदित्त सिंघ लाडवा, स. करम सिंघ शाहबाद वग़ैरा बाट करने जंग अज़ीम के सरां मुबारक स. मित सिंघ वा दीगर सर मिन जुमला मकतूलान जला कर शहीद गंज कायाम किया।

प्राचीन पंथ प्रकाश के अनुसार :

उन सिर दीनों ऊहां गिराइ।
गडे लै गए नठ पिछांह।
हुते भतीजे मित सिंघ दोइ।
भाग सिंघ भंगा सिंघ सोइ ॥१४॥
लई थनेसर सी जिन मल।
सीस फूके उन दौड़ सुचल।
शहीद गंज इम ऊहां कहावै।
चाड़े चड़ावा सुख सो पावै ॥१५॥

पंथ प्रकाश के अनुसार :

फौज लाहौरी तज सकटिआ को सिंघन ते डर भागी।
सकटिआं को सीसन युत सिंघ दीनी तिहठां आगी।
तहां शहीद गंज है अब लौ मानत सभ नर नारी।
नाजम गयो लहौर फौज लै फते बनावट धारी।

थनेसरी रिकार्ड के अनुसार सिंघों के शहीद गंज की सेवा सबसे पहले शहीदी से २७ वर्ष बाद महाराजा साहिब सिंघ की बहन बीबी साहिब कौर ने मरहट्टा फौज पर विजय प्राप्त करने के पश्चात करवाई। बीबी साहिब कौर ने यह सेवा स. भंगा सिंघ थनेसरी आदि सरदारों को साथ लेकर करवाई थी। इस स्थान की सेवा-संभाल के लिए अकाली खड़ग सिंघ निहंग को नियुक्त किया गया था। स. भंगा सिंघ थनेसरी की सुपुत्री बीबी रूप कौर जी अकाली मित सिंघ की भतीजी थी, पटियाला के महाराजा करम सिंघ से ब्याही हुई थी। महारानी रूप कौर (करम कौर) ने अंधेर की दसवीं को शहीदों की याद में जोड़मेला शुरू किया। महारानी ने शहीद गंज के साथ दो कमरे बनवाए तथा एक कमरे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश करवाया और दूसरे कमरे में पाठी सिंघों की रिहायश का प्रबंध किया।

स. नौध सिंघ : स. मित सिंघ की खेड़ी नौध सिंघ वाली जागीर के वारिस स. नौध सिंघ १८०० ई. में अकाल चलाना कर गए।

स. गुलाब सिंघ : स. नौध सिंघ के अकाल चलाना के बाद स. गुलाब सिंघ वारिस बने। स. गुलाब सिंघ के घर तीन पुत्रों-- स. हकीकत सिंघ, स. सुरजन सिंघ तथा स. बसंत सिंघ का जन्म हुआ। स. गुलाब सिंघ १८३८ ई में अकाल चलाना कर गए।

स. बसंत सिंघ : स. गुलाब सिंघ के बाद उनके पुत्र स. बसंत सिंघ जागीर के मालिक बने। स. बसंत सिंघ के घर दो पुत्र-- स. धिआन सिंघ तथा स. हरी सिंघ का जन्म हुआ। स. बसंत सिंघ का १८५९ ई. में देहांत हो गया।

स. हरी सिंघ : स. बसंत सिंघ के देहांत के बाद उनका पुत्र स. हरी सिंघ जागीर का मालिक बना। स. हरी सिंघ के घर कोई औलाद नहीं हुई।

स. सोहन सिंघ : स. सोहन सिंघ तथा स. सुच्चा सिंघ दोनों सगे भाई स. वज़ीर सिंघ चाहल निवासी कोठा गुरु के पुत्र थे। स. हरी सिंघ की माता सरदारनी रत्न कौर के भतीजे थे। स. हरी सिंघ ने इनको अपना उत्तराधिकारी बना लिया। स. हरी सिंघ के अकाल चलाना कर जाने के बाद स. सोहन सिंघ, स. सुच्चा सिंघ तथा इनके चाचे के पुत्र स. सुंदर सिंघ बराबर की जागीर के मालिक बने। स. सुंदर सिंघ के घर तीन पुत्र-- स. तेजा सिंघ, स. लक्षमण सिंघ तथा स. बहादर सिंघ का जन्म हुआ।

स. तेजा सिंघ : स. सुंदर सिंघ की मृत्यु के बाद उनके हिस्से की जागीर का मालिक स. तेजा सिंघ बना। स. तेजा सिंघ के घर एक पुत्र-- स. पवित्तर सिंघ का जन्म हुआ।

स. पवित्तर सिंघ : स. तेजा सिंघ के बाद उनकी जायदाद का वारिस स. पवित्तर सिंघ बना। स. पवित्तर सिंघ के घर तीन पुत्र-- स. सरबजीत सिंघ, स. सुखपाल सिंघ तथा स. गुरविंदर सिंघ (प्रिंस) का जन्म हुआ। स. सरबजीत सिंघ के घर स. वरिंदर सिंघ तथा स. सुखपाल सिंघ के घर स. प्रभदीप सिंघ (मिट्ठू) का जन्म हुआ जो खेड़ी नौध सिंघ में आबाद हैं।

स. सुच्चा सिंघ की पारिवारिक श्रृंखला : माता रत्न कौर जी के दूसरे उत्तराधिकारी स. सुच्चा सिंघ के घर स. सोहन सिंघ का जन्म हुआ।

स. सोहन सिंघ : स. सोहन सिंघ के घर एक पुत्र- स. गुरदिआल सिंघ का जन्म हुआ।

स. गुरदिआल सिंघ : स. सुच्चा सिंघ के अकाल चलाने के बाद उनके हिस्से की जागीर के मालिक स. गुरदिआल सिंघ बने। स. गुरदिआल सिंघ के घर तीन पुत्र-- स. दरशन सिंघ, स. अवतार सिंघ तथा स. हरमिंदर सिंघ का जन्म हुआ।

स. दरशन सिंघ : स. दरशन सिंघ के घर एक पुत्र-- स. वरिंदरपाल सिंघ का जन्म हुआ।

स. वरिंदरपाल सिंघ : स. वरिंदरपाल सिंघ के घर एक पुत्र स. चाहतप्रीत सिंघ का जन्म हुआ।

स. अवतार सिंघ : स. गुरदिआल सिंघ के दूसरे पुत्र स. अवतार सिंघ के घर एक पुत्र-- स. हरशरनजीत सिंघ का जन्म हुआ।

स. हरशरनजीत सिंघ : स. हरशरनजीत सिंघ के घर एक पुत्र-- स. कुलशरनजीत सिंघ का जन्म हुआ।

स. हरमिंदर सिंघ : स. गुरदिआल सिंघ के तीसरे पुत्र स. हरमिंदर सिंघ के घर तीन पुत्रियां-- बीबा सिमरनजीत कौर (सिमी), बीबा जसप्रीत कौर तथा जस्सी का जन्म हुआ।

माता रत्न कौर जी के मायके परिवार में से एक और (गरचा) परिवार उत्तराधिकारी के रूप में इनकी जागीर का आकर वारिस बना। यह परिवार भी आजकल खेड़ी नौध सिंघ में आबाद हैं। इस परिवार में से स. जीउण सिंघ गरचा जागीर का हिस्सेदार बना।

स. जीउण सिंघ : स. जीउण सिंघ के घर दो पुत्र-- स. भगवान सिंघ तथा स. हरनाम सिंघ का जन्म हुआ।

स. भगवान सिंघ : स. भगवान सिंघ के घर एक पुत्र-- स. गुरदेव सिंघ का जन्म हुआ।

स. गुरदेव सिंघ : स. गुरदेव सिंघ के घर चार पुत्र-- स. अमरजीत सिंघ, स. बलविंदर सिंघ, स. जगनंदन सिंघ तथा स. हरभजन सिंघ का जन्म हुआ।

स. हरनाम सिंघ : स. जीउण सिंघ के दूसरे पुत्र स. हरनाम सिंघ के घर एक पुत्र-- स. बलदेव सिंघ का जन्म हुआ।

स. बलदेव सिंघ : स. बलदेव सिंघ के घर एक पुत्र-- स. करनैल सिंघ का जन्म हुआ।

स. करनैल सिंघ : स. करनैल सिंघ के घर तीन पुत्र-- (मिंटू), (पिंका) तथा स. प्रितपाल सिंघ का जन्म हुआ।

भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज़ सिंघ

*-डॉ. हरबंस सिंघ**

भाई तारू सिंघ की खोपड़ी उतारी जा चुकी थी, किंतु अभी उनके सांस बाकी थे। इतिहास में ज़िक्र आता है कि जकरिया ख़ान का पेशाब बंद हो गया। जब भाई तारू सिंघ का जूता ज़करिया ख़ान के सिर पर मारा तो उसको इस तकलीफ़ से राहत मिल गई। 'प्राचीन पंथ प्रकाश' के कर्त्ता भाई रत्न सिंघ भंगू ने भाई सुबेग सिंघ के इस मिशन का ज़िक्र अपनी रचना में बहुत ही विस्तारपूर्वक किया है। खोपड़ी उतर जाने के बाद जिस दिन भाई तारू सिंघ ने अपने स्वास (सांस) त्याग दिए, उसी दिन जकरिया ख़ान की मृत्यु हो गई।

जकरिया ख़ान की मृत्यु के पश्चात (१७४५ ई. में) उसका पुत्र यहीआ ख़ान लाहौर का सूबेदार बना। वो भी अपने पिता जकरिया ख़ान तथा दादा अब्दुस समद ख़ान की तरह ही ज़ालिम व निर्दयी था। उसने अपना दबदबा बनाए रखने हेतु सिक्खों के विरुद्ध फिर सख़्तियों का दौर शुरू कर दिया।

भाई सुबेग सिंघ का पुत्र भाई शाहबाज़ सिंघ भी अपने पिता की तरह अच्छा खासा पड़ा-लिखा, सूझवान व योग्य नौजवान था। उसने अरबी तथा फारसी भाषा की शिक्षा नगर के मौलवी व विद्वान मुसलमान से हासिल की थी। भक्त लक्ष्मण सिंघ की पुस्तक (The Sikh Martyr) के अनुसार वो बेहद खूबसूरत, हंसमुख, उत्साही, रौशन दिमाग तथा चढ़दी कला वाला नौजवान था। उसकी सुंदरता व योग्यता से मौलवी इतना प्रभावित था कि वो चाहता था कि किसी तरह इस नौजवान को इस्लाम के दायरे में लाया जाए। यह भी ज़िक्र आता है कि भाई शाहबाज़ सिंघ के मुसलमान बन जाने के बाद वो अपनी पुत्री का इसके साथ विवाह कर उसको अपना दामाद बनाने का विचार रखता था। मौलवी ने इस्लाम धर्म ग्रहण करने की पेशकश भाई शाहबाज़ सिंघ के समक्ष रखी। मौलवी की बात सुनकर भाई शाहबाज़ सिंघ ने साफ-साफ कह दिया कि :

जैसे तुमै दीन है पयारा,
तैसे ही है धरम हमारा। (श्री गुर पंथ प्रकाश)

मौलवी ने भाई शाहबाज़ सिंघ को कई प्रकार के लालच और ज़र-ज़मीन देने की भी बात की। जब भाई साहिब ने इन बातों को भी ठुकरा दिया तो मामला काज़ी की कचहरी में लाया गया।

कहा गया है कि इस ने इस्लाम के विरुद्ध बड़े अपमानजनक शब्द प्रयोग कर हमारे धर्म की तौहीन की है। काज़ी ने यह बात नवाब यहीआ ख़ान तक पहुंचा दी।

नवाब ने तफ़तीश करने के बहाने पिता और पुत्र (भाई सुबेग सिंघ और भाई शाहबाज़ सिंघ) को उनके गांव जंबर से लाहौर बुलवा लिया। यहीआ ख़ान ने स. सुबेग सिंघ की लाहौर दरबार के प्रति सेवाओं को नज़र अंदाज़ करते हुए मौलवी और काज़ी की बात को दरुस्त ठहराते हुए दोनों को कहा कि या तो ज़र-ज़मीन

3C/38, 2nd Floor, New Rohtak Road, Karol Bagh, New Delhi, Ph. 01165585395

लेकर इस्लाम धर्म कबूल कर लो नहीं तो मरने के लिए तैयार हो जाओ। स. रत्न सिंघ भंगू लिखते हैं :

सुबेग सिंघ फड़ जंबरों मंगाया, तिसका बेटा साथ फड़ाया।
कहयो न्वाब तुम आवो दीन, लेवो दाम औ काम औ ज़मीन ॥७१॥
नही तों मरनों कर मनजूर, चढो चरख गिर होवो चूर। (श्री गुरु पंथ प्रकाश)

नवाब द्वारा दिए गए ज़र-ज़मीन के लालच और बहकावे के बाद भाई सुबेग सिंघ का उत्तर था कि हम थोड़ा-सा लालच कर अपना अमोलक धर्म त्यागने को तैयार नहीं, चाहे हमारे प्राण चले जाएं :

-मुसलमान हम होवहिं नाहीं,
धरम आपनो साथ निबाही।
-हम तों गुर के सिक्ख सदावैं;
गुर के हेत प्राण भल जावैं।
(श्री गुरु पंथ प्रकाश)

भाई सुबेग सिंघ का उत्तर सुनकर नवाब यहीआ ख़ान ने एक बार फिर कहा कि अगर **'दीन'** धर्म अपना लोगे तो तुम्हारी जान बख़्श दी जाएगी, नहीं तो चरखड़ी पर चढ़ाकर मार दिए जायोगे**!**

भाई सुबेग सिंघ ने बड़ी दृढ़ता और गंभीरता के साथ नवाब को कहा कि अगर दीन धर्म अपना लेने से हमें कभी भी मृत्यु नहीं आएगी, तो मैं तुम्हारा धर्म अपनाने को तैयार हूं। परंतु अगर मोमन बन जाने के बाद भी इन्सान ने मर ही जाना है तो मैं अपना धर्म त्यागकर अपना जीवन बचाने के लिए तैयार नहीं। मैं तो चाहता हूं कि तुम हम दोनों को चरखड़ी पर चढ़ाकर अपनी बात पूरी कर लो :

चाढ़ चरखड़ी अबै मरावो,
मारो अबै न देर लगावो ॥२॥
(श्री गुरु पंथ प्रकाश)

यह सुनकर नवाब को गुस्सा आ गया और उसने तुरंत बाप-बेटे को चरखड़ी पर चढ़ाकर मार देने का हुक्म जारी कर दिया। ज्ञानी ज्ञान सिंघ **'तवारीख गुरु खालसा'** में लिखते हैं कि चरखड़ी पर चढ़ाने से पूर्व भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ को बहुत कष्टदायक यातनाएं दी गईं। उनको उल्टा लटकाकर नंगे शरीर पर कोड़े मारे गए तथा और भी कई प्रकार के शारीरिक कष्ट दिए गए। इन कष्टों का ज़िक्र करते हुए स. रत्न सिंघ भंगू लिखते हैं :

तब तिस देण लगे बहु दुक्ख,
टांगैं खीचैं कुटैं मुक्ख ॥३१॥
एक टंग फड़ तिसै घुमावैं,
बांह फिर पीछे गिरावैं।
कोई दंतन नखन चुभावै,
उलटो सुलटो करैं संतावै ॥३२॥
खेचैं नाक कान दुख देहिं,
कहै दंत यिह तोड़ सु लेहिं।
कोऊ कहै यह है माचल्ल,
उतार लेहु अब याकी खल्ल ॥३३॥
ऐसे दुक्ख कहां लौ गनीए,
जितने तिनके दित्ते भनीए।(श्री गुर पंथ प्रकाश)

स. रत्न सिंघ भंगू के अनुसार उन कष्टों की गिनती नहीं हो सकती जो भाई सुबेग सिंघ, भाई शाहबाज़ सिंघ को दिए गए। डॉ. हरी राम गुप्ता के शब्दों में "जब नवाब के जल्लाद दोनों को कष्ट दे-देकर हार गए तो यहीआ ख़ान ने हुक्म दिया कि शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाया जाए। पिता सुबेग सिंघ उसका दुख बर्दाश्त नहीं कर पाएगा तथा इस तरह से ये

बाप-बेटा इस्लाम धर्म कबूल कर लेंगे।"

जब भाई शाहबाज़ सिंघ को उल्टा लटका कर चरखड़ी पर बांधा गया तो पिता ने कहा, "पुत्र अडोल रहना! अकाल पुरख का सिमरन करते रहना!!" जब चरखड़ी घूम रही थी तो नवाब ने फिर कहा, "तू कैसा बाप है? यदि तू चाहे तो अभी भी अपने पुत्र को बचाकर अपनी भूल बख़्शा सकता है।"

भाई सुबेग सिंघ ने कहा कि हमारे गुरु (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) ने हमारे लिए अपनी कुल (चारों साहिबज़ादे) कुर्बान कर दिए। मैंने अपनी कुल बचाकर क्या बड़प्पन पाना है? भाई रत्न सिंघ भंगू के अनुसार :

सिक्खन काज सु गुरू हमारे, सीस दीओ निज सन परवारै।
चारे पुतर जान कुहाए, सो चंडी की भेट कराए।
हम कारन गुर कुलहि गवाई, हम कुल राखैं कौण बडाई ॥ (श्री गुरु पंथ प्रकाश)

चरखड़ी पर चढ़ाने के बाद, चरखड़ी को रोक-रोक कर बार-बार यही कहा जाता रहा कि दीन कबूल कर लो। जब काज़ी ने बाप-बेटे को कलमें पढ़ने के लिए कहा तो भाई सुबेग सिंघ और भाई शाहबाज़ सिंघ ने कहा कि हमारा कलमा तो 'सतिनाम-वाहिगुरु' है और हम इसको स्मरण करने के इलावा अन्य कोई कलमा पढ़ने के लिए तैयार नहीं।

दोनों चरखड़ियों के साथ तीखी शूलों (सूलों) को अंदर की तरफ मोड़कर इस तरह जड़ा गया कि चरखड़ी के प्रत्येक चक्कर के साथ उनकी मुड़ी हुई नोंकें बाप-बेटे के शरीर को छलनी कर रही थीं। बाप-बेटे की जुबान से प्रभु-सिमरन की आवाज़ निकलती सुनाई दे रही थी। भाई सुबेग सिंघ और भाई शाहबाज़ सिंघ के शरीर से निकल रहे खून के कारण ज़मीन के नीचे का भाग लाल हो गया था।

देखने आए लोग हैरान थे कि पता नहीं यह सिक्ख किस मिट्टी के बने हुए हैं कि अपने धर्म की रक्षा के लिए खुशी-खुशी कुर्बान हो जाते हैं, परंतु उफ़ तक नहीं करते। दोनों को लाहौर में 'नख़ास' के स्थान पर शहीद किया गया। बाद में यह स्थान 'शहीद गंज' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

शहीदी की यह घटना १७४५ ई में घटित हुई। उनकी शहीदी का ज़िक्र करते स. रत्न सिंघ भंगू लिखते हैं :

सूबेग सिंघ जंबर सुत नाल। चढ़दै चरख जिन जपयो अकाल।
धन धन वै जिन सिदक न हारा। दीआ सीस मुख गुरू उचारा ॥ (श्री गुर पंथ प्रकाश)

भाई सुबेग सिंघ पूर्ण गुरसिक्ख, जपी, तपी और अकाल पुरख पर दृढ़ विश्वास रखने वाला धर्मी सिक्ख था। वह अपने समय का अच्छा पढ़ा लिखा और विद्वान व्यक्ति था। उसका नवयुवक बेटा भाई शाहबाज़ सिंघ भी इलम-अकल और सिक्खी जज़्बे में किसी भी तरह पिता से पीछे नहीं था। जीवन की दृढ़ सच्चाई को जानते हुए कि इस शरीर ने एक न एक दिन ज़रूर नष्ट हो जाना है, उन्होंने अपने धर्म को त्यागने की जगह पर, धर्म के लिए कुर्बान हो जाने को प्राथमिकता दी। उनकी शहीदी अठारहवीं शताब्दी के सिक्ख इतिहास की एक महान घटना थी। ऐसी कुर्बानियां ही इतिहास का रुख बदलती हैं।

इस घटना से मात्र २० वर्ष बाद ही १७६५ ई में खालसे ने लाहौर पर विजय प्राप्त कर खालसा राज्य की स्थापना का परिचम लहरा दिया।

अकाली फूला सिंघ

*-स. गुरप्रीत सिंघ भोमा**

पंजाब की धरती बहुत ही ज़रखेज़ है। ये धरती ऋषियों, मुनियों, गुरु-पीरों की जन्म स्थली है। इस धरती पर ऐसे अनेकों बहादुर, जंगजू, शूरवीरों ने जन्म लिया है, जिन्होंने अपने धर्म, कौम, देश की रक्षार्थ हेतु अपने पावन रक्त के साथ इस धरती को सींचा है; जिनके रक्त की महक रहती दुनिया तक खुशबू बिखेरती रहेगी। सिक्ख धर्म में ऐसे अनेकों ही बहादुर शूरवीर पैदा हुए हैं जिन्होंने अपनी कुर्बानी देकर अपने धर्म पर आंच नहीं आने दी और अपने धर्म की आन-बान-शान को सदैव बरक़रार रखा। कहते हैं कि जो कौम मरना जानती है उसको जीने की इच्छा नहीं होती। इन बहादुर वीरों में एक परम सेवक, सिक्ख जरनैल, शूरवीर, नेक, त्यागी, दृढ़ संकल्पी अकाली फूला सिंघ जी हैं, जिन्होंने गुरु के समक्ष की अरदास पर पहरा देते हुए युद्ध में शहादत का जाम पीकर अपना नाम इतिहास के पन्नों पर सुनहरी अक्षरों से अंकित किया और सिक्ख धर्म के माथे पर चार चांद लगा दिए।

अकाली फूला सिंघ जी का जन्म १८१८ बिक्रमी अर्थात् सन् १७६१ ई को माना जाता है। आप जी पंजाब के गांव शीहां आधुनिक नाम देहला शीहां, ज़िला संगरूर से सम्बंधित हैं। आप जी के पिता जी का नाम स. ईशर सिंघ था जो कि निशानां वाली मिसल के बहादुर योद्धा थे। कहते हैं कि जब अहमदशाह अब्दाली पानीपत की तृतीय लड़ाई में विजय प्राप्त कर वापिस काबुल लौट रहा था तो सिक्खों ने रास्ते में ही इन पर ज़ब्रदस्त आक्रमण करके इसकी लूट का धन, माल छींनकर उसका वज़न कम किया और अब्दाली फौज की कैद में से बड़ी बहादुरी से लगभग दो हज़ार हिंदू स्त्रियों को छुड़ाकर उनके घर पहुंचाया जिनको वो काबुल के बाज़ारों में भेड़-बकरियों की भांति निलाम करने जा रहा था। इसी आक्रमण में अकाली फूला सिंघ के पिता स. ईशर सिंघ बहादुरी के जौहर दिखाते हुए भयंकर रूप में ज़ख्मी हो गए। बहुत उपचार करने के बावजूद भी ज़ख़्म दुरुस्त न हुए। आप अपनी हालत देखकर अपने बालक अकाली फूला सिंघ का हाथ अपने बहुत ही करीबी सहयोगी बाबा नरैण जी को थमाकर परलोक गमन कर गए।

अकाली फूला सिंघ मात्र अभी दो वर्ष के थे कि बाबा नरैण सिंघ इनको श्री अनंदपुर साहिब ले आए। यहां आप जी ने अल्प आयु में नित्तनेम की बाणियां कंठस्थ की और साथ-साथ पंजाबी एवं फारसी भाषा की तालीम हासिल की। आप जी ने अपना नित्य क्रम ऐसा बना लिया था कि चाहे शांति के दिन हों या युद्ध के आप अपना नित्तनेम कभी न छूटने देते। ज्यादातर समय प्रभु-सिमरन में व्यतीत करते। बाबा नरैण सिंघ ने आपको शस्त्र विद्या एवं राजनीतिक विद्या में प्रवीण किया, जिसकी उस समय अत्यंत आवश्यकता भी थी। आप अपनी कुछाग्र बुद्धि के कारण जल्द ही शस्त्र एवं राजनीतिक विद्या ग्रहण कर सिक्ख पंथ के सेवा कार्यों में व्यस्त हो गए और गुरु-घर के कुशल प्रबंध की ओर विशेष

**गांव भोमा, डाक, वडाला, वीरम, ज़िला : श्री अमृतसर, फोन : ९८७८५५८८५१*

ध्यान देने लगे। आपको श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में हो रही कुरहितों के बारे में मालूम पड़ा तो आपने अपने साथ कुछेक सिंघों का जत्था लेकर गुरु-घर के प्रबंध को दुरुस्त करवाकर गुरु-मर्यादा अनुसार करवाया। इसके साथ-साथ आपने अमृत सरोवर की कार-सेवा का कार्य भी आरंभ करवाया। जिसके कारण आपकी ख़्याति (प्रसिद्धि) दूर-दूर तक फैलने लगी।

बाबा नरैण सिंघ का जत्था भी 'शहीदां की मिसल' का अंश था, इसलिए अकाली फूला सिंघ भी शहीदां की मिसल में शामिल हो गए। इस मिसल में रहते हुए अकाली जी को बहुत बार बहादुरी के जौहर दिखाने का मौका मिला। अपनी सियानप, दिलेरी, बहादुरी के कारण ही बाबा नरैण जी के बाद अकाली फूला सिंघ जी उनके जत्थे के जत्थेदार स्थापित किए गए। धीरे-धीरे सभी मिसलों ने पंजाब के क्षेत्रों पर अधिकार जमाना शुरू कर दिया। शहीदां की मिसल के कब्ज़े तले भी माजरी, केसरी, शाहजादपुर क्षेत्र आदि होते थे। बाद में शहीदां की मिसल का सरदार गुलाब सिंघ को बना दिया गया जोकि सूझवान एवं योग्य प्रबंधक नहीं था। उधर १७२९ ई को महाराजा रणजीत सिंघ ने लाहौर पर कब्ज़ा करके सिक्ख राज्य की नींव रखी और अब श्री अमृतसर पर कब्जा करने के इरादे से चढ़ाई कर दी। जब अकाली फूला सिंघ को इस बात का पता चला उन्होंने फौरन दोनों दलों के मध्य आकर दोनों तरफ से सिक्ख शक्ति का भयंकर नाश होने से बचाव किया। यह उनके योग्य सूझ और कुशल नीति की प्रत्यक्ष उदाहरण थी; जिसके कारण आपकी इ़ज्जत महाराजा रणजीत सिंघ के दिल में और बढ़ गई। इन्होंने ऐसा करके महाराजा रणजीत सिंघ एवं मिसलों के बीच सुलाह करवा दी। महाराजा रणजीत सिंघ ने मिसलों के नाम बहुत सारी जागीर लगवा दी। सन् १८०७ ई में महाराजा रणजीत सिंघ की फौज ने कसूर पर चढ़ाई कर दी, जिसमें अकाली फूला सिंघ ने ऐसी शूरवीरता दिखाई कि दिन-बदिन आपके जत्थे की संख्या बढ़ने लगी और बड़े-बड़े अफगान भी आपसे भय खाने लगे।

अकाली फूला सिंघ की दूरंदेशी सूझ एवं गुरु-घर के प्रति दृढ़ विश्वास, निष्ठावान सेवक होने के कारण महाराजा रणजीत सिंघ आपका बहुत सम्मान करते थे और आपकी हर बात सर आखों पर मानते थे। सिक्ख इतिहास में अकाली फूला सिंघ एक ऐसे जत्थेदार हुए हैं जिन्होंने निर्भैयता के साथ महाराजा रणजीत सिंघ को किसी भूल की तनख़्वाह लगाई थी जिससे महाराजा रणजीत सिंघ ने भी खुद को सिक्ख पंथ का दास समझते हुए बड़ी नम्रता सहित सहर्षित कबूल किया था।

अकाली फूला सिंघ इतने दृढ़ संकल्पी स्वभाव एवं गुरु पर अटूट विश्वास रखने वाले थे कि एक बार जो फैसला ले लें फिर उससे पीछे नहीं हटते थे। एक बार १८२३ ई में आपको सूचना मिली कि अज़ीम ख़ान अफगानों की भारी संख्या लेकर सिक्खों के विरुद्ध लुंडे दरिया पर पहुंच रहा है। आपने उसी वक्त जोश में आकर अपने सिपाही अपनी कमान तले एकत्र कर लिए। अफगानों का मुकाबला करने हेतु अरदासा सोधकर फौज को कूच करने का आदेश दे दिया। उधर से किसी मुखबर से मालूम पड़ा कि अज़ीम ख़ान लगभग दस हज़ार फौज और चालीस बड़ी तोपें लेकर नौशिहरे के आस-पास पहुंच चुका है, जिसकी संख्या सिक्खों की फौज की संख्या के कई गुना अधिक है।

महाराजा रणजीत सिंघ ने भी अकाली फूला सिंघ को संदेश भेजा कि हमारी फौज अफगानी

फौज के मुकाबले बहुत कम है अभी युद्ध का उचित समय नहीं है, हमें कुछ देर ठहर जाना चाहिए, लाहौर से आ रही अन्य फौज और तोपखाना पहुंच जाने पर हमला किया जाए। किंतु अकाली फूला सिंघ ने सिक्खी सिदक पर पहिरा देते हुए महाराजा रणजीत सिंघ का हुक्म ठुकरा दिया, उन्होंने कहा, नहीं युद्ध अभी होगा! क्योंकि वो युद्ध के लिए अरदासा सोध चुके हैं। अरदासा सोधकर युद्ध के लिए विलंभ करना, गुरु-मर्यादा के विपरीत है। गुरु-मर्यादा के विपरीत कार्य करना मेरे लिए नामुमकिन है। अज़ीम ख़ान फौज लेकर लुंडे दरिया की दायीं तरफ और अन्य कबीले भी पहाड़ों की टेक लेकर दूसरी तरफ अपने मोर्चे स्थापित कर चुके थे। उधर खालसा फौज के जांबाज़ सिंघ कंवर शेर सिंघ, स. हरी सिंघ नलूआ, स. बुध सिंघ आदि भी दुश्मनों से लोहा लेने हेतु तैयार-बर-तैयार थे। सिक्खों की फौज के पहुंचते ही अफगानों ने गोले बरसाने शुरू कर दिए, शुरू में ऐसे लगा जैसे अफगान सिक्खों को जल्द ही भगाने में कामयाब हो जाएंगे क्योंकि सिक्खों का तोपखाना अभी पहुंचा नहीं था किंतु सिक्खों ने भी अपनी वीरता के पूरे जौहर दिखाए, जिससे सिक्ख फौज ने अपने पांव जमा लिए। अकाली जी की फौज अफगानों पर भूखें शेरों की भांति टूट पड़ी। घमासान युद्ध हुआ। जल्द ही खालसा फौज पहाड़ियों/चोटियों में छिपे अफगानों को बाहर निकालने में कामयाब हो गई। दोनों तरफ लाशों के अंबार लग गए, पूरा युद्ध का मैदान रक्त से सन गया। अफगानों ने स. गरभा सिंघ और स. करमा सिंघ को शहीद कर दिया। अकाली फूला सिंघ ने अपने साथियों को गिरता देखकर ऐसा ज़ब्रदस्त आक्रमण किया कि अफगान पीछे हटने लगे। युद्ध का पैंतरा ही बदल गया, ऐसे ही हाथों-हाथ हो रही लड़ाई में एक गोली अकाली जी की टांग पर लगी और कुछ गोलियां उनके घोड़े पर भी लगीं और वह जख़्मी होकर युद्ध-स्थल में गिर पड़ा। अकाली फूला सिंघ ने फौरन ही एक हाथी मंगवाया तथा हाथी पर सवार होकर ऐसे जौहर दिखाने लगे कि दुश्मनों को भागने को रास्ता नहीं मिल रहा था। अकाली जी की टांग से पूरी तरह से रक्त निचुड़ चुका था। खालसा फौज की वीरता एवं बहादुरी देखकर अज़ीम ख़ान की फौज के हौसले पस्त हो गए और वो पीछे को भाग खड़ी हुई। अकाली जी की फौज ज़ब्रदस्त विजय प्राप्त कर जैकारे गुंजाते हुए वापिस आ रही थी तो एक पठान पत्थर के पीछे छिपकर बैठा था, जिसने अकाली जी पर गोलियों की बौछाड़ कर दी। करनल महां सिंघ जो अकाली जी के हाथी के साथ था, ने कृपाण द्वारा पठान के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। अकाली जी को शीघ्र ही कैंप में लाया गया किंतु तब तक अकाली जी परलोक गमन कर चुके थे। ऐसे सिक्ख शूरवीर, बहादुर, निर्भय, दृढ़, योद्धा की शहादत की ख़बर सुनकर महाराजा रणजीत सिंघ भी अपनी आंखों में आसूं नहीं रोक पाए। चाहे खालसा फौज इस युद्ध में ज़ब्रदस्त विजय प्राप्त कर चुकी थी किंतु अकाली फूला सिंघ का सदैवकालीन बिछोड़ा कभी न पूरा होने वाला घाटा पड़ चुका था।

अगले दिन सुबह लुंडे दरिया के किनारे अकाली फूला सिंघ अंतिम संस्कार पूरी शानो-शौकत एवं फौजी सम्मान सहित किया गया; जिनमें महाराजा रणजीत सिंघ और फौज के सारे सरदारों ने नम आंखों से इस वीर योद्धा को श्रद्धांजलि अर्पित की। किसी शायर ने खूब लिखा है :

जहां शहीदों का रक्त गिरता है,
वहीं से उगता है हर सवेरा।
जहां जलाता है देह दीपक,
वहां न उगता फिर अंधेरा।

माता त्रिपता जी

*-बीबी मनमोहन कौर**

लोकोक्ति है कि मां का दीदार उसके मुख से नहीं कोख से किया जाता है। कहने से तात्पर्य है कि शख़्सियत का पता उसके उदर से जन्म लेने वाली संतान से, संतान के जीवन से लगाया जाता है। इसी तरह माता त्रिपता जी की शख़्सियत को जानने के लिए श्री गुरु नानक देव जी के व्यक्तित्व के बारे जान लेना आवश्यक है, सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक श्री गुरु नानक देव जी समूचे समाज के सर्वसांझे रहबर थे। श्री गुरु नानक साहिब जी को हर कोई अपने अकीदे (विश्वास) के अनुसार अपने-अपने तरीके से स्मरण करता है। इतिहास गवाह है कि जब भी कभी धरती पर रहने वाले दीन, हीन लोगों पर जुल्मों का कहर ढाया गया, तो उनकी दर्दनाक पुकार पर अकाल पुरख ने हमेशा ही किसी पवित्र आत्मा को इस धरती पर जुल्म रूपी अंधेरे को समाप्त करने के लिए भेजा है :

सुणी पुकारि दातार प्रभु गुरु नानक जम माहि पठाइआ। *(१:२३)*

श्री गुरु नानक देव जी जैसी पवित्र आत्मा को भेजने के लिए अकाल पुरख ने जिस परिवार का चुनाव किया, वह परिवार था-- महिता कालू जी और माता त्रिपता जी का। इस संदर्भ में *"आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥ निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ ॥"* के महावाक्य अनुसार अकाल पुरख की ज्योति ने श्री गुरु नानक साहिब के रूप में जन्म लेकर माता त्रिपता जी की भाग्यशाली कोख को सम्मान बख़्शा। भाई गुरदास जी श्री गुरु नानक देव जी के जन्म समय के हालात के बारे में ब्यान करते हुए फरमान करते हैं :

सतिगुरु नानकु प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ करि सूरजु निकलिआ तारे छपि अंधेरु पलोआ। *(वार १:२७)*

माता त्रिपता जी ने जिस रूहानी नूर, महान आत्मा को जन्म दिया, उसने समूचे समाज को अन्याय, पाप, जुल्म और हिंसा से लिप्त हुए 'कल्युग' में राहत प्रदान करते हुए सिक्ख मत का उत्थान कर नये समाज सुधारक पंथ डालें। गुरु साहिब के *"जितु जंमहि राजान"* महावाक्य द्वारा स्पष्ट होता है कि मनुष्य चाहे कितना भी महान कहा जाता हो उसको जन्म देने वाली स्त्री ही है। इसलिए वह भी महानता की अधिकारी है। जिस तरह शेरनी का दूध स्वर्ण के बर्तन में ही समा सकता है ठीक उसी तरह किसी महान शख़्सियत की माता को भी महानता के शिखर पर दृढ़ रहना पड़ता है। इतिहास पढ़ते समय पता चलता है कि जितनी भी महान शख़्सियतों ने जन्म लिया उनमें से अधिकतर को जन्म देने वाली मां की गोद नसीब नहीं हुई। श्री कृष्ण जी की जननी मां देवकी थी, परंतु वह उनकी परवरिश का सुख ग्रहण न कर सकी। महात्मा बुद्ध की मां उनको जन्म देते समय ही इस

8363 गली नं: 2, गुरु रामदास नगर, सुलतानविंड रोड़, श्री अमृतसर।

नाशवान संसार को अलविदा कह गई। हज़रत ईसा मसीह की मां को समाज की कई तरह की जियादतियां बर्दाश्त करनी पड़ीं। किंतु माता त्रिपता जी ऐसी महान और भाग्यवान मां है, जिसने न केवल रूहानी शख़्सियत श्री गुरु नानक साहिब जी को जन्म दिया, बल्कि उनको गोद में खिलाकर उनकी बाल-लीलाओं का आनंद भी लिया; इसी महान मां माता त्रिपता जी के प्यार की गरिमा ने श्री गुरु नानक साहिब की शख़्सियत को चार चांद लगाए।

ऐतिहासिक पुस्तकों और जन्म साखियों के अध्ययन से पता चलता है कि श्री गुरु नानक साहिब जी के जन्म से पहले समाज में स्त्री की दशा बहुत ही बुरी थी। उसको ढोर, गंवार, पशु के समान समझा जाता था। इसलिए धार्मिक स्थानों पर जाने की पाबंदी थी, उसको धार्मिक चिन्ह भी पहनने की आज्ञा नहीं थी। गुरु नानक पातशाह ने स्त्री जाति को न केवल समानता दी, बल्कि गुरबाणी 'भंडि होवै बंधानु' महावाक्य के अनुसार स्तुति भी की। *"धनु जननी जिनि जाइआ"* के अनुसार माता त्रिपता जी की पावन कोख से पैदा हुए श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्री की प्रशंसा करते हुए कहा है :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

माता त्रिपता जी जन्म गांव चाहल, जो लाहौर (पाकिस्तान) से १५ किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण-पूरब की ओर स्थित है, में पिता भाई रामा जी तथा माता भिराई जी के घर हुआ। ऐतिहासिक स्रोतों से पता चलता है कि माता त्रिपता जी का एक भाई क्रिशन जी तथा एक बहन माता लक्खो जी थे। ब्याह योग्य आयु होने पर माता त्रिपता जी की शादी माता बनारसी जी तथा शिव राम जी के सुपुत्र महिता कालू जी से हुई, जो उस वक्त राय भोइ की तलवंडी में रहते थे। राय भोइ की तलवंडी को आजकल श्री ननकाणा साहिब के नाम से जाना जाता है। 'श्री गुर नानक प्रकाश-पूरबारध' के अनुसार तलवंडी के निवासी श्री शिव राम जी तथा बीबी बनारसी जी ने अपने बड़े सुपुत्र महिता कालू जी का विवाह लाहौर के गांव चाहल के निवासी भाई रामा जी तथा माता भिराई जी की कुशल, सुशील, गुणवान सुपुत्री माता त्रिपता जी के साथ कर दिया :

सुत कालू पिख पित शिवरामू। पान ग्रहन किय कीरति धामू।
तिय पतिबरता गुणनिधि सोऊ। तिह सुशीलता कहिसक कोऊ? ॥८६॥

'पंजाब कोश' के अनुसार विद्वानों ने माता त्रिपता जी के स्वभाव को इस तरह अंकित किया है 'इह विभिंन सुभाओ ते रुचीआं वाली सुघड़ ते सुशील सुआणी सी। इस दा घरोगी जीवन उस समें दीआं उपरलीआ मद्ध श्रेणी दीआं पंजाबणां वरगा सी, जो सदीआं तो पिआर ते सिदक विच नेक पतनी, निग्घी भैण ते जान निसार करन वाली मां बणन के फरज़ अदा करदीआं होईआं सारा जीवन कुरबान कर दिंदीआं सन।'

विवाह के उपरांत लोक प्रसिद्ध लोकोक्ति 'सोई नार सुलक्खणी जिस पहिलां जाई लछमी' के अनुसार माता त्रिपता जी की पावन कोख सन् १४६४ ई (संवत् १५२१) में एक सुपुत्री का जन्म गांव चाहल में हुआ। ननिहाल गांव में पैदा होने के कारण इसका नाम 'नानकी' प्रसिद्ध हुआ। भाई संतोख सिंघ 'श्री गुर नानक प्रकाश-पूरबारध' में ज़िक्र करते हैं कि श्री महिता कालू तथा बीबी त्रिपता जी की इस सौभाग्यशाली जोड़ी

ने संतान की प्राप्ति हेतु बड़े लंबे समय तक प्रभु की आराधना करते हुए व्यतीत किया :

साध्वी पाइ काल बहु कालू। किये बरत तप कठन बिसालू।
चिरंकाल इव दंपति बीता। हरि पद पंकज जिन मन प्रीता ॥५७॥

महिता कालू जी तथा माता त्रिपता जी पर परमात्मा ने कृपा की और इनके गृह में सुशील कन्या ने जन्म लिया :

अस बिधि बिलसति अनिक बिलासा। दंपति उर धरिही सुत आसा।
साध्वी गरभ धरन पुन कीना। जनमी तनिया सुमति प्रबीना ॥५९॥

यह उस समय की बात है जब धरती पर पापों का बोझ बढ़ गया था। धर्म खत्म था तथा धरती पापियों के डर से भयभीत हो गई थी। उस वक्त धरती ने परम पिता परमेश्वर के आगे बड़ी अधीनगी से अरदास-विनती करते हुए मदद हेतु पुकारा, परमात्मा ने धरती को धीरज देते हुए उसके कष्ट दूर करने का भरोसा दिया तो धरती बहुत प्रसन्न हुई :

भयो भार धर पर अधिक धरम धरति नहिं धीर।
भाउ भगति नहिं जगत में बिकुल भई भय भीर ॥१५॥
एकुंकार अराधन कीना। भनति बेनती भई अधीना।
परमेसुर पर पुरख पुरातन। परम परावरनाथ सनातन ॥१६॥ . .
कलमल कलि के काल बिथारा। अबहि भार नहिं जाइ संभारा।
अति दुशतर दुख वेला भयो। बिन अविलंब जाति नहिं रहयो ॥१८॥ . .
धरम धाम धर धीरज दीनो। "पाई अलंब होइ दुख छीनो"।
सुनि करि गिरा गगन की छोनी। उर करि परम हरख मुख मोनी ॥२५॥ . .
काल बितीत भयो पशचाता। कालू रति लखकरि जगदाता।
होवौं पुत्र तास मैं जाई। अस विचार आए जगराई ॥६१॥

महिता कालू जी की पत्नी माता त्रिपता जी की कोख से संवत् १५२६ में उसकी दूसरी संतान श्री गुरु नानक देव जी ने जन्म लिया तो चारों ओर सौहावना तथा रमणीक वातावरण पैदा हो गया :

दुतिय गरभ को धारन कीना। पतिब्रत धरम जासु मन लीना।
जिउं दुतीआ को ब्रिंद्धति चंदू। तिह सम गरभ रूप सुखकंदू ॥६२॥ . .
संबत नौ खट सहस छबीसा। भो अवतार प्रगट जगदीशा।
भयो अचानक सभिनि उछाहा। बिन कारन मन लखि न सकाहा ॥७१॥ . .

बेबे नानकी जी के जन्म से पांच वर्ष बाद भागभरी माता त्रिपता जी के गृह उनके ससुराल गांव राय भोइ की तलवंडी में दाई दौलतां के हाथों नूरानी शख़्सियत श्री गुरु नानक देव जी ने जन्म लिया। गुरु नानक साहिब के जन्म के समय तथा उसके बाद ऐसी आलौकिक घटनाएं घटित हुईं कि रूहानियत का अनुभव रखने वाला हर शख़्स यह जान गया कि यह बालक इस कलयुगी संसार को दुखों के समुद्र में से निकालने हेतु पैदा हुआ है। तलवंडी राय भोइ का चौधरी राय बुलार भी जब श्री गुरु नानक देव जी को देखने आया तो उसको गुरु जी में इलाही ज्योति के दर्शन हुए।

माता त्रिपता जी बालक श्री गुरु नानक

देव जी की बहुत लाड़-प्यार से पालना करते। वो उनको झिड़कते और डांटते भी। बालक श्री गुरु नानक देव जी जब कभी बच्चों के साथ खेलने में मस्त हो जाते और ज्यादा देर तक घर नहीं आते। माता त्रिपता जी उनको बुलाकर लाते, उनके मिट्टी लगे हाथ-पांव धोकर, बहुत ही चाव से स्वादिष्ट पदार्थ बनाकर खिलाते :

पलना पर पौढावई कहि ललना ले अंक।
लालति मात बिसाल हित सूंघति बदन मयंक ॥२॥ . .
लगी धूर तन धूसर होए। अंब लेय अंबा अंग धोए।
मलिकरि मुख मज्जन करिवायो। पौंछ सरीर अंक बैसायो ॥९॥
झगली झीन नवीन पुन पहिराई तन तात।
पै को पान कराइ कै पौढाए कर मात ॥१०॥ . .
बिन बोले नहिं आलय आवहिं ॥ शिशू पशचात परिप महिं धावहिं।
जननी असन हकारि खुवावहि। नहिं अघाति देखति बल जावहि ॥१३॥

'तवारीख गुरू खालसा' के कर्त्ता ज्ञानी ज्ञान सिंघ श्री गुरु नानक देव जी के बचपन का ज़िक्र करते हुए बताते हैं कि, "जब श्री गुरु नानक देव जी सात वर्ष के हुए तो जो कुछ घर से बाहर ले जाते, वापिस न लाते। अन्न, वस्त्र, ज़ेवर, बर्तन, गरीबों को दे देते। माता त्रिपता जी तो उनकी धर्म चर्चा तथा अनेक शक्तियों को देखकर निश्चय कर बैठी थी, यह कोई अवतारी पुरुष है। जिस दिन से जन्मा है, लुटाता भी बहुत है किंतु हमारे घर पहले से भी दस गुना पदार्थ बढ़ा है और न ही किसी बुरे रास्ते पर लुटाता है। यह बात सोचकर माता जी गुरु जी को पदार्थ लुटाने से न रोकती बल्कि उनका पक्ष लेती।"

'श्री गुर नानक प्रकाश-पूरबारध' के अनुसार जब बालक श्री गुरु नानक देव जी अपने घर से ज़रूरत की वस्तुएं-- बर्तन, गहने, कपड़े, आदि बाहर ले जाकर गरीबों/फकीरों आदि को दे आते उस समय माता त्रिपता जी का एक और ममतामयी पक्ष सामने आता, वो जहां बालक श्री गुरु नानक देव जी को गुस्से में आकर डांटते थे, वहीं वो अपने सुपुत्र की आखों में आंसू बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। वो ममतावश पश्चाताप करते थे कि उन्होंने अपने पुत्र को क्यों डांटा? उस वक्त वो अपने मन को समझाते थे कि उनका सुपुत्र अभी बाल अवस्था में होने के कारण लाभ-हानि को नहीं पहचानता, बड़ा होकर सब कुछ समझ जाएगा :

भांजन भूखन बसन जे नित निकेत ते लेय।
जाइ निरसतहि जाइ तहिं जहिं अगात दीनेय ॥२२॥ . .
मुरिकरि निज घर आए जबिही। जननी हेरे रोसी तबही।
बूझन लगी, "कहां तैं गेरा? अब थो कर महिं, भई न देरा" ॥२४॥ . .
म्रिग अरभक से चकित चखु करे नीच डरि मात।
सजल भए झख दो मनो छोरति सरिता गात ॥२६॥ . .
पौछति ईछन स्वाछांनन छबि। छकी मोह मैं पिखि जननी तब।
पसचाताप करति चित मांही। हमरे सदन एक सुत आही ॥३१॥
बाल बैस इह आपन पर को। हान लाभ नहिं जानहि घर को।
वडो होइ समझहि सभि रीती। अब डरपावन की नहिं नीती ॥३२॥

माता त्रिपता जी का अपने लाड़ले सुपुत्र से प्यार जिताने का एक अन्य रूप हमारे समक्ष इस तरह भी आता है कि जब श्री गुरु नानक साहिब पिता महिता कालू जी के कहने पर पशु चराने बाहर खेतों में जाते हैं तो मां अपने लाड़ले सुपुत्र से बलिहार जाती है, उसको अपनी गोद में बैठाकर लाड़ लड़ाती हुई, उसके मुंह से धूल, पसीना आदि साफ करती हुई ममतावश होकर कहती है कि वो खेतों में बाहर न जाया करे बल्कि उसकी नज़रों के सामने ही रहा करे :

अंक बसाइ मात बल जाई। बदन पौंछ देखहि हित लाई।
करति दुलारसंग प्रियबानी। तात न कीजै अब बन जानी ॥५२॥

श्री गुरु नानक साहिब कुछ बड़े हुए तो वो अकेले घर में लेटे रहते या संतों-महापुरुषों की आमद होने पर उनके साथ विचार-विमर्श करते रहते। यहां तक कि वो अब अपने बचपन के बेलियों/मित्रों को कम ही मिलते। माता त्रिपता जी को उनकी बड़ी चिंता होने लगी कि कहीं उनके लाड़ले सुपुत्र को कोई रोग न हो। उस वक्त माता जी गुरु साहिब को फकीरों की संगत का त्याग कर दुनियावी कार्य करने हेतु प्रेरित करते। मां को संतान की सबसे ज्यादा चिंता होती है। इसलिए जब माता त्रिपता जी से सुपुत्र की यह हालत बर्दाश्त न हुई तो उन्होंने हरिदास वैद को घर बुला लिया। वैद गुरु साहिब की नबज़ पकड़कर रोग ढूंढता रहा, किंतु गुरु साहिब की आध्यात्मिक अवस्था साधारण वैद की समझ में आने वाली नहीं थी।

एक बार महिता कालू जी ने २० रुपए देकर श्री गुरु नानक देव जी को व्यापार करने हेतु भेजा। गुरु जी उन पैसों से भूखे साधुओं को प्रशादा छकाकर, "सच्चा सौदा" कर गांव से बाहर चले गए। महिता कालू जी का उस समय क्रोध में आना स्वाभाविक था, किंतु माता त्रिपता जी ने अपनी ममता से जिस तरह गुरु जी को पिता जी के क्रोध से बचाया वो भी माता त्रिपता जी की प्रतिभा की विलक्षण पहचान थी। जहां वो खुद अपने सुपुत्र को महिता कालू जी के गुस्से से बचाने की कोशिश करते हैं, वहीं वो अपनी सुपुत्री बेबे नानकी जी को तथा घरेलु नौकरों को महिता कालू जी के पीछे भेजते हैं ताकि गुरु नानक साहिब जी को महिता कालू जी के गुस्से से बचा सकें :

तुरत तबहि तनिया को भेजा। पति रिस ते उठि धरक करेजा।
बहुरो दासी दास पठाए। हित बिलोकने लोक सिधाए ॥२३॥

माता त्रिपता जी तथा महिता कालू जी की सुपुत्री तथा श्री गुरु नानक देव जी की बड़ी बहन बेबे नानकी जी को राय बुलार भी अपनी पुत्री के समान समझता था, इसलिए उसने बेबे नानकी जी का विवाह सुलतानपुर लोधी के क्षत्रिय भाई जै राम जो कि सुलतानपुर के नवाब दौलत ख़ान का भरोसे योग्य दीवान था, से करवा दिया :

सुता नानकी जो हुती धाम कालू। गुनं खान मानो सरूपं बिसालू।
सुता के समानं लखयो तांहि राई। भले थान कीनी सुता की सगाई ॥२॥

क्रमशः

सिक्ख स्त्री आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

*-डॉ. जगजीत कौर**

आज के आधुनिक दौर में सिक्ख बच्चियों, बहनों, यहां तक कि बुजुर्ग माताओं, से सुनने को मिलता है, वक्त बदल गया है, क्या करें वक्त के साथ बदलना पड़ता है। वास्तव में समय बदल चुका है। इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश कर चुकी सिक्ख स्त्री की सोच भी बदल चुकी है। सांस्कृतियां बदल चुकी हैं। रहन-सहन, खाना-पीना, पहरावा, समूची जीवन-युक्ति ही बदल गई है। बदलाव सृष्टि का नियम है। 'Change is law of nature' बदलाव प्रगति का चिन्ह है। एक जगह पर रुका पानी भी बदबू देने लगता है। जल भी बहता ही साफ-सुथरा, सेहतमंद माना जाता है। इसी तरह वही सभ्यता, संस्कृति विकसित मानी जाती है, जो प्रगतिशील होती है, प्राकृतिक नज़ारे भी कई तरह के रंग बदलते हैं। मौसम में भी कभी तपती-जलती गर्मी, कभी ठंडी शीतल फुहारों का स्पर्श प्रदान करती वर्षा ऋतु, कभी हिम शीत बर्फानी हवाएं, कभी शिशिर और फिर रंग-बिरंगी महकती मुस्कराती बसंत ऋतु। इस पर ही कवि शैले ने 'Ode to the west wind' कविता में कहा था, "O wind! If winter Comes, can spring be far behind?"

यद्यपि हेमंत ऋतु की कड़कती सर्दी शिशिर (पतझड़) लाई है तो बसंत की रंगीनी कहीं पीछे थोड़े रहेगी? अपने समय के अनुसार वो भी आएगी किंतु यह बदलाव तो खेड़ा (आनंद) लाता है, इस खेड़े से *"मउली धरती मउलिआ अकासु ॥"* होता है और यह आत्म प्रगास का प्रतीक है। यह आत्म-प्रगास विकास तथा जीवंतता है क्योंकि यह विकास, यह बदलाव सृष्टि के अटल नियम, अपने मूलभूत अस्तित्व के साथ जुड़ा है किंतु मूलभूत से टूटी हुई तरक्की, तरक्की नहीं होती क्योंकि मूलभूत से उखड़ी के पांवों तले की ज़मीन, जड़, सतह (Base) कमज़ोर होती है। मूल से उखड़े पांव तो मनुष्य को भटका देते हैं। मूल से उखड़ा विकास-क्रम मनुष्य को जीवन के समतल रास्ते से भटकाकर बीयाबान की कंटीली झाड़ियों में उलझा देता है, जहां तक उसके मूलभूत से ही खो जाने की संभावना बनी रहती है।

आज यही अवस्था मेरी सिक्ख बहन की बनी हुई है। आज की तथाकथित आधुनिकता, यह पश्चिम का प्रभाव, यह आज के मीडिए द्वारा पैदा की गयी व्यापारिक झूठी, आडंबरी पब्लीसिटी, सस्ते फैशन, रंग-तमाशे, दिखावे जिसमें स्त्री की नग्नता, शारीरिक सुंदरता के झूठे प्रदर्शन समाज का सारा माहौल, सारा वातावरण ही प्रदूषित हो रहा है। मेरी सिक्ख बहन क्या इसको ही बदलाव कहती है? क्या यही है हमारी आज की बदली सभ्यता-संस्कृति? क्या यह बदलाव सुखमयी है जो उसको गिरावट की ओर धकेल रहा है; जिसको वह नवीन सोच कहती है। जिसकी तुलना में वो सच और उच्चता को पुरानी बात कहती है, बताती है, ये सब पुरानी मान्यताएं हैं?

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू पी)-२४७००१, मो +९१९४१२४-८०२६६*

वो भूल गई है कि उसको तो विरासत में एक ऐसी सच्ची व उच्च सोच दी गई थी जो सदैव सच है और सच ही रहेगी। *"सचु पुराणा होवै नाही"* झूठ का प्रभाव उड़-पुड़ सकता है परंतु *"कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥"* गुरु नानक पातशाह जी ने उसको ऐसे दिव्य गुणों से सराबोर सोच दी है जो नित्य नूतन है, नित्य निर्मल है, शुद्ध, निर्मल कंचन की भांति और नित्य प्रकाशमान ज्योति रूप है। यह था बदलाव जो गुरदेव पिता जी ने १५वीं शताब्दी में उसके ऊपर से गुलामी, ज़लालत तथा आलस्य का जूला उतारकर उसको खुले-डुले प्रकाशमान स्वच्छ वातावरण में आज़ाद उडारियां मारने का अवसर बख़्शिश किया। नहीं तो इससे पहले क्या था? मध्यकालीन सोच के अधीन स्त्री पांव की जूती समझी जाती थी, शूद्र, ढोर, गंवार, मूर्ख, झूठ-फरेब की मूर्ति, काली नागिन, अधूरी, परमात्मा की खूबसूरत भूल, पुरुष के रास्ते का पत्थर, रुकावट, नर्क द्वारी, मुक्ति की बाधिक और पता नहीं कितने-कितने नकारात्मक विशेषणों से जुड़ी थी। पशुओं, गायों, भैंसों की तरह इसकी बाज़ार में खुलेआम खरीदो-फरोखत की जाती थी। अन्य पदार्थों की तरह इसका भी दाम लगाया जाता था। इसकी Material Value थी।

किंतु धन्य मेरे गुरु जी, श्री गुरु नानक देव जी जिन्होंने स्त्री के हक में नारा बुलंद किया, 'भंडि जंमीऐ, भंडि निंमीऐ' यह बदनामी करने योग्य नहीं है। यह तो पूरे विश्व की सृष्टि की जीवन-युक्ति है। 'भंडहु चलै राहु' सारी सृष्टि के ढांचे (System) को बांधने वाली है, धुरा है, बंधानु है। सृष्टि को अनुशासन में रखने वाली है, बड़े-बड़े राजा, महाराजा, चक्रवर्ती सम्राटों की जन्म दाती है। अकाल पुरख वाहिगुरु जी की सुंदर कल्पना है। सौंदर्य की प्रतीक है। सुहज व सौंदर्य बोध (Aesthetic Experience) का प्रतीक है। कला, कविता, साहित्य, मूर्ति कला तथा सम्पूर्ण प्रकृति की सुंदरता है। इसको बुरा मत कहो, *"एका पुरख सबाई नार ॥"* सारी सृष्टि जीवात्मा स्त्री का रूप है। पुरष भी स्त्री-गुणों के बिना अधूरा है। स्त्री सुलभ, दया, कोमलता, सहनशीलता, संयम, शालीनता के साथ-साथ बुद्धि-विवेक पुरुष को पूर्ण बनाते हैं। पुरुष विवेक और स्त्री बुद्धि है। अकाल पुरख वाहिगुरु जी की सृष्टि रचना में सहायक तत्व है।

गुरु पातशाह ने स्त्री को जो सम्मान बख़्शा है, दस गुरु साहिबान जी ने इसका जो पक्ष लिया, इसको सम्मानित किया, उससे यह सही अर्थों में शोभावंती नार, सौहागन, बतीह गुण सुलखणी, *"सभ परवारै माहि सरेसट ॥ मती देवी देवर जेसट ॥"* बनी। इसमें आत्म बल आया। इसकी मानसिकता चढ़दी कला में रही। इतिहास साक्षी है कि इसने सिक्ख पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सुनहरी इतिहास की सृजना की है। रोज़ाना अरदास में याद करते हैं जिन्हां सिंघां सिंघनीआं ने. . . समय गुरु-काल का हो, श्री अनंदपुर साहिब की जंगों का हो, भंगाणी एवं नदौण की जंगों का हो, कीरतपुर साहिब की जंगों का हो या घल्लूघारों का समय हो, सिंघ सभा लहर, गुरुद्वारा सुधार लहर के मोर्चों का हो या सिक्ख राज्य की रूप रेखा का हो तथा बीसवीं शताब्दी के मध्य तक स्त्री ने गुरु जी द्वारा बख़्शिश सम्मान के सदका ही एक शोभावंती की भूमिका अदा की है।

किंतु आज क्या हो गया है, मेरी सिक्ख बहन, मेरी सिक्ख बच्ची को? कैसे अपनी विरासत से आनाकानी करके 'बिपरन की रीत' के बहाव में बहती जा रही है? दशमेश पिता

की पावन गोद छोड़कर वो उस अंधेरे रास्ते पर चल पड़ी है, जहां गुरद्वारे सत्संग, गुरबाणी, पाठ, कथा, कीर्तन में शमूलियत करने का उसके पास समय ही नहीं है। वैसे Beauty Parlours में बाल कटवाने, किट्टी पार्टी में पत्ते खेलने अथवा तंबोला खेलने, गंदे लच्चर गीत सुनने, नाच, डांस, रंग, रास आदि बुरे खेल खेलने के लिए उसके पास समय ही समय है। कई प्रकार के नशे पीने-पिलाने के साधन 'मद' को ही नयी संस्कृति व सभ्यता मसझ रही है।

वो क्यूं आनाकानी करने लगी, भूल गई कि वो एक सिक्ख परिवार की रीड़ की हड्डी है? एक मज़बूत थंम (स्तंभ) है। पूरे परिवार का ढांचा उसके विचारों पर निर्भर है। वो एक सिक्ख मां है, सिक्ख पत्नी है, सिक्ख पुत्री है, बहु है, बहन है, उसके सामने तो सिक्ख विरासत की अमीरी पथ प्रदर्शक है। बेबे नानकी जी जैसी प्यार की मूर्त बहन है, भाभी, माता सुलक्खणी जी को प्यार करती, अश-अश करती ननद है। बीबी भानी जी प्यार-सेवा की मूर्त तथा अजर सहन करने वाले। माता गंगा जी ११ वर्ष के बालिक (गुरु) हरिगोबिंद साहिब जी को मीरी-पीरी के मालिक बनाने वाली दल भंजन गुर सूरमा की माता। बीबी अमरो जी जैसी बहु जिसने सारे परिवार की काया पलट दी। श्री गुरु अमरदास जी जैसे नितानों के तान, गुरु की प्रेरणा शक्ति बनी। बीबी वीरो जी ने सुपुत्र युद्ध में शहीद करवा दिए। माता दमोदरी जी ने ऐसी शिक्षा दी बच्ची वीरो जी को कि पूरे ससुराल परिवार में अपनी नेकी की मिसाल बनाए रखी। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की सुपत्नी माता गुजरी जी जिन्होंने दूसरों को सुख देने के लिए खुद गुरु-पति को शीश देने हेतु भेजा, अपने हाथों से अंतिम संस्कार किया। नौ वर्ष के बालिक श्री गुरु गोबिंद राय जी को ऐसी *"दीनी भांति-भांति की सिछा ॥"* शिक्षा दी कि सरवंशदानी खालसा पंथ के सृजक बन गए। माता गुजरी जी के चरणों पर नतमस्तक है। माता जी के अद्वितीय गुणों का गायन कर रहा है। है कोई ऐसी शख़्सियत जिसने दूध मुंहे बच्चों को ऐसा शूरवीरता का पाठ पढ़ाया हो। छोटे-छोटे बालों को शहादत का रास्ता दर्शाया हो। बच्चो! बेशक दीवारों में चिने जाना, बेशक जानें कुर्बान कर देना, परंतु सिक्खी सिदक पर दृढ़ रहना। तो फिर बच्चे दिलेरी से दीवारों में चिने गए, शहीद हो गए और माता जी ने भी शहादत का जाम पी लिया। है विश्व में किसी धर्म-मूर्त माता की लासानी शहादत की मिसाल। इसके बाद भी माता सुंदरी जी, माता साहिब कौर जी ने सरवंश वारकर भी हिम्मत नहीं छोड़ी। अति कष्टदायक समय में भी पंथ की बागडोर संभाले रखी। हुक्मनामे जारी किए, पंथ को एकमुट्ठ समेटे रखा। श्री मुकतसर साहिब की जंग के समय माता भागो जी ने जत्थेबंदी की जो रिवायत कायम की वो सिक्ख घल्लूघारों एवं मोर्चों के समय सिक्ख स्त्री के लिए पथ पर्दशक बनी। छोटे-छोटे गोदी उठाए हुए बाल जिन्होंने शहीद करवा दिए। इतने दुख/कष्ट सहन कर भी सिक्ख बीबियों ने रहरासि साहिब का पाठ करना, सिंघ जंगलों में भटकते फिरते, कोई पता नहीं वापिस घर आएंगे या नहीं तब भी कहना परमात्मा तेरा शुक्र है! आपके भाणे में दिन सुखों में व्यतीत हुआ और रात सुख की व्यतीत हो। सिक्ख राज्य कायम करते समय रानी सदा कौर, रानी जिंद कौर को कौन भूल सकता है? यह थी सिक्ख स्त्री की भूमिका।

भाई तारू सिंघ जी की खोपड़ी उतार दी गई और भाई तारू सिंघ की माता और बहन लंगर बनाकर जंगलों में छिपे सिक्खों तक पहुंचाने

की सेवा करती रहीं और आज मेरे जवान बच्चे, पुरुष पतित हो रहे हैं। केशों की संभाल करने से संकोच करते हैं। परंतु मेरी बहनों के कान पर जूं नहीं रेंगती। कई Modern बच्चियां, बहनें तो अपने बच्चों के केशों पर खुद कैंची चलाती है, नाई के पास ले जाती हैं कि हमारे पास केश संभालने, धोने, तेल लगाने, कंघा करने, जूड़ा करने, दसतार बांधने की फुर्सत नहीं है। शहरी स्त्री के पास बहाना है नौकरी का अथवा घर में काम ज्यादा होने का, गांव की स्त्रियां भी व्यस्त तो रहती हैं किंतु केशों की संभाल, केशों की महानता सम्बंधी शिक्षा की कमी है, इसलिए वो जागरुक नहीं हैं। अगर परिवारों की ओर दृष्टि डालें तो परिवार बिखर रहे हैं, आपसी प्रेम-प्यार नहीं रहा। परस्पर वैर-विरोध चल रहे हैं। बुजुर्गों की संभाल नहीं होती। उनको घर के व्यर्थ पड़े सामान की तरह समझा जाता है। घर में बड़े बुजुर्गों की इज्ज़त नहीं है। वो रुल रहे हैं। इधर सिक्ख समाज में तालाक और दहेज जैसी बुराइयां व्यापत हैं। पुरुष एवं युवा शक्ति शराब और अन्य नशीले पदार्थों के सेवन द्वारा अपनी युवक-शक्ति को नष्ट कर रहा है। रचनात्मक कार्यों में उसकी रुचि नहीं रही। खेलों, कला, साहित्य, उच्च शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान टैक्नालोजी में हम पीछे रह गए हैं। बहुत दुख होता है रिपोर्ट पढ़कर कि गुरु साहिबान के नाम पर बसने वाला पंजाब आज शिक्षा तथा अन्य रचनात्मक क्षेत्रों में इतने निचले स्तर पर है किंतु मादा भ्रूण हत्या, नशे और अन्य बुरें कामों में इतना ऊपर है। सच्ची किरत का रास्ता तो हमारे भाई जैसे भूल ही गए हैं। नाम जपने, वंड (बांटकर) छकने और किरत करने का सिद्धांत गुरु साहिब ने हमें बख़्शिश किया था। किंतु मेरी बीबियों, बहनों की ज़रूरतें इतनी बढ़ गई हैं कि उनके पास इसकी ओर ध्यान देने की फुर्सत नहीं है। उनको तो ऐश-प्रस्ती फैशनों के लिए पैसा चाहिए। पुरुष चाहे किसी भी साधन से कमा कर लाए।

मेरी बीबियो! बहनो! बच्चियो! इस मोह जाल, भ्रम जाल से बाहर निकलो। ये नक्ली कास्मेटिकस आपकी सुंदरता नहीं। ये रंग-बिरंगे केश, भरवट्टे, ये आपकी भीतर की सुंदरता के लिखायक नहीं हैं, भीतरली सुंदरता दिव्य गुणों के प्रकाश से उत्पन्न होती है। ये दैवी गुण, गुरमति से जुड़ने से, गुरबाणी में मन जोड़ने से, रहित मर्यादा के साथ पूर्ण रूप में जुड़ने से, शबद-गुरु में चित-वृत्ति जोड़ने से प्राप्त होंगे। महान गुरबाणी, सच्ची बाणी जो अनंत हीरे, माणक, मोतियों व जवाहरातों का अथाह भंडार हैं, इस पावन बाणी को अगर जीवन में धारण कर लें तो मन प्रकाशित हो उठेगा। भीतर का नूर चेहरे को प्रकाशित कर देगा। मनुष्य इतना नूरो नूर हो जाएगा कि अन्य किसी नकली प्रसाधक की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। नाम अमृत का रस, गुरबाणी का मीठा-रस, भीतर रस ही भर देता है। मिठास ही मिठास उत्पन्न करता है। इस रस के भोगी के अन्य सारे रस बिसर जाते हैं। इस मिठास और रस का पान करने से अन्य किसी कलब्ब पार्टी में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

आएं! अकाल पुरख वाहिगुरु जी से आशीष लेकर, दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बताए हुए मार्ग पर चलें। बिपरन की रीत बेमुख गुरु-घर के दोषियों के रास्ते त्यागकर प्रभु-पति की सौहागन सुलक्खणाी नारी बनें। गुरमति के प्रकाश में समूचे परिवार की अगुवाई करें और खालसा पंथ की सदैवकालीन शान बरक़रार रखें। अपनी अमीर विरासत में और सुनहरी पन्ने जोड़ें।

गुरबाणी चिंतनधारा : ९८

आसा की वार : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

सलोकु म:१ ॥
सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥
सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥
सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥
सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥
सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥
सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥
सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥
सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥
सची तेरी सिफति सची सालाह ॥
सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥
नानक सचु धिआइनि सचु ॥
जो मरि जंमे सु कचु निकचु ॥१॥ (पन्ना ४६३)

उपरोक्त सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह जी ने उस सत्य स्वरूप परमेश्वर की संपूर्ण रचना को भी सत्य स्वरूप माना है क्योंकि जिसमें भी उस सच्चे का निवास है वह जन, वह कण कैसे मिथ्या हो सकता है? अर्थात् जब कोई रचना उस परमेश्वर के बिना है ही नहीं तो उसे कोई झूठ या मिथ्या कैसे मान सकता है? अत: गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि प्रभु का सिमरन करते हुए उसे सत्य स्वरूप मानने वाले ही सत्य हैं बाकी जो इस तथ्य (हकीकत) को नहीं पहचानते वे झूठे और कच्चे हैं, वे हमेशा आवागमन के चक्करों में ही भटकते रहते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि हे परमेश्वर! तेरे द्वारा निर्मित अर्थात् बनाए हुए खंड तथा ब्रह्मांड सभी सच्चे हैं। क्योंकि उसके निर्माण का सिलसिला सदैव अटल है। हे प्रभु जी! तेरे द्वारा सृजित समस्त लोक तथा सभी आकार भी सदैव कायम रहने वाले हैं। तेरे समस्त कार्य और सभी विचार भी नाश रहित हैं। हे परमेश्वर! तेरा राज्य अर्थात् तेरी बादशाही तथा दरबार अटल है। तेरा आदेश (हुक्म) सच्चा है और तेरा शाही फ़रमान भी सच्चा है। तेरी रहमतें सदा स्थिर हैं (हमेशा कायम रहने वाली हैं); तेरी रहमतों का निशान भी अटल है अर्थात् जो पदार्थ निरंतर युगों से जीवों को तूं दे रहा है वो भी सदा कायम रहने वाले हैं अर्थात् कभी समाप्त न होने वाले हैं। लाखों-करोड़ों जीव जो तेरा सिमरन कर रहे हैं वे भी सत्य हैं अर्थात् तुझे सत्य स्वरूप मानते हुए तेरा सिमरन करने वालों का सिलसिला भी अटल है। सब कुछ ही सच्चे मालिक प्रभु के बल एवं शक्ति के अधीन है अर्थात् संपूर्ण रचना का आश्रय (आधार) प्रभु आप ही है।

तेरी स्तुति (सिफ्त-सलाह) करना भी तेरा एक अटल नियम है। हे प्रभु जी! यह सम्पूर्ण रचना तेरा कभी न समाप्त होने वाला निश्चय प्रबंध है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जो जीव उस अविनाशी (सदा स्थिर) प्रभु का सिमरन करते हैं वो भी उसी सच्चे परमेश्वर का स्वरूप हो जाते हैं और जो जन्म-मरन के चक्कर में पड़े हैं, वे अभी बिल्कुल कच्चे हैं अर्थात् वे वास्तविक ज्योति (नूर) में लीन नहीं हुए।

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

उपरोक्त सलोक में गुरु नानक पातशाह जी ने एक गूढ़ रहस्य का उद्घाटन किया है, वह यह कि इस संसार को मिथ्या माना गया है; ज्यादातर धर्मों के लोग इस संसार की हर वस्तु, हर जीव को नश्वर मानते हैं, गुरबाणी में भी बहुतायता से इस तरह के उदाहरण प्रस्तुत हैं, जिससे संसार की हर चीज़ को फानी माना गया है जैसा कि गुरु नानक पातशाह की बाणी है :

दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥
मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ॥१॥ (पन्ना ७२१)

अर्थात् यह दुनिया नाशवान है इस बात को हृदय में सत्य कर जानो, मेरे सिर के केश मौत के दूत इज़राईल ने पकड़े हुए हैं, हे मन! तू कुछ नहीं समझता।

वास्तव में वह परमेश्वर युगों के प्रारंभ में, वर्तमान में और जब इस रचना को प्रभु समेट लेगा तब भी सत्य स्वरूप ही रहेगा जैसा कि गुरु नानक पातशाह जी की बाणी जपु जी साहिब में अंकित सलोक में स्पष्ट किया गया है :

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ (पन्ना १)

वस्तुत: जब तक जीव सत्य स्वरूप परमेश्वर से पूर्णतया जुड़ा हुआ है तब तक वह भी सत्य स्वरूप है; लेकिन उससे अलग अस्तित्व कायम करने की विचार मात्र से ही जगत रचना झूठ साबित हो जाती है क्योंकि जब जर्रें-जर्रें में उस सत्य स्वरूप परमेश्वर का निवास है तब तक कुछ भी मिथ्या कैसे हो सकता है? लेकिन उस मूल से टूटते ही सब कुछ नश्वर ही जानो। इसलिए इस सलोक में सच्चे और झूठे की पहचान बताई गई है जो सत्य स्वरूप प्रभु से जुड़ा हुआ है वह सत्य स्वरूप ही जानो अन्यथा शेष जो ईश्वर से टूटे हुए हैं उन्हें बिल्कुल कच्चे अथवा झूठे ही जानो।

म: १ ॥
वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥
वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥
वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥
वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥
वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥
वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥
वडी वडिआई जा आपे आपि ॥
नानक कार न कथनी जाइ ॥
कीता करणा सरब रजाइ ॥२॥

इस पावन सलोक में गुरु नानक पातशाह जी ने उस परमेश्वर के बेअंत गुणों का ज़िक्र करते हुए यह स्पष्ट किया है कि उस प्रभु की स्तुति पूर्णतया नहीं की जा सकती क्योंकि उसकी महिमा अपरंपार है और सम्पूर्ण रचना उसके हुक्म के अधीन है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि उस प्रभु की स्तुति नहीं की जा सकती अर्थात् उसकी महिमा कथन से परे है। अकाल पुरख वाहिगुरु का बड़प्पन इसलिए है कि उसके नाम की प्रसिद्धि बड़ी है। कहने से तात्पर्य है कि वह परमेश्वर बड़ा विख्यात है, उसका नाम हर जगह जाना और माना जाता है। प्रभु की महानता इसलिए भी है कि उसका न्याय सच्चा है। वह इसलिए भी बड़ा (महान) माना जाता है क्योंकि उसका आसन अडोल (स्थिर) है। उस परमेश्वर की यह एक बड़ी उपमा है कि वह सब की पुकार सुनता है अर्थात् सबकी विनतियां प्रवान कर लेता है। वह प्रभु इसलिए भी महान है कि वह बिना बोले ही सबके दिलों के भावों को जान लेता है अर्थात् वह अन्तर्यामी है, घट-घट की जानने वाला है। प्रभु का यह भी एक

बड़ा महान गुण है कि वह किसी से विचार-विमर्श करके किसी को दातें नहीं बख़्शता अर्थात् किसी भी प्राणी को कुछ भी देने के लिए उसे किसी से भी सलाह-मशवरा नहीं करना पड़ता। इस ईश्वर की बड़ाई इसलिए भी है क्योंकि उस जैसा वह आप ही है अन्य कोई भी नहीं। अंतिम पंक्ति में श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि उस परमेश्वर की कुदरत को कथन नहीं किया जा सकता उसने जो अब तक किया और जो करेगा वह सब कुछ उसकी रज़ा में ही है अर्थात् उसके हुक्म से परे कुछ भी नहीं।

वस्तुत: परमेश्वर बेअंत है, उसकी महिमा बेअंत, उसका हुक्म भी अपार है। गुरबाणी में एक अकाल पुरख की महिमा का गायन बार-बार किया गया है। जपु जी साहिब में भी परमेश्वर के नाम की महिमा करते हुए गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं :

वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥
ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ *(पन्ना ५)*

ऐसा सर्वकला समर्थ प्रभु दुनिया में किसी से सलाह-मशवरा नहीं करता जैसा कि दुनिया वालों को करना पड़ता है, गुरबाणी में इसी भाव के दर्शन अन्यत्र भी होते हैं यथा :

बीओ पूछि न मसलति धरै ॥
जो किछु करै सु आपहि करै ॥ *(पन्ना ८६३)*

अत: हर पल जीव को उस सर्वकला समर्थ प्रभु के भय, अदब में रहते हुए उस परमेश्वर का गुणगान करना चाहिए। उस परमेश्वर का अंत नहीं पाया जा सकता, लेकिन गुण गाते-गाते वो गुण जीव के हृदय में बसने शुरू हो जाते हैं और अवगुण उस जगह पर फिर ठहर नहीं सकते और हमारा बेशकीमती जीवन गुरु-कृपा से सफल हो जाता है।

महला २ ॥
इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥
इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥
इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥
एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥
नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥३॥

उपरोक्त सलोक दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी का उच्चारण किया हुआ है; जिसमें गुरु साहिब ने इस संसार को सत्य का घर माना है क्योंकि उस सच्चे परमेश्वर का सर्वत्र निवास है और जीव उसी के हुक्म के अधीन है; उसी के हुक्म में कोई तो भवसागर से पार हो जाता है तो कोई माया के प्रपंचों में गलतान होकर अपना विनाश कर बैठता है। अत: जीवन की सफलता एवं विनाश उसी के हुक्म के अधीन है।

श्री गुरु अंगद देव जी पावन फरमान करते हैं कि यह संसार उस पारब्रह्म परमेश्वर के रहने का एक छोटा-सा ठिकाना है और इस संसार रूपी घर में वह सच्चा मालिक प्रभु बस रहा है अर्थात् इस जगत रूपी कोठरी में सच्चे परमेश्वर का निवास है। इस संसार के अनेक जीवों को वह प्रभु अपने हुक्मानुसार इस संसार रूपी भव सागर से बचा कर अपने चरणों में लीन रखता है और कईयों को अपने हुक्म के अनुसार ही इस भवसागर में डूबो देता है अर्थात् उसका विनाश कर देता है। अनेक जीवों को वह परमात्मा अपने आदेशानुसार माया के प्रपंच से बचा लेता है और अनेकों को इसी के मोह में गलतान कर देता है और यह भी कहा नहीं जा सकता है कि वह परमेश्वर किसका बेड़ा पार लगा देगा अर्थात् किस

जीव पर कृपा करके उसके कार्य सम्पूर्ण कर देगा। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि जिस भाग्यशाली मनुष्य को प्रभु आप कृपा करके आत्म प्रकाश बख़्शेगा, उसी को गुरमुख जानना चाहिए। गुरमुख व्यक्ति ही ऐसा जाना जाता है जिसे परमेश्वर स्वयं अपने आप से प्रकाशित कर देता है।

उपरोक्त सलोक में गुरु साहिब जी ने इस संसार को सच्चे परमेश्वर का ठिकाना माना है इस प्रकार संसार को मिथ्या (झूठ) नहीं माना जा सकता, लेकिन इस संदर्भ में एक तथ्य उल्लेखनीय है कि जब-जब संसार के जीव सत्य स्वरूप ईश्वर की मौजूदगी को अनुभव करते हैं तब-तब इस संसार का जर्रा-जर्रा सत्य स्वरूप है, लेकिन पदार्थ वाहिता या स्वार्थ वश जब-जब संसार के जीव ईश्वर की मौजूदगी का एहसास न करते हुए अहंकार वश स्वयं में गलतान हो जाते हैं तभी माया के प्रपंचों में फंसे हुए जीव संसार रूपी भवसागर में डूब जाते हैं अर्थात् उनका विनाश हो जाता है। लेकिन कब किस पर रहमत करके प्रभु विवेक, बुद्धि बख़्श दे इस भेद को भी कोई नहीं जान सकता। इसलिए गुरबाणी में उस परमेश्वर से जीव हृदय में नाम का प्रकाश होने हेतु याचना करता है यथा बाणी का फरमान है :

दास तेरे की बेनती रिद करि परगासु ॥
तुम्हरी क्रिपा ते पारब्रहम दोखन को नासु ॥
(पन्ना ८१८)

क्योंकि प्रभु कृपा से ही दोषों/विकारों का निवारण होता है और हृदय में सत्य का प्रकाश।

वस्तुत : सत्य स्वरूप परमेश्वर के बिना सब झूठ का पसारा है अन्यथा सत्य से जुड़े हुए जीवों के लिए सर्वत्र वाहिगुरु का निवास है यथा गुरबाणी प्रमाण है :

सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नही कोई ॥ *(पन्ना ४८५)*

अत: स्पष्ट है सर्वत्र में अपनी मौजूदगी का एहसास और विश्वास भी प्रभु आप ही रखवाता है।

पउड़ी ॥
नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥
ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥
थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥
तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥
लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥२॥

इस पउड़ी में गुरु पातशाह ने समझाया है कि किस प्रकार उस परमेश्वर ने यह संसार रचकर जीव की उत्पति करके किस प्रकार उसके हृदय में धर्मराज को बिठा रखा है। वहां केवल सच का न्याय होता है, झूठे व्यक्ति का वहां कोई ठौर-ठिकाना नहीं है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि उस परिपूर्ण परमेश्वर ने जीवों की उत्पति करके उन जीवों के सिर पर धर्मराज को स्थापित किया हुआ है जो जीवों द्वारा किए गए कर्मों का लेखा-जोखा रखे अर्थात् जीव जैसा कर्म करे धर्मराज उसे साथ ही लिखता रहे और वहां धर्मराज की कचहरी में केवल सच द्वारा ही फैसला होता है झूठे को अर्थात् मंदे (बुरे) कर्म करने वालों को चुनकर बाहर निकाल दिया जाता है। झूठ-फरेब के धंधे करने वालों को वहां (मालिक की दरगाह) में कोई जगह नहीं मिलती बल्कि उनके मुंह काले करके उन्हें नर्क की आग में धकेल दिया जाता

है। परंतु हे परमेश्वर! जो जीव तेरे नाम में लीन थे अर्थात् तेरे नाम के रंग में रंगे हुए थे वे (जीवन रूपी) बाज़ी जीत गए लेकिन ठगी (धोखा-फरेब) करने वाले मनुष्य जीवन की बाज़ी हार कर जाते हैं। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में फिर स्पष्ट करते हैं कि हे प्रभु! तूने धर्मराज को जीवों के द्वारा किए गए कर्मों का लेखा (हिसाब-किताब) लिखने हेतु उन पर नियुक्त किया हुआ है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह ने जीव को सुचेत किया है कि जीव को कर्म करते हुए सतर्क रहना चाहिए क्योंकि उसके प्रत्येक कर्म का लेखा-जोखा उस परमेश्वर के द्वारा नियुक्त धर्मराज रख रहा है और उस प्रभु ने फिर प्रत्येक जीव के प्रत्येक कर्म का फल भी भुगतवाना है। इसलिए गुरबाणी में अनेक उदाहरणों द्वारा कर्म एवं कर्म फल के बारे में जीवों को समझाया गया है जैसा कि जपु जी साहिब की बाणी में श्री गुरु नानक देव जी ने बड़ा सुंदर उदाहरण दिया है कि ये पाप और पुण्य कर्म केवल कहने मात्र के लिए नहीं है। इन्हें इस कर्म भूमि (मनुष्य जीवन) में करते हुए संस्कार रूप में जीव अपने साथ लेकर जाता है और अपने द्वारा बोए गए बीजों अर्थात् किए गए अच्छे या बुरे कर्मों का फल भी स्वयं भुगतता है यथा :

पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥ (पन्ना ४)

अतः स्पष्ट है मन-वचन-कर्म से जीव जैसा भी कर्म करेगा उसे उसका फल अवश्य मिलेगा यथा :

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥ (पन्ना १३४)

इसलिए गुरबाणी हमें नेक कर्म करने हेतु प्रेरित करती है। जिसे गुरबाणी आशय अनुसार पावन पंक्ति से समझा जा सकता है।

जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ (पन्ना ४७४)

अतः विष बोकर कोई अमृत की अभिलाषा रखे तो इससे बड़ी मूर्खता और क्या हो सकती है? वास्तव में हम कलयुगी जीव कर्म करते हुए सुचेत नहीं रहते और इस भ्रम में हैं कि कौन देखता है, कौन जानता है? इसके फलस्वरूप हमारी सोच यहीं केंद्रित हो जाती है कि 'ऐह जग मिट्ठा अगला किण डिट्ठा'। इसी गलत सोच के परिणामस्वरूप हम निरंतर मोह-माया में फंसकर न करने योग्य कर्म भी करते जाते हैं और हृदय से एवं बुद्धि से किए गए प्रत्येक कर्म का संस्कार बनता है और फिर धीरे से ये संस्कार हमारे स्वभाव में परिवर्तित हो जाते हैं, इसलिए हम नेक कर्म करें, हर पल ईश्वर को हाज़िर-नाज़िर जानते हुए ताकि हमारे अच्छे कर्म नेक संस्कारों एवं नेक स्वभाव में परिवर्तित हो जाएं। गुरबाणी की पावन पंक्ति हर पल हमें स्मरण रहे :

करमी करमी होइ वीचारु ॥
सचा आपि सचा दरबारु ॥ (पन्ना ७)

वस्तुतः उस मालिक की दरगाह में हमारे प्रत्येक कर्म पर विचार होनी है और वहां न्याय करने वाला स्वयं सच्चा मालिक वाहिगुरु है और उसका दरबार भी सच्चा है और वहां किसी झूठे की सिफारिश अथवा रिश्वत से किसी का काम संवरने वाला नहीं है, अतः गुरबाणी आशयनुसार :

मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥ (पन्ना ४७०)

ख़बरनामा

गुरुद्वारा साहिबान में संगत की शिकायतों के निपटारे हेतु सुझाव बाक्सलगाए जाएं : मुख्य सचिव

श्री अमृतसर : ५ फरवरी : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के दिशा-निर्देश के अनुसार गत दिनों शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के एकत्रता हॉल में स. हरचरन सिंघ, मुख्य सचिव की अगुआई तले ज़िला श्री अमृतसर, तरनतारन, गुरदासपुर, पठानकोट, कपूरथला, जलंधर, नया शहर, होशियारपुर, फिरोज़पुर, फरीदकोट तथा मोगा से सम्बंधित गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध को और सुचारू बनाने हेतु मैनेजरों से एकत्रता की है। एकत्रता में मैनेजरों को हिदायतें जारी करते हुए स. हरचरन सिंघ ने कहा कि गुरुद्वारा साहिबान में संगत द्वारा दिए जाते सुझाव तथा शिकायतों के बारे रजिस्टर आवश्यक रूप में लगाया जाए तथा निर्माणिक सुझावों पर अमल करने का प्रयत्न किया जाए। उन्होंने कहा कि गुरुद्वारा साहिबान में सुझाव बाक्स लगाए जाएं, जिसको मैनेजर खुद अपनी निगरानी तले खुलवाकर देखें तथा आने वाली शिकायतों का फौरन तसल्लीबख़्श निपटारा किया जाए। उन्होंने आगे कहा कि गुरुद्वारा साहिब के अंदर किसी उचित जगह तथा संगत की सुविधा हेतु पूछताछ केंद्र भी स्थापित किए जाएं ताकि गुरुद्वारा साहिबान में आने वाली संगत अन्य आवश्यक जानकारी ले सके।

सिक्ख इतिहास पर ज़ोर देते हुए कहा कि गुरुद्वारा साहिबान के अंदर इतिहास को दर्शाते बहु-भाषी सुंदर बोर्ड लगाए जाएं जो रात के समय भी पढ़नेयोग्य हों। उन्होंने कहा कि समूह स्टाफ को भी इतिहास के बारे में जानकारी होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि गुरुद्वारा साहिबान में मौजूद बाग तथा बगीचे के रख-रखाव की ओर विशेष ध्यान दिया जाए तथा रिक्ति स्थानों पर ज्यादा छायादार वृक्ष लगाए जाएं। उन्होंने समूह मैनेजर साहिबान को यह भी कहा कि अगर स्टाफ की आवश्यकता है अथवा ज्यादा है तो इसकी फौरन सूचना मुख्य कार्यालय में दी जाए।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने जर्मन कंपनी बेयर फार्मा के मैनेजिंग डायरेक्टर को पत्र लिखा

श्री अमृतसर : ८ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के मुख्य सचिव स. हरचरन सिंघ ने दवाईयां बनाने वाली जर्मन कंपनी बेयर फार्मा के मैनेजिंग डायरेक्टर, मिस्टर एजल माइकल इवनजीलिस्टा को अपने ब्रांड पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन गुरबाणी की पंक्तियां छापने के बारे में पत्र लिखा है। इस पत्र में उन्होंने कहा कि बहुत आश्चर्य की बात है कि इतनी बड़ी कंपनी द्वारा अलर्जी से राहत दिलाने के लिए 'पोलरामीन' नामक दवाई का ब्रांड तैयार कर उस पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी की पंक्तियां बिना सिक्खों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए छापी गई हैं। उन्होंने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब सर्वसमर्थ और सर्वसांझे हैं तथा इसमें दर्ज बाणी से हमें सरबत्त के भले का पैगाम मिलता है।

उन्होंने कहा कि जर्मन कंपनी द्वारा केवल अपना ब्रांड बेचने की खातिर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन गुरबाणी की पंक्तियों का अपमान करने से देश-विदेश में बसते सिक्खों की भावनाओं को गहरी ठेस पहुंची है। उन्होंने कहा कि चाहे जर्मन कंपनी द्वारा अपनी कार्यवाही के लिए क्षमा मांगी गई है, किंतु वह अपने ब्रांड से पावन गुरबाणी की पंक्तियां फौरन हटाए।

दुबई जेल में बंद पंजाबी नौजवानों को भारत वापिस लाने हेतु विदेश मंत्री शुष्मा स्वराज ठोस प्रयत्न करें : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ९ फरवरी : दुबई की ऐलाईन जेल में बंद पंजाब के अलग-अलग ज़िलों के ग्यारह नौजवानों के बारे में पंजाबी की प्रमुख समाचार पत्र में छपी ख़बर पर जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने गहन चिंता प्रकट की है। उन्होंने भारत की विदेश मंत्री शुष्मा स्वराज को ज़ोर देकर कहा है कि वो वहां की सरकार के साथ राबता कायम कर इन नौजवानों को भारत वापिस लाने के लिए ठोस प्रयत्न करें।

यहां से प्रेस विज्ञप्त में उन्होंने कहा कि अपने परिवारों की रोज़ी-रोटी की खातिर लाखों रुपए खर्च कर दुबई गए इन पंजाबियों का किसी के साथ कोई वैर-विरोध नहीं। उन्होंने कहा कि इन पंजाबी नौजवानों के परिवार गहन चिंता में हैं। उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री स. परकाश सिंघ बादल तथा अपर-मुख्यमंत्री स. सुखबीर सिंघ बादल को अपील की है कि वो केंद्र सरकार के साथ राबता कायम कर दुबई की जेल में नज़रबंद पंजाबियों को वापिस लाने हेतु कहें।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने सिक्ख अदाकार को जहाज़ में चढ़ने से रोकने की कड़ी निंदा की

श्री अमृतसर : ९ फरवरी : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ने प्रसिद्ध सिक्ख हालीवुड अदाकार वारिस आहलूवालिया को अमेरिका में एयर मैकसीको की फ्लाइट में चढ़ने से रोकने की कड़े शब्दों में निंदा की है।

यहां से विज्ञप्त में उन्होंने कहा कि बहुत अफ़सोस की बात है कि सिक्खों को अपनी सुरक्षा के साथ-साथ धार्मिक चिन्हों और दसतार के कारण विदेशी धरती पर मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि वारिस आहलूवालिया अकेले ही ऐसे सिक्ख अदाकार हैं जो बहुराष्ट्रीय कपड़ों की कंपनी गैप के साथ डिज़ाईनर के तौर पर जुड़े हुए हैं और पूर्ण सिक्खी स्वरूप में विचर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि सिक्खों द्वारा प्रत्येक देश की तरक्की में भरपूर योगदान डाला गया है और वो बड़े-बड़े पदों पर विराजमान भी हैं, परंतु सिक्खों की पहचान सम्बंधी जागरूकता की कमी के कारण उनके साथ भेदभाव करना किसी भी कीमत पर जायज़ नहीं है। उन्होंने कहा कि अमेरिका के राष्ट्रपति ब्रॉक ओबामा ने स्वयं सिक्खों द्वारा डाले योगदान की प्रशंसा की है, किंतु अभी भी सिक्खों की पहचान सम्बंधी बड़े स्तर पर प्रयत्न की कमी पाई जा रही है। उन्होंने अमेरिका सरकार को जहाज़ के अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाई करने की मांग करते एक बार फिर सिक्खों के साथ हो रहे भेदभाव को समाप्त करने की अपील की है।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दिलजीत सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : 01-03-2016